"मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों मे चित्रित स्त्री पात्र"

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

तस्मिया खान

अनुक्रमांक: 22P0140035

PR Number: 20195478

मार्गदर्शक

स्वेता प्रसाद गोवेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: स्वेता प्रसाद गोवेकर

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "Metri Pushpa K Kahaniyon Me Chitrit Stree" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mrs. Sweta Prasad Govekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Thasmia

Thasmia Azgar Khan

22P0140035

Date: 16. 04. 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र" is a bonafide work carried out by Ms "Thasmia Azgar Khan" under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

"Shweta Prasad Govekar"

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Professor Anuradha Wagle

Dean, SGLL, Goa University

Date: 16. 04. 2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/228

Date: 3/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Thasmia Azgar Khan, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 9hours& 45 minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Professor Mrs. Sweta Prassad Govekar.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	I & ii
	अनुक्रम	Iii & v
	प्रस्तावना	Vi & viii
1	साहित्य में भारतीय स्त्री 1.1 स्त्री का साहित्य में योगदान 1.2 स्त्री का राजनीतिक,सामाजिक,आर्थीक,धार्मिक संघर्ष 1.2.1 राजनीतिक संघर्ष 1.2.2 सामाजिक संघर्ष 1.2.3 आर्थिक संघर्ष 1.2.4 धार्मिक संघर्ष संदर्भ	1 to 6

2	समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों में मैत्रीय पुष्पा का स्थान 2.1 कृष्ण सोबती 2.2 ममता कालिया 2.3 मन्नु भडांरी 2.4 उषा प्रियवदां 2.5 मृदुला गर्ग 2.6 सुधा अरोड़ा 2.7 सुर्यबाला 2.8 चित्रा मुद्गल 2.9 मैत्रीय पुष्पा संदर्भ सूची	7 to 25
3	मैत्रीय पुष्पा के कहानियों का समीक्ष्तमक अध्ययन 3.1 कथानक 3.1.1 चरित्र चित्रण 3.1.2 भाषा शैली 3.1.3 उद्देश्य संदर्भ सूची	26 to 84

4	मैत्रीय पुष्पा के कहानियों में ग्रामीण स्त्री 4.1 अशिकक्षित स्त्री 4.2 शिक्षित स्त्री 4.3 स्वाभिमानी स्त्री 4.4 विद्रोह करने वाली स्त्री 4.5 अन्याय से पीड़ित स्त्री 4.6 स्वार्थी स्त्री संदर्भ सूची	85 to 102
	उपसहांर	103 to 105
	संदर्भ सूची	106 to 109

भूमिका

नारी का मन सदियों से एक पहेली रहा है। आज भी हम अपने मन को समझना कठिन मानते हैं। नारी मन के जितने भी पहलू सामने आये अभिव्यक्ति शेष ही रह जाती है। वास्तव में किसी चीज को पूर्णता से समझना अपने आप में कठिन कार्य है। एक ओर नयी, आशायें हैं तो दूसरी ओर आर्थिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, राजनीतिक व अन्य परिवर्तित स्थितियाँ। समय के साथ संस्कृति में भी परिवर्तन आ रहा है। नारी चारित्र्य हमारी संस्कृति का मुख्य हिस्सा है। वास्तव में नारी जीवन के बारे में अनुसंधानात्मक बहस करना एक चुनौती है।

पिछले कुछ वर्षों से मैंने नारी जीवन के बारे में सूक्ष्मता से देखने, सुनने, पढ़ने को प्रयास किया। मैत्रेयीजी का साहित्य पढ़ा मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव की नारी को सशक्तता से प्रस्तुत किया। ग्रामीण नारी का वास्तविक चित्रण पूरी ईमानदारी के साथ मैत्रेयी की कृतियों में नजर आया। किसी देश का चेहरा महानगर है तो उसका शरीर गाँव कस्बा है। चेहरे से हाव-भाव व्यक्त होते हैं पर शरीर चुपचाप अपने काम में लगा रहता है।

उपभोक्तावाद, बाजारवाद, नवधनाढ्य और वैश्विकरण के साथ जब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जोड़ा गया तो ग्राम्य नारी कम चित्रित हुई है। मैत्रेयी के साहित्य में दलित, पीड़ित, शोषित, भयभीत, विकासोन्मुखी, विद्रोही नारी दिखाई देती है। उनके नारी पात्र जमीन पर लड़ाई लड़ते हैं। मैदान छोड़कर भागते नहीं। मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य में नारी विमर्श और दलित विमर्श साथ-साथ

चलते हैं। यही कारण है कि हमने मैत्रेयी के साहित्य का अध्ययन किया और नारी संदर्भों के विभिन्न आयाम खोलने का एक विनीत प्रयास किया।

प्रस्तुत लघु शोध को मैंने चार अध्ययन में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय भारतीय साहित्य में स्त्री का महत्व जहां मैंने साहित्य में स्त्री के महत्व का उल्लेख किया है। स्त्री ने जो भी समाज के लिए किया है समझ में उनके योगदान का चित्रण मैंने मेरे प्रथम अध्ययन में किया है। स्त्री के राजनीतिक सामाजिक धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया गया है।

द्वितीय अध्याय में समकालीन महिला रचनाकारों में मैत्रीय पुष्पा का स्थान का चित्रण किया है। समकालीन महिला रचनाकारों में मैं कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, सूर्यबाला, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, उषा प्रियवंदा, सुधा अरोड़ा, चित्रा मुदुल और मैत्रीय पुष्पा को इन अन्य लेखिकाओं से उनका अपना स्थान साहित्य में इसका चित्रण किया है।

तृतीय अध्याय में समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें कथानक, चरित्र चित्रण, भाषा शैली और उद्देश्य जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। इन कहानियों में स्त्री संघर्ष के विविध पहलुओं को दर्शाया गया है जो उनके साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

चतुर्थ अध्याय में मेने मैत्रीय पुष्पा की कहानियों में चित्रित ग्रामीण स्त्री का चरित्र चित्रण अनेक स्त्री के साथ विभाजित किया है जैसे कि शिक्षित स्त्री. शिक्षित स्त्री, स्वाभिमानी स्त्री, अन्याय से पीड़ित स्त्री, विद्रोह करने वाली स्त्री और स्वार्थी स्त्री।

इस शोध के माध्यम से मैंने मत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री संघर्ष को गहराई से समझने और उसका मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। मैत्रेयी की भूमिका एक बहुत ही

<u>कृतज्ञता ज्ञापन</u>

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की रचना में अनेक प्रेरणाएँ रही है। और इस अवसर पर सबका स्मरण करती हूं। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में मेरे निर्देशक एंव मेरे आदरणीय गुरुवर्य स्वेता प्रसाद गोवेकर का योगदान विशेष रूप से रहा है। जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन किया जिसके लिए में हृदय से उनकी आभारी हूँ।

मैं मेरे माता-पिता के आशीर्वाद के कारण ही मुझमे प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध पूरा करने की शक्ति प्राप्त हुई है। इसलिए मैं उनकी भी आभारी हूं।

मैं मेरे प्रिय मित्र मोहीदीन की भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस लघु शोध पुरा करने में प्रेरना दी।

मैं मेरी सहेली अंबिशा प्रभू, स्नेहा नाईक इन दोनों की भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे सही पुस्तक सुझाव में मुझे मार्गदर्शन किया।

मैं गोवा विश्वविध्यालय के पुस्तकालय की भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे पुस्तकों के लिए सहायता की है।

मैं उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूर्ण करते समय जहां तक मेरे विचार एंव अध्ययन क्षमता है वहाँ तक इस विषय को न्याय देने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय 1. साहित्य में भारतीय स्त्री का महत्व

"साहित्य में भारतीय स्त्री का महत्व अत्यधिक है। वे साहित्य में न केवल मुख्य चरित्र होती हैं, बल्कि उनके द्वारा लिखी गई कहानियाँ, कविताएँ, और नाटकों में भारतीय समाज की विविधता, संस्कृति, और सामाजिक मुद्दे प्रकट होते हैं"।[1] उनके द्वारा उदाहरण और प्रेरणा मिलती है, जो सामाजिक परिवर्तन और समाज में समानता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करती है। भारतीय साहित्य में स्त्री के महत्व को समझने के लिए, हमें विभिन्न युगों के कई लेखकों और कवियों के काम का अध्ययन करना चाहिए।

"स्त्री का महत्व उसकी विविधता, साहित्यिक योगदान, और समाज में अपने आत्मविश्वास के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रति होता है"।[2] स्त्री के कई रूप जैसे कि माता, पत्नी, बहन, और बेटी समाज में अपना विशेष स्थान रखते हैं, जो साहित्य में उन्हें ब्रह्माण्डिक रूप में दिखाता है। स्त्री के रूप में लेखकों द्वारा उनकी भूमिका को गहराया गया है, जो समाज में समानता, समरसता, और समर्पण का संदेश प्रदान करता है। "उनकी कहानियाँ, कविताएँ, और नाटकों में स्त्री के रूप में उनके उदाहरण और प्रेरणा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं"।[3]

भारतीय साहित्य में स्त्री का महत्व बहुत व्यापक है और उसमें उनके विभिन्न रूपों का महत्वपूर्ण योगदान है। वे समाज में माता, पत्नी, बहन, बेटी, साथ ही ग्रंथकारिणी, कवयित्री, कथाकारी, और प्रेरणास्रोत के रूप में अपना विशेष स्थान रखती हैं।

स्त्रियों के काव्य, कहानियाँ, और नाटकों के माध्यम से साहित्यकार उनकी भूमिका को गहराते हैं और सामाजिक सुधार, समानता, और सहभागिता के संदेश को प्रस्तुत करते हैं। उनके लेखन में

साहित्यकार उनके आत्मविश्वास, इच्छा, और प्रेरणा को प्रकट करते हैं, जो अन्य स्त्रियों को उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। "स्त्री के माध्यम से साहित्य में विविधता, शक्ति, सहानुभूति, और समर्पण के मूल्यों को प्रस्तुत किया जाता है, जो समाज में समरसता और समानता को बढ़ावा देता है"।[4]

1.1 स्त्री का साहित्य में योगदान

स्त्री का साहित्य में योगदान महत्वपूर्ण है। इतिहास में, स्त्री लेखिकाओं ने समाज में जागरूकता, उत्थान, और बदलाव को दर्शाने का महत्वपूर्ण योगदान किया है। स्त्री लेखिकाएँ अपने अनुभव, भावनाएँ, और दृष्टिकोण के माध्यम से साहित्य को विशेषता और गहराई से भरती हैं। उनके द्वारा लिखित कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास, और नाटक समाज में समानता, स्वतंत्रता, और समरसता की ओर प्रेरित करती हैं।

"नारी के योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो अथवा किसी अन्य क्षेत्र में, वह संभवतः किसी क्षेत्र में आज पीछे नहीं है। आज सभी क्षेत्रों में नारी ने पुरुष से साझेदारी निभाई है"।[5] महिलाओं में बढ़ती चेतना और जागरूकता ने उनकी पारंपरिक छवि को तोड़ा है।

महिलाओं की भागीदारी जिस तेजी से हो रही है, उसे देखते हुए नारी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य पर हैरान होने जैसी कोई बात नहीं रहेगी। लेखन को नारी और पुरुष लेखन में बाँटने से बेहतर था कि नारी लेखन उस लेखन को कहा जाता, जिसकी नायिका के इर्द-गिर्द पूरी रचना घूमती रहती, चाहे उसे किसी ने भी लिखा होता, नारी ने या पुरुष ने।

स्त्री लेखिकाओं ने अपने कामों के माध्यम से समाज में स्थायित्व, स्वतंत्रता, और समानता के महत्व को उजागर किया है। उन्होंने समाज की असमानता, उत्पीड़न, और अन्याय को दर्शाया और समाधान के लिए उत्तेजित किया। स्त्री लेखिकाओं के द्वारा रचित कथाएं और कविताएँ आम आदमी की भावनाओं को छूती हैं और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। उनका साहित्य न केवल मनोरंजन के लिए है, बल्कि समाज के विचारों और धारणाओं को परिवर्तित करने का माध्यम भी है। स्त्री लेखिकाएँ अपने कामों के माध्यम से स्वतंत्रता, स्वाधीनता, और आत्मनिर्भरता के महत्व को प्रोत्साहित करती हैं। उन्होंने महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देने के लिए लड़ा और उन्हें समाज में उच्च स्थान पर पहुंचाने का संदेश दिया। स्त्री लेखिकाएँ नारी शक्ति को समर्थ और सक्रिय बनाने के लिए अपने शिल्प में नई दिशाएँ देती हैं, जिससे समाज में सामाजिक परिवर्तन और समृद्धि हो सके। उनका साहित्य न केवल एक कहानी का संवाद है, बल्कि एक समाज का आईना भी है, जो महिलाओं को समर्थ और स्वाधीन बनाने की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाता है।

1.2 स्त्री का राजनीतिक,सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक संघर्ष

स्त्री के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, और पारिवारिक संघर्ष में उसकी स्थिति विविधता और परिप्रेक्ष्य के अनुसार बदलती है। "सामाजिक रूप से, स्त्री को समाज में समानता और सम्मान की मांग में विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है"।[6] राजनीतिक रूप से, वह अपने हकों और प्रतिनिधित्व की मांग में जुटी है, जो अक्सर समाज में परंपरागत विचारधारा और

संस्कृति के खिलाफ खड़ा होता है। आर्थिक रूप से, कई स्त्रियाँ वित्तीय स्वतंत्रता की कमी का सामना करती हैं, जो उन्हें आत्मनिर्भरता से दूर कर सकती है।

1.2.1 राजनीतिक संघर्ष

“इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि आज के समय में महिलाएँ घर की चारदीवारी से निकलकर सत्ता की बागडोर संभाल रही हैं, और न केवल संभाल रही हैं बल्कि कुशल संचालन कर रही हैं”।[7] भारतीय संसद में केवल 14 फीसदी महिलाएँ हैं, जबकि संसद में महिलाओं की वैश्विक औसत भागीदारी 25 फीसदी से ज़्यादा है। इसके अलावा, ग्रामीण अंचलों में पंचायत स्तर पर अधिकांश महिलाओं को केवल मुखौटे की तरह इस्तेमाल किया जाता है यानी चुनाव तो महिला जीतती है लेकिन सत्ता से संबंधित सभी निर्णय उसके परिवार के पुरुष सदस्य करते हैं। वहीं, न्यायालय में भी महिलाओं की संख्या संतोषजनक नहीं है। आपको जानकर हैरानी होगी कि देश के सर्वोच्च न्यायालय सहित उच्च न्यायालयों में मौजूद न्यायाधीशों में महज 11 प्रतिशत महिलाएँ हैं। “समय की माँग है कि अब महिलाएँ जाग्रत हों और अपनी क्षमता को पहचान कर, परंपरागत रूढ़ियों को खंडित कर देश की मुख्यधारा में अधिक से अधिक योगदान देंते है”।[8]

1.2.2 सामाजिक संघर्ष

भारतीय स्त्री का सामाजिक संघर्ष एक लंबा इतिहास है। वह द्वारा प्राप्त अधिकारों के लिए लड़ाई लगातार चल रही है, जैसे शिक्षा, रोजगार, और समानता। महिलाओं ने समाज में अपनी स्थिति में सुधार के लिए लड़ते हुए कई मुद्दों पर अभियान चलाए हैं, जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,

महिला शिक्षा, और महिला सशक्तिकरण। यह संघर्ष आज भी जारी है, जब महिलाओं को अपने अधिकारों की समाप्ति के खिलाफ लड़ना पड़ता है।

1.2.3 आर्थिक संघर्ष

आज भी महिलाओं की अधिकांश समस्याओं का कारण आर्थिक रूप से परनिर्भरता है। यह बेहद चिंताजनक है कि देश की कुल आबादी में 48 फीसदी महिलाएँ हैं जिसमें से मात्र एक तिहाई महिलाएँ रोजगार में संलग्न हैं। इसी वजह से भारत की जीडीपी में महिलाओं का योगदान केवल 18 फीसदी है। "यदि परिवार के भीतर और बाहर महिलाओं के साथ होने वाले भेदभावों को समाप्त कर पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करने के अवसर प्रदान किए जाएं तो अन्य महिलाएँ भी गीता गोपीनाथ, इंद्रा नुई, किरण मजूमदार शॉ की तरह सशक्त होंगी, साथ ही देश भी आर्थिक मोर्चे पर तेजी से प्रगति करेगा"।[9]

1.2.4 धार्मिक संघर्ष

भारत जैसे पितृसत्तात्मक देश में शिक्षा, मीडिया, कानूनी संस्थाएँ, आर्थिक संस्थाएँ, राजनीतिक संस्थाएँ सभी पूरी तरह से पितृसत्तात्मक हैं। यहाँ तक कि, सभी धर्म भी पितृसत्तात्मक हैं। अधिकांश धर्म महिला को अपना मुख्य आराध्य नहीं मानते। चूंकि धर्मों में पितृसत्ता को सर्वोच्च दिखाया गया है इसलिए महिलाओं को हमेशा से धर्म के नाम पर दबाने का प्रयास किया जाता है, और महिलाएँ बिना बराबरी का अधिकार माँगे अपने पति को परमेश्वर, स्वामी मानने लगती हैं। " इस बात पर ज़रा भी विचार नहीं करतीं कि पति-पत्नी में अगर एक मालिक है तो दूसरा कौन

होगा? वह आसानी से अपने आपको गुलाम मान लेती हैं क्योंकि उनका प्राइमरी स्कूल जो कि उनका परिवार होता है, में उन्हें बचपन से ही ऐसी ट्रेनिंग दी जाती है"।[10]

संदर्भ सूची

1. कस्तवार रेखा, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 28
2. -वही से
3. खेतान प्रभा स्त्री उपेक्षिता, सिमोन दी बाउवा, हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली
4. रावत ज्ञानेन्द्र, औरत : अस्मिता और यथार्थ (सम्पादक), कान्ती बुक सेन्टर, नई दिल्ली पृष्ठ 47
5. अग्रवाल रोहिणी ,साहित्य का स्त्री स्वर, संस्करण: 2015 साहित्य भण्डार इलाहाबाद, पृष्ठ 7
6. केलर नलिनी डॉ, सामाजिक विकास और प्रगतिशील महिलाएं, प्रकाशन श्रुति पब्लिकेशन, संस्करण:2012, पृष्ठ 6
7. गुप्ता रमणिका, स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने, प्रकाशन शिल्पायन, संस्करण:2004, पृष्ठ 26
8. -वहीं से
9. गुप्ता रमणिका, स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने, प्रकाशन शिल्पायन, संस्करण:2004, पृष्ठ 15
10. राजकुमार डॉ, नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान, प्रकाशन अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, संस्करण: 2003, पृष्ठ 13

दिव्तीय अध्याय 2. समकालीन हिंदी महिला कहानीकारों में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान

“समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री की अस्मिता को पहचानने का प्रयास महत्वपूर्ण है”।[1] साहित्यकारों की रचनाओं में समाज की व्यवस्था और नारी की स्थिति को उन्होंने ईमानदारी से उजागर किया है। “साहित्य समाज को बोध कराता है और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है”।[2] साहित्यकारों की रचनाओं में, समाज की विभिन्न व्यवस्थाओं और स्त्री के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को व्यापक रूप से प्रकट किया गया है। उनकी लेखनी से समाज को आत्म-अवलोकन करने की प्रेरणा मिलती है और स्त्री की अस्मिता को समझने में सहायक होती है। इसके अलावा, साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है और लोगों को उनके समाधान की दिशा में प्रेरित किया जाता है।समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री की अस्मिता की पहचान कराने की कोशिश है। इस भूमंडलीकृत समाज में स्त्री के प्रति व्यावसायिक और भोगवादी नजरिया तेजी से पनप रहा है। उनकी रचनाओं में समाज की इस व्यवस्था में नारी की स्थिति को बड़ी ईमानदारी के साथ व्यक्त किया गया है।साहित्य और समाज का संबंध बहुत पुराना है और उसका संबंध अनादिकाल से चला आ रहा है और दोनों का संबंध मनुष्य से है। मनुष्य समाज में रहने के साथ-साथ समाज को प्रभावित करता है और खुद भी प्रभावित होता है। साहित्यकार समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है तथा समाज की परिस्थिति का प्रभाव उस पर पड़ता है। “साहित्यकार समाज को साहित्य में बांधता है और साहित्य से समाज का मार्गदर्शन होता है”।[3] इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि एक साहित्यकार युग दृष्टा और सृष्टा होता है। वह समाज की समस्याओं को देखता, सुनता और समझता है और उसी तरह साहित्य की सृष्टि करता है।

2.1 कृष्ण सोबती

कृष्णा सोबती हिंदी कथा साहित्य में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखती है। उनकी सयमित और साफ-सुथरी रचनात्मकता लेखनी ने हिंदी कथा साहित्य जगत में अपना एक नया पाठक वर्ग बनाया है। यही कारण था कि उनकी कई लंबी कहानियों, उपन्यासों और संस्मरणों ने हिंदी साहित्य में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति दर्ज कराई है। कृष्णा सोबती की रचनाओं को हिंदी साहित्य जगत के पाठक वर्ग के साथ-साथ अन्य भाषाओं के पाठक भी बड़े उत्साह से साथ पढ़ते हैं। इसीलिए भारतीय भाषाओं के साथ ही विदेशी भाषाओं जैसे कि स्वीडिश, रूसी, जर्मन और अंग्रेजी में भी उनकी कई रचनाओं का अनुवाद किया गया हैं।

‘‘कृष्णा सोबती जी कहानी लेखन के क्षेत्र में स्वतंत्रता पूर्व से ही जुट जाती है जिसके कारण इनकी कहानियों का विषय और उनमें प्रतिबिम्बित दृष्टिकोण एक सीमा तक परम्पराबोध से जुड़ा हुआ है लेकिन बाद की इनकी कहानियों परम्परा बोध से मुक्त होकर आधुनिक बोध में परिणत हो गई हैं’’।[4] प्रेम के रतिकोनर की विडम्बना को कृष्णा जी ने अपनी कहानियों में आंका है। वैवाहिक जीवन में तीसरे के आगमन से टूटते संबंध तत्पश्चात पश्चात्ताप की अग्नि में जलने को बाध्य आधुनिक नारी की मानसिकता को लेखिक ने चित्रित किया है। इस संदर्भ में स्कुछ नहीं कोई नहींर कहानी की शिवा भ्यान देने योग्य कृष्णा सोबती वैयक्तिक मूल्यों को प्रधानता देने वाली लेखिका है। ‘‘इनकी कहानियों के नारी पात्रों में प्रेम, निराशा, घुटन, हताशा आदि आयामी को देखा जा सकता है’’।[4] सोबती जी ने कहानियों के नारी पात्रों के सूजन के द्वारा नारी समस्याओं को उजागर कर उसके प्रति पाठकों की संवेदना जगाने तक ही सीमित रहीं हैं।

इन्होंने इन समस्याओं का समाधान देने या इन समस्याओं के संबंध में व्यक्तिगत मान्यताओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न नहीं किया है। लेकिन अपनी दयनीय स्थिति के कारणों के प्रति सोचने की चेतना कहानियों के नारी पात्रों से ही शुरू हो जाती है। यहीं नारी पात्राएँ आगे चलकर उपनयासों में आधुनिक चेतना सम्पन्न नारी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करती है। इस संबंध में कुप्रेक कहानियों के नारी पात्र वर्णन करने योग्य हैं। श्मादलों के घेरेश कहानी की मन्नी, एसिक्का बदल गयार की शाहनी, सूआजादी शम्भो जान कीर मुन्नी जान, शकुछ नहीं कोई नहीं की शिवा, 'बदली वरस गईश् की कल्याणी आदि नारी पात्रो की आधुनिकता बोध के संदर्भ में मूल्यांकन करने से पूर्व प्रमुख कहानियों के नारी पात्रों के बारे में जानना समीचीन होगा। ये नारी पात्र ही उपन्यासों के नारी पात्र की आरम्भबिंदु है।

2.2 <u>ममता कालिया</u>

ममता कालिया का जन्म 1940 में भगवान श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा में हुआ था। उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपने साहित्य को रचा तथा अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। हिंदी साहित्य में "ममता कालिया का नाम महिला लेखन के क्षेत्र में प्रमुखता से लिया जाता है।

"हिंदी साहित्य में ममता कालिया का नाम महिला लेखन के क्षेत्र में प्रमुखता से लिया जाता है"।[5] महिला की जीवनगत परिस्थितियों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ सूक्ष्मतापूर्वक उद्घाटित करनेवाली महिला कथाकारों में ममता कालिया का नाम सबसे पहले आता है। जोवन के यथार्थ

की अद्भुत विश्लेषण क्षमता ममता जी का वैशिष्ट्य है। वर्तमान युग में महिलाओं के लिए अर्थोपार्जन के नये-नये द्वार खुल गये है। वह विविध क्षेत्रों में कार्य कर रही है। ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यास साहित्य में कामकाजी महिलाओं का चित्रण हुआ है। ममताजी स्वयं एक नौकरीपेशा महिला थी। इस कारण उन्होंने कार्य करते समय जो संघर्ष किया तथा कार्यक्षेत्र पर कई समस्याओं का सामना किया, इसका वास्तविक चित्रण उनके कहानी एवं उपन्यास साहित्य में चित्रित हुआ है। ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यास में कामकाजी महिलाओं की संख्या बडी मात्रा में दिखाई देती है। शहरों में रहने, पढ़ने और पढ़ाने के बाद अब ममता कालिया दिल्ली (एनसीआर) में रहकर अध्ययन और लेखन करती हैं। वे हिन्दी और इंग्लिश दोनों भाषाओं की रचनाकार हैं। भारतीय समाज की विशेषताओं और विषमताओं पर अपनी पैनी नज़र रखते हुए ममता कालिया की प्रत्येक रचना के केन्द्र में आज का समाज है।

विकासशील समाज में बनते-बिगड़ते सम्बन्ध, प्रगति के आर्थिक, सामाजिक दबाव, स्त्राी की प्रगति को देखकर पुरुष मनोविज्ञान की कुण्ठाएँ और कामकाजी स्त्राी के संघर्ष उनके प्रिय विषय हैं। प्रकाशित पुस्तकों की संख्या विपुल होने के कारण यहाँ केवल उनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकों का उल्लेख किया जा रहा है। ममता कालिया ने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, यात्रा- साहित्य और निबन्धों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है।

2.3 मन्नु भंडारी

मन्नू भंडारी सिर्फ हिंदी साहित्य की नहीं, पूरे समाज की अभिभावक दिखती हैं। वह अपने लेखन से प्यारी सी थपकी देते हुए समाज को हर मौके पर टोकती चलती हैं। कभी पुरुषवादी सोच पर

गंभीर चोट करती हैं तो कभी बालमन के मनोविज्ञान को गहरे तक छू लेती हैं। “मन्नू भंडारी के जाने से हिंदी साहित्य जगत में एक ऐसा खालीपन पैदा हो गया है, जो हमेशा बना रहेगा”।[6] मन्नू भंडारी का साहित्य जगत में प्रमुख योगदान कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में रहा। उनकी वस्तुनिष्ठता और नाटकीयता का दृढ़ निश्चय ही उनकी प्रमुख शैली रही। उनका जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर में हुआ। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाती रहीं और रचना क्षेत्र में भी बराबर सक्रिय बनी रहीं।

उन्हें निजी जीवन में एकसाथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वह इस पुरुषवादी समाज में हर संघर्ष का डटकर सामना करती रहीं। “उनकी कहानियों में महिलाओं के खातिर लड़ी लड़ाई से उपजी जीत बार-बार चमकती है”।[7] वह इसे अपनी हर अगली रचना में लगातार दर्ज करती चलती हैं। मन्नू भंडारी उन लेखिकाओं में से रही हैं, जिन्होंने नए दौर के बनते भारत की महिलाओं के संघर्ष और चुनौतियों को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया। उनका हीं नहीं बल्की उनके दौर की तमाम लेखिकाओं पर इसका असर देखने को मिला।

“मन्नू भंडारी की बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इस बदलते परिवेश में खुद को स्त्री मनोभावों की लेखिका के रूप में स्थापित किया”।[8] स्त्री लेखन में तीन प्रमुख स्तंभ कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी में से मन्नू भंडारी सबसे प्रमुख स्तंभ बनकर उभरी। उस दौरान उभरते मध्य वर्ग के गुस्से और संघर्ष की झलक उनकी रचनाओं में दिखती है। आजादी के बाद लोगों में पैदा हुई इच्छाओं और आशाओं पर भी जमकर लिखा। उन्होंने महानगरीय जीवन में स्त्रियों की दशा का भी वर्णन किया।

उन्होंने महानगरीय जीवन में स्त्रियों की दशा का भी वर्णन किया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उनकी कहानी ‘यही सच है’। इस कहानी में जब संजय अपनी पत्नी दीपा को शंका भरे मन में उसके बचपन का प्यार वाला किस्सा दोहराता है तब दीपा अपने स्वर को ऊंचा कर कहती है, अठारह वर्ष की आयु में किया हुआ प्यार भी कोई प्यार होता है भला। निरा बचपन होता है, महज पागलपन । उसमें आवेश रहता है पर स्थायित्व नहीं, गति रहती है पर गहराई नहीं। जिस वेग से वह आरंभ होता है, जरा-सा झटका लगने पर उसी वेग से टूट भी जाता है। यह उस वक्त के लिए एक नई स्त्री की आवाज थी। उनकी इस कहानी पर आधारित फिल्म रजनीगंधा बेहद चर्चित रही।

2.4 उषा प्रियवंदा

उषा जी की कहानियों में चित्रित नारियों के स्वरूप मैं एक नयापन हमें दिखाई देता है। “उन पात्रओं में एक प्रकार का आत्मविश्वास हमें दिखाई देता है। वे नानवीय संवेदना से ओतप्रोत है”। उन पात्रों को स्वाभाविक अस्मिता के बदले और कुछ नहीं चाहिए। आत्मनिर्भरता को बनाए रखते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाती है। उनकी कहानियों में नारियां सामाजिक दायित्व को निभाने वाली होती है। हर चुनौती को स्वीकार करने वाली साहसी नारी है। “उषा जी ने नारी संघर्ष, आकांक्षा को संभावनाओं को अपनी रचनाओं में व्यापक स्वर देने की कोशिश की है”।[9]वस्तु स्थिति को उजागर किया है। इसमें उनकी गहरी सोच, जांच पडताल भी दिखाई देती है।उषा

उषा जी ने नारी को सचेत करते हुए वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को राह में उपयोगी एवं बाधक तत्वों को परख करते हुए

नारी अस्मिता के संभावित सृजनात्मक आयामों की प्रखरता से तलाश की है। लेखिका नए मूल्यों एवं संदभों को अपनी नायिकाओं के माध्यम से समाज के सामने लाना चाहती है। "जिंदगी और गुलाब के फूल में नारी पुरुष संबंधों की जटिलताओं और कुंताओं की उन्मुक्त भाव से अभिव्यक्ति हुई है"।[10] उषा जी की नायिकाएं प्रेन को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव मानती है। अनेको कहानियों में नारी शिक्षित तो है ही उनमें समाज की रुढ़ियों से हटकर काम करने की लालसा है। यह लालसा सामाजिक वर्जनाओं के बीच दम तोड़ देती है।

प्रवासी जीवन के प्रभाव को स्त्री जीवन में देखना उषा जी के कथा साहित्य की दूसरी खासियत है उषा जी ने अपनी कहानियों में समाज की समसामयिक समस्याओं की गहराई में उतरकर अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उनकी नब्ज टटोलते हुए व्यक्ति के जीवन से जुड़ी समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने नारी जीवन में आने वाले परिवर्तनों को बखूबी से परखा है।इनकी कहानियों में स्त्री स्वतंत्रता के नानदंड विभिन्न रूपों में परिलक्षित होते है। उषा प्रियंवदा की उत्कृष्ट कहानी वापसी में परिजनों की आधुनिक भौतिकवादी स्वच्छद जीवन दृष्टि तथा घोर व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के कारण गजाधर बाबू का सपना दिवास्वप्न प्रतीत होता है। पत्नी की उपेक्षा सह नहीं पाते, पत्नी का साथ चाहने वाले व्यक्ति पर जब ऐसा होता है तो मानवीय संवेदनायें चूर-चूर होकर ब्खिर जाते हैं। "उषा प्रियंवदा ने स्त्री की इच्छा कामना और तुरंत निर्णय लेगे के प्रश्नों को विभिन्न दृष्टिकोण से अपनी कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है"।[11]

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन की प्रमुख लेखिका मानी जाती हैं। वह नई कहानी आंदोलन के दौर की चर्चित महिला कहानीकारों 'मन्नू भंडारी' और 'कृष्णा सोबती' में

से एक थी। उन्होंने अपने जीवन की अर्जित अनुभूतियाँ, स्मृतियों और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति को अपनी रचनाओं का विषय बनाया जिससे पाठक वर्ग जुड़ा हुआ महसूस करता है। इसके साथ ही आधुनिक हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा ने कथा साहित्य और उपन्यास विधा में अपना विशेष योगदान दिया था। उषा प्रियंवदा जी का जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वहीं इनकी आरंभिक शिक्षा उनके गृह क्षेत्र में ही पूरी हुई थी। उनको हिंदी साहित्य में अपनी अनुपम रचनाओं के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका हैं। उनके कहानी संग्रह हैं, 'जिंदगी और गुलाब के फूल' 1961, 'एक कोई दूसरा'- 1966, 'कितना बड़ा झूठ'- 1972, 'मेरी प्रिय कहानियां मीराबाई' (अंग्रेजी में लिखित) तथा 'सूरदास' (अंग्रेज़ी में लिखित) है।

2.5 मृदुला गर्ग

साठोत्तरी महिला कथाकारों में भी मृदुला जी का नाम सबसे ऊँचा हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य में अनेकों विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिसमें कहानियां, उपन्यास, निबंध, व्यंग्य, यात्रा वृतांत और नाटक शामिल हैं।

"हिंदी साहित्य जगत में मृदुला गर्ग वरिष्ठ और लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक मानी जाती हैं। साठोत्तरी महिला कथाकारों में भी मृदुला जी का नाम सबसे ऊँचा हैं"।[12] इन्होंने हिंदी साहित्य में अनेकों विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिसमें कहानियां, उपन्यास, निबंध, व्यंग्य, यात्रा वृतांत और नाटक शामिल हैं। मृदुला जी के हिंदी साहित्य में विशेष योगदान के लिए उन्हें कई

सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है। मृदुला गर्ग की लिखी कहानी पर फिल्म तुम लौट आओ बनायी गयी थी।

नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण लेकर लिखनेवाली मृदुला गर्ग की रचनाएँ परंपरागत स्त्री लेखन से भिन्न होकर स्त्री की बाह्य और भीतरीय जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से देखा परखा है। "मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्धाटन कर उन्होंने हिन्दी साहित्य केलिए कुछ अविस्मरणीय रचनाएँ प्रदान की"। 'उसके हिस्से की धूप' (उपन्यास), चितकोबरा' 'वंशज' 'अनित्य 'मैं और मैं 'शहर के नाम' 'समागम' (कहानी संग्रह) इत्यादि। 'उसकी कराह' कहानी में कहानी की नायिका को दिल का ट्यूमर है। वह अपनी अंतिम घड़िया गिन रही है। पति सुमित देखभाल के लिए मां को बुलाता है किंतु वह मना कर देती है क्योंकि वह सास को बुरा भला कहती है। वह साफ शब्दों में कह देती है कि "मां को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है, जानते नहीं क्या? आते ही कहना शुरु कर देगी, इसे कुछ नहीं हुआ सब बहाना है। पिछली बार जब बेहोश होकर चूल्हे के पास गिर पड़ी थी, तब क्या हुआ? प्रस्तुत गद्यांश में बहु यहां बहु ही सास के प्रति अविष्वसनीयता दिखा रही है। मृदुला जी ने स्त्री मुक्ति की जो कल्पना की है वहां सांस्कृतिक मूल्यों के गिरते स्तर को ग्रामीण स्त्रियों की मनोदशा को प्रकट किया है।

2.6 <u>सुधा अरोड़ा</u>

शोध सारांश आठवें दशक की समकालीन महिला कथाकार सुधा अरोड़ा का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। "इन्होंने अपनी कहानियों में हर स्तर की महिलाओं की समस्याओं से संघर्ष करते हुए दिखाया"।[13] आठवें दशक की समकालीन महिला कथाकार सुधा अरोड़ा का हिंदी

साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी कहानियों में हर स्तर की महिलाओं की समस्याओं से संघर्ष करते हुए दिखाया है। किस प्रकार हमारा भारतीय समाज स्त्री-पुरुष के बीच लैंगिक भेद-भाव करता है और इसका खामियाजा अधिकतर उन निचले तपके के स्त्री को भुगतना पड़ता है, जो श्रम करके अपनी आजीविका ही चला पाती हैं।

"सुधा अरोड़ा की कहानियों में लैंगिक भेद-भाव के साथ ही पितृसत्ता का भी वर्चस्व देखने को मिलता है, जो स्त्रियों को सिर्फ दासी बनाकर रखना चाहता है, उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचल देता है"। आधुनिक पारंपरिक पितृसत्तात्मक समाज में तो बदलाव आया है, लेकिन पुरुष वर्चस्व स्त्रियों का अन्य रूपों में शोषण करने लगा है। स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तो हो रही हैं, लेकिन उन्हें दोहरी- तिहरी जिम्मेदारी में जकड़ दिया गया है। सुधा जी की कहानियों में निम्न, मध्यवर्गीय शिक्षित और अशिक्षित कामकाजी घरेलू महिलाओं की समस्या का वर्णन किया गया है। उन पर किस तरह का शोषण किया जाता है ? आधुनिक समाज में शोषण करने के स्तर में भी बदलाव आया है। शिक्षित परिवार एवं संभ्रांत परिवार में स्त्रियों को मानसिक रूप से शोषण का शिकार होना पड़ता है। वहीं निम्न वर्गीय एवं कामकाजी घरेलू महिलाओं को शारीरिक हिंसा का शिकार होना पड़ता है, जिसके निशान दिखाई देते हैं। आम बोलचाल की भाषा में एक प्रचलित कहावत है कि बाहर का घाव तो भर जाता है, लेकिन मानसिक रूप से दी गई घाव कभी नहीं भर सकता।

सुधा जी की कहानियों में भ्रूण हत्या एवं दहेज का भी वर्णन किया गया है। पितृसत्तात्मक समाज पहले तो वंश को आगे बढ़ाने के लिए कन्या भ्रूण हत्या करता है, दूसरी प्रचलित मान्यता है कि

समाज में दहेज का प्रभाव है, जिससे महिलाएँ ही कन्या को नहीं जन्म देना चाहती हैं, क्योंकि शादी के बाद लड़की के ससुराल वाले दहेज के नाम पर लड़की का शोषण तो करते ही हैं और कई बार उसे जान से भी मार देते हैं, इसलिए ऐसा समाज बालिका की जगह बालक के जन्म की चाह रखता है।

अध्याय एक में सुधा अरोड़ा के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में उनके साठोत्तरी हिंदी कहानियों में महत्व एवं योगदान का वर्णन किया गया है। अध्याय दो में पुरुष एवं स्त्री पात्र केंद्रित कहानियों में महिला एवं पुरुष को किन-किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है ? पितृसत्तात्मक व्यवस्था किस प्रकार उनका उनका शोषण कर रहा है? इनका उल्लेख किया गया है। अध्याय तीन में मध्ययुगीन संस्कारों की चर्चा की गए है। साथ ही आधुनिकता के जाल ने महिलाओं को किस प्रकार दोहरी-तेहरी जिंदगी जीने को मजबूर कर दिया है तथा घर एवं बाहर किस प्रकार महिलाएं संघर्ष कर रही हैं ? आदि का वर्णन किया गया है। अध्याय चार में सुधा जी की कहानियों में किस प्रकार स्त्री, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था से संघर्ष कर रही हैं, वह कहाँ तक सफल हो पाई हैं का उल्लेख किया गया है।

2.7 <u>सुर्यबाला</u>

“समकालीन कथा साहित्य में सूर्यबाला का लेखन विशिष्ट महत्व रखता है। समाज, जीवन, परंपरा, आधुनिकता एवं उससे जुड़ी समस्याओं को सूर्यबाला एकदम खुली, मुक्त एवं नितांत निजी दृष्टि से देखने की कोशिश करती हैं”।[14] उनमें किसी विचारधारा के प्रति न अंध-श्रद्धा देखने को मिलती है और न ही एकांगी विद्रोह।

सूर्यबाला के व्यक्तित्व का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने नारी पर होने वाले अत्याचारी को होते हुए देखा, महसूस किया व उन्होंने खुद सहा है, लेकिन सूर्यबाला ने इन्हीं समस्याओं के समाधान हेतु समाज के सभी कुरीतियों के बंधन को तोड़ते हुए आत्मशक्ति तथा उत्साह के साथ कुछ कर गुजरने के लिए उन्होंने अपने आप को मजबूत बनाया है। "शिक्षा द्वारा ज्ञान ग्रहण करते हुए उन्होंने अपने अन्तर्मन को चोट करने वाली संवेदनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से लिपिबद्ध कर दिया। उनकी कहानियों में सम्पूर्ण नारी संवेदनाओं को देखा गया है"।[15]

नारी संवेदना के विविध आयाम है, जिनमे वैदिककालीन, मध्यकालीन तथा आधुनिककालीन नारी संवेदनाओं, होने वाले परिवर्तन व रूढ़िवादिता की विविध समस्याओं से जूझती हुई नारी संवेदनाओं के विविध पक्षी को देखा गया है। आधुनिककालीन नारी में बदलाव व परिवर्तन, जागरुकता, आत्मविश्वास आदि के गुण हमे आज की नारी में देखने को मिलते हैं। आज की नारी पुरुर्षों से कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारी उच्च स्तर पर पहुँच चुकी है। फिर भी समाज में होने वाली परिस्थितियों को सहते हुए उसका सामना करते हुए संघर्षरत दिखायी देती है।

2.8 चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल का जन्म 10 सितंबर 1944 को चेन्नई, तमिलनाडु में हुआ था। हिंदी साहित्य में चित्रा जी का महत्वपूर्ण स्थान है। चित्रा मुद्गल की कहानियां अनायास ही पाठकों को अपनी ओर खींचती है। वह लेखन के अलावा चित्रकला और महिलाओं के लिए संघर्ष करने में भी

गहरी रुचि रखती हैं। “चित्रा मुद्गल नए स्त्री-विमर्श की कथाकार हैं। “वह खुद बताती हैं कि सोमैया कॉलेज में पढ़ाई के दौरान वह श्रमिक नेता दत्ता सामंत के संपर्क में आई और श्रमिक आंदोलन से जुड़ी रहीं”।[16] उन्हीं दिनों घरों में झाडू-पोंछा कर, उत्पीडन और बदहाली में जीवन-यापन करने वाली बाइयों के बुनियादी अधिकारों की बहाली के लिए संघर्षरत संस्था ‘जागरण’ की बीस वर्ष की वय में सचिव बनीं। वह बताती हैं कि ‘कई बार घर का माहौल और आस-पड़ोस की कई समस्याएं दुखी कर देती थीं। 21 उनके कहानी संग्रह है भूख, जहर ठहरा हुआ, लाक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, ग्यारह लंबी कहानियाँ, जिनावर, लपटें, जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं, मामला आगे बढ़ेगा अभी, कैचुल, आदि-अनादि।

जहर ठहरा हुआ’ चित्राजी का एक उल्लेखनीय कहानी-संग्रह है। इसमें परम्परागत रुढियों के खिलाफ और अपनी स्वतंत्रता केलिए संघर्षरत नारियों को देखा जा सकता है। चित्राजी की प्रारंभिक कहानियों में झोंपड-पट्टी की जिन्दगी में लड़नेवाली नारियों के चित्र मोजूद हैं तो इस संकलन में संकलित कहानियों में उनका कथ्य वहुवर्णी हो जाता है। ‘जहर ठहरा हुआ’ कहानी इसकी अच्छी मिसाल है। यह दरअसल इस संकलन की प्रतिनिधि कहानी साबित होती है।

‘अपनी वापसी’ में संकलित कहानियाँ पुरानी लीक से हटकर कामकाजी नारी का भावात्मक सम्बन्ध एवं संघर्ष, उसके विभिन्न परिप्रेक्ष्य मानवीय सम्बन्धों के नए बिन्दु, बेकार नवयुवक की मानसिकता और परिवार जनों का उसके प्रति कटु व्यवहार आदि को प्रस्तुत करती हैं। ये कहानियाँ व्यापक धरातल पर लिखी गयी है। इनमें कुछ कहानियाँ ऐसी है जो महानगरीय जीवन में सम्बन्धों के टूटने की तस्वीर खींचती हैं। ये कहानियाँ कुछ प्रश्नों को सामने लाती है। 22 संघर्षशील, उच्च,

मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय नारी स्थितियों को उजागर करती हुई. खुद को उससे अलग करके समाज में अपनी पहचान कायम कर रही है। ऐसे पात्रों का सृजन चित्राजी ने इसमें संकलित कहानियों में किया है।

2.9 मैत्रेयी पुष्पा

हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली, स्त्रियों के दुःख पीड़ा एवं सामाजिक स्थिति को अपनी लेखनी से उकेरने में महारथ हासिल मैत्रेयी का जन्म 30 नवंबर सन्

“मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन के सत्य को उजागर करने का माध्यम गद्य को बनाया क्योंकि मानव जीवन के यथार्थ चित्रण में कहानी एवं उपन्यासों जैसी क्षमता अन्य किसी साहित्यिक विधा को नही है”।[17] इन्होंने अपने जिये हुये परिवेश को सहजता, सरलता, स्वाभाविकता से अत्यंत संतुलित शब्दों में अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है जिसे पढ़कर लगता है कि यह केवल रचनायें नहीं है समाज का दस्तावेज है। मैत्रेयी पुष्पा जी के लगभग दस उपन्यास एवं तीन कहानी संग्रह प्रकाशित है। उनके उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की एक झलक स्पष्ट दिखाई देती है नारी शोषण के प्रति विद्रोह वृद्धों, अशिक्षित विधवा नारियों का चित्रण अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में लेखिका ने अपने विचार, विद्रोह एवं अनुभव के साथ चित्रित किये हैं।

“अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से लेखिका सिर्फ पढी- लिखी नायिकाओं द्वारा ही नही अनपढ़, ग्रामीण, नारी पात्र द्वारा भी शोषण के प्रति विद्रोह प्रकट करती है”।[18] विद्रोह प्रकट करने में’ पगला गयी है भागवती’ में भागो ने एक अलग रास्ता चुन लिया। जिज्जी की बेटी अनसूया पहले ही मां से उपेक्षित लड़की थी उसका संरक्षण भागो ने किया था, अनसूया के भाई

ने अपनी मर्जी के अनुसार रजिस्टर्ड विवाह किया और मां बाप ने उन्हें बुलाकर धूमधाम से ब्याह कराया। उस समय आशीष देने के लिए माधव सिंह के मंच पर आते वक्त भागो ने पत्थर उठाकर मारा सब सोचने लगे भागो पागल हो गयी है पर उसने अपना विद्रोह प्रकट करने के लिये पत्थर फेंका था।

मैत्रेयी पुष्पा अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज की नारी को अपने अस्तित्व की लड़ायी के लिए प्रेरित करते हुये उनकी सुसुप्त चेतना को जागृत करने में सक्षम दिखाई देती है। पुरुष सत्तात्मक समाज में गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिये नारी को समाज में व्याप्त रूढ़ियों, परंपरागत अनाचारों, का उल्लंघन करने का साहस दिखाना पड़ेगा, सदियों से चली आ रही परंपरा और रीति-रिवाज को तोड़ती हुई समाज में अपने साथ होने वाले शोषण के प्रति विद्रोहात्मक स्वर को बुलंद करने वाली नारी को लेखिका ने अपनी कथा साहित्य में अलग व्यक्तित्व प्रदान किया।

मैत्रेयी पुष्पा की लगभग सारी कहानियों में उन्होंने जीवना की वास्तविकता की इतना कुशल से प्रस्तुत किया है कि उनकी रचनाओं के पात्र और घटनाओं को हमारे मस्तिष्क से निकाल पाना मुश्किल हो जाता है। उनकी गिनी चुनी रचनाओं को छोड़कर अधिकांश रचनाओं में नारी केंद्र-बिन्दु रही है। उन्होंने नारी के विविध रूपों और समाज में उसकी स्थिति और गति को दिखाने का प्रयास भी किया है।

बिताया हैं। “समकालीन भारतीय समाज की नारी में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की सुषुप्त चेतना जागृत करने के लिए मैत्रेयीजी का कथा साहित्य सक्षम दिखाई पड़ता है”।[19] सिर्फ नारी ही नहीं ग्रामीण किसान मज़दूर, दलित और जनजाति आदि उपेक्षित, पीड़ित, शोषित वर्गों को अपनी

स्वतंत्र अस्मिता स्थापित करने की प्रेरणा देने के लिए अपना कथासाहित्य द्वारा मैत्रेयीजी ने जो कदम उठया है, वह सराहनीय है। दूसरे शब्दों में कहने पर वे उपेक्षित ग्रामीण जीवन के कथाकार हैं।

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ अपनी अनुभूति पर आधारित हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में जीवन की वास्तविकता का चित्रण हुआ हैं। घटनाओं की सत्यता और पात्रों की सजीवता यह उनके साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की पृष्ठभूमि में बुंदेलखंड प्रवेश हैं। विवाहोपरान्त दिल्ली में रहने के कारण साहित्य पर महानगरीय प्रवेश का प्रभाव पड़ा हैं। शहर में रहते हुए भी गाँव से जो ऊर्जा लेकर आई है उसे भूला नहीं पाई। उनके समग्र साहित्य की कथावस्तु ग्रामीण जीवन पर ही आधारित है। इसलिए उनके समग्र साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन अत्यंत सजीव रूप से चित्रित हुआ है।

"मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में समाज की नारी समस्या, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं"।[20] उनके विचार ग्रामीण जीवन तथा स्त्रीवादी विचारों से प्रभावित हैं। स्त्री-विमर्श को रचनाओं में उनका विद्रोह रूप दिखाई देता हैं। मैत्रेयीजी के कहानियों के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित, तिरस्कृत, पीड़ित तथा दुख भोगनेवालों के जीवन को सच्चाई को सामने लाया गया हैं। ग्रामीण जीवन में आज भी अशिक्षा, अज्ञान, स्त्री-पुरुष भेदभाव रूढ़ि, परंपरा, अंधविश्वास, शकुन अपशकुन दिखाई देता है। कहानियों के नारी पात्र अत्यंत सशक्त रूप लेकर उभरे है। कहनियों के प्रसंगों को बेहद आत्मीय और पारिवारिक सहजता के साथ प्रस्तुत करना

मैत्रेयीजी को विशेषता हैं। मैत्रेयीजी के कहानियों में उन्होने बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ो और एकल परिवार के कारण वृद्ध माता-पिता के जीवन यापन के माध्यम को स्थितियों का चित्रण किया हैं।

"मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में महिलाओं का चित्रण दो रूपों में हुआ है"।[21] पुरुष की अनुचर बनकर, तो दूसरा समाज की नारी शोषण मूलक व्यवस्था का विद्रोह करनेवाली स्त्री के रूप में मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में घर, परिवार, समाज और देश में जातिगत भेदभाव आदि की विस्तृत जानकारी मिलती है। समाज मे जाति व्यवस्था की दाहकता, वर्ग, संघर्ष पारिवारिक स्थिति, शिक्षा आदि का चित्रण हुआ है।

"मैत्रेयी पुष्पा की भाषा सहज सरल तथा रोचक है। भाषा शैली की विविध विशेषताएँ पायी जाती हैं"।[22] वर्णनात्मक विश्लेषणात्मक, प्रतिकात्मक, सरल, संकेत, आदि ग्रामीण परिवेश रचनाएँ होने के कारण बुंदेलखड़ तथा ब्रज के आंचल की ग्रामीण हिन्दी भाषा का साहित्य में प्रयोग किया है।

संक्षेप में निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि इस विषय के अध्ययन के पश्चात हमे ऐसा प्रतीत हुआ की मैत्रेयी पुष्पाजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्ति, घर, परिवार, समाज, राष्ट्र, राजनीतिक, आर्थिक विषमता, नैतिकता और भाषिकता जिसके अंतर्गत भाषागत विशेषता, शब्द, शैली इन तत्वों का प्रयोग कर सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। उपयुक्त करणों से हिन्दी साहित्य जगत में अन्य कथा साहित्यकारों से मैत्रेयीजी का एक अलग और विशिष्ट स्थान हैं। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। क्योंकि भारत कि आबादी के सत्तर प्रतिशद गाँवो में रहते हैं। "लेखिका ने इन्हीं ग्रामों से अपने कथा साहित्य का विषय चुन लिया हैं। दूसरे लखकों से भिन्न उनकी खासियत भी यही है कि समाज द्वारा उपेक्षितों में जागरण लाने के लिए ही उन्होने

अपनी रचनाएँ की हैं"।[23] वे आज भी इसी लक्ष्य को सामने रखकर अभंगुर साहित्य-साधना करती आ रही हैं।

<u>संदर्भ सूची</u>

1. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 30
2. डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी युग बोध का संदर्भ, पृष्ठ 20
3. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 41
4. -वही से
5. कालिया ममता, ममता कालिया की कहानियां, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 28
6. भंडारी मन्नू, मैं हार गई, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण:2011
7. भंडारी मन्नू, संपूर्ण कहानियों, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण:2010
8. सुशील सिद्धार्थ, मेरे साक्षात्कारः मन्नू भंडारी, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण: 2016, पृष्ठ 161
9. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 40
10. -वही से
11. प्रियंवादा उषा, मेरी सृजन प्रक्रिया

12. गर्ग मृदुला, मृदुला गर्ग की लोकप्रिय कहनियां

13. अरोडा सुधा, उधड़ा हुआ स्वेटर

14. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 39

15. सूर्यबाला, सूर्यबाला की प्रतिनिधी कहानियां

16. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 42

17. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, संस्करण:2014, प्रकाशन प्रिय साहित्य सदन, पृष्ठ 32

18. नायर स्मिता -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य का अनुशीलन पृष्ठ-123

19. -वही से

20. पुष्पा मैत्रीय, ललमनिया, किताबघर प्रकाशन असारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सस्करण 2010

21. पुष्पा मैत्रेयी, चिह्नार, आर्य प्रकाशन मंडल सरस्वती भण्डार, गांधीनगर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991, द्वितीय संस्करण 1997

22. पुष्पा मैत्रेयी, 10 प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन असारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण 2020

तृतीय अध्याय 3. मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन

"१० प्रतिनिधि कहानियां" कहानी संग्रह मैत्रीय पुष्पा द्वारा रचित कहानी संग्रह जो है किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली से प्रकाशित हुई हैं। यह संग्रह पेपरबैक संस्करण २०२० में प्रकाशित हुआ संग्रह हैं। इसके आवरण जो है वह है रवि शर्मा। इन कहानियों में कहीं-कहीं जातिसूचक शब्द आ गए हैं, जो कथानक में बोले जाने वाले संवादों के अभ्यासवश आए हैं-पात्रों की जुबानी। इस कहानी संग्रह के माध्यम से मेने बेटी, सिस्टर, फैसला, ताला खुला है पापा, बिछड़े हुए, राय प्रवीण, तुम किसकी हो बिन्नी, पगला गई भागमती, छुटकारा, उजदारी इन कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन किया है सभी कहानी तत्वों के आधार पर आधारीत है

3.1 बेटी

3.1.1 कथानक

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी संघर्ष की प्रमुखता हैं। यर्थातता और भावुकता का सामन्वय उनके कहानियों की विशेषता है। 'बेटी' यह कहानी चिहनार इस कहानी संग्रह से ली गई है। माँ-बाप व्दारा बेटी और बेटे के प्रति किए जानेवाले पक्षपातपूर्ण व्यवहार को स्पष्ट करनेवाली यह "बेटी" कहानी है। इस कहानी में दों सहेलियाँ है जो अलग-अलग जिंदगीयाँ जी रही है। एक है 'वसुधा' और दूसरी है 'मुन्नी'। वसुधा अपने माँ-बाप की इकलौती ही संतान हैं। वसुधा पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाती है, तो मुन्नी अपने माँ-बाप और घर के सभी कामों में हात बटाती है क्योंकि उनके माँ-बाप ले लिए मुन्नी पराया धन हैं। मुन्नी को पाँच भाई है जो स्कूल जाते हैं।

“बेटी” कहानी एक गाँव के दो लड़कियों, वसुधा और मुन्नी, के जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को दर्शाती है। वसुधा को शिक्षा का हक मिलता है, लेकिन मुन्नी को घर के कामों में हाथ बटाना पड़ता है। जब वसुधा शहर में शिक्षा के लिए जाती है, तब मुन्नी अपने माँ-बाप की चिंता करती है और उनका साथ देती है। अंत में, वसुधा और मुन्नी का मिलन होता है और वसुधा उनकी साथी बनकर अपनी माँ-बाप की देखभाल करने का वचन देती है। इस कहानी के माध्यम से हमें यह सच्चाई सामने आती है कि अभी भी समाज में बेटियों को बेटों के मुकाबले कम महत्व दिया जाता है, लेकिन बेटियाँ ही हमारे बुढ़ापे का सहारा होती हैं।

वसुधा और मुन्नी की कहानी एक बारिक भावनाओं की भरपूर यात्रा है। वसुधा की शिक्षा के सपने को पूरा करने के लिए उसने कई संघर्षों का सामना किया। उसके संघर्ष और मुन्नी की साथी भूमिका उसके लिए प्रेरणादायक है। वसुधा की शिक्षा में सफलता का एक प्रतीक बनकर, मुन्नी ने भी अपने परिवार का साथ दिया। इस कहानी में नारी सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो हमें यह सिखाती है कि हमें बेटियों को समान अधिकार और अवसर प्रदान करने की जरूरत है। इस कहानी के माध्यम से हमें यह भी सिखाया जाता है कि बेटियों का शिक्षा और सशक्तिकरण ही समाज के विकास की कुंजी है। वसुधा और मुन्नी की इस गहरी दोस्ती ने हमें यह दिखाया कि सहानुभूति और सहयोग से हम समाज में परिवर्तन ला सकते हैं और एक बेहतर और समानिता से भरा समाज बना सकते हैं।

3.1.2 चरित्र चित्रण

मुन्नी- मुन्नी' सुंदर, सुसंस्कृत, भावुक, परिश्रमी आदि रूपों में अंकित है। बेटों से निराश माँ का पत्र मिलते ही मुन्नी अपने बेटी को माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा बनाती है और उसे इतना आत्मविश्वास है कि, अपनी बेटी वसुधा की तरह गाँव में रहेंगी और पढ़ाई पूरी करेगी। अपनी पढाई की अधूरी आकांक्षा वह अपने बेटी में देखती है। ऐसा मुन्नी का अनोखा चित्रण अंकित है।

वसुधा- वसुधा को पढ़ाई अच्छी नहीं लगती, लेकिन उसके माता-पिता उसे पढ़ाई भेजते हैं क्योंकि उनके नज़रिए में शिक्षा जरूरी है। वसुधा को अपनी सहेलियों के साथ मौज-मस्ती करना पसंद है, लेकिन उसे इससे दूर रखा जाता है। वसुधा पढ़-लिखकर अच्छा स्थान प्राप्त करती है और शहर में अपना घर बसाती है। लेखिका ने वसुधा के माध्यम से एक उदाहरण दिया है, जो अपनी सहेली को पढ़ाई के लिए प्रेरित करती है।

हितेश- 'बेटी' इस कहानी में एक पुरुष पात्र भी है, जिसका नाम हितेश है। वह पड़ीतजी का बेटा हैं और वह वसुधा का पड़ोसी भी।

मुन्नी की मां- मुन्नी की माँ अशिक्षित होने के कारण पढ़ाई का महत्व नहीं समझती हैं और अपने बेटों को पढ़ा-लिखा करने की बजाय उन्हें बहुत काम करवाती हैं। बेटी को पढ़ाई से दूर रखकर उसकी शादी की चिंता में रहती हैं। जब बेटी की शादी होती है, तो उसे बेटे की याद आती है, और उसे बेटी का सही महत्व समझ आता है।

3.1.3 भाषा शैली

बेटी कहानी में हमें एक सरल भाषा दिखाई देती है जो पाठक को समझना आसान है। यह बुंदेलखंडी की होने की बावजूद भी उनकी कहानी असुरली भाषा में हमें दिखाई देती है जो एक अच्छी बात होती है।

3.1.4 उद्देश्य

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित "बेटी" कहानी में हमें लिंगभेद, स्त्री-पुरुष असमानता, और नारी चेतना की महत्वता को समझाने का उद्देश्य मिलता है। यह कहानी समाज को रुढ़िवादी सोच से बाहर निकालने की प्रेरणा भी देती है। बेटियों को समाज में समानता का अधिकार प्राप्त करने के लिए शिक्षित और सभ्य समाज की आवश्यकता को उजागर किया गया है। इससे हमें बेटियों के शिक्षित होने और समाज में समानता की प्राप्ति में महत्व को समझाने की प्रेरणा मिलती है।

3.2 फैसला

'फैसला' कहानी मैत्रेयी पुष्पा की एक बहु चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने स्त्री की चिर-बंदिनी छवि पर प्रकाश डालते हुए उसे तोड़ने का प्रयास किया है। 'फैसला' कहानी की तात्विक समीक्षा स्त्री-विमर्श पर आधारित है। इस कहानी पर 'वसुमती 'वसुमती चिट्ठी' नाम से टेलीफिल्म बनी है। इस कहानी की नायिका वसुमती अपनी मास्साब के लिखे पत्र में अपने जीवन की अनकही बातें बड़ी सहजता से व्यक्त करती है। रनवीर की पत्नी वसुमती ग्राम की प्रमुख है। पत्नी को चुनाव में प्रधान पद प्राप्त होता है किन्तु पति उसे कारोबार करने नहीं देता। आरक्षण के कारण महिलाओं को राजनीति में स्थान तो मिला लेकिन पुरुष उसे अपने रास्ते की बाधा ही मानता है। पुरुष अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहता है किन्तु नारी अपने अधिकार का उपयोग

कर अपने अस्तित्व को बरकरार रखती है। यह पितृसत्ता के खिलाफ फैसला है। नारी का अधिकार और उसे प्राप्त सत्ता तो सिर्फ नाम मात्र की रह गई है। उसे तो माँ, बहन, बेटी और पत्नी की आड़ देकर या घर की परंपरा और मान मर्यादा की दुहाई देकर समझाकर या धमकाकर उसके कानूनी अधिकारों पर पुरष ही बिराजमान होता रहा.. है। ‘‘पंचायती चबूतरे पर बैठती तुम शोभा देती हो? लाज-लिहाज मत उतारो । कुल परम्परा काख्याल भी नहीं रहा तुम्हें? औरत की गरिमा आढ़-मर्यादा से ही है। फिर तुम क्या जानो गाँव में कैसे-कैसे धूर्त हैं?’’[4] भारतीय आदर्श पत्नी की तरह अपने पति के सही या गलत बातों का समर्थन करती है। पति के हर फैसले को नतमस्तक स्वीकार करती रही और पति को खुश देखने के लिए वह तन मन से न्यौछावर होती रही। वह प्रधान बन कर खुश थी कि गाँव की शकल बदल देगी किन्तु उसके हर फैसले को रनवीर खारिज करके निरुत्तर कर देता है।

गाँव में बकरिया चराने वाली ईसुरिया कहानी का सचेत नारी पात्र है। वह अनपढ़ गँवार होने के बावजूद अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। उसे लगता है कि एक नारी का प्रधान पद समग्र नारी का गैरव लगता है। ‘‘सब जनीं सुनो, सुन लो कान खोलकें। बरोबरी का जमाना आ गया। अब ठठरी बँधे मरद मारकूटी करें, गारी-गरौज दें, मायके न भेजें, पीहर से रुपया पइसा मंगवायें, क्या कहते हैं कि दायजे के पीछे सतावें, तो सूधी चली जाना वसुमती के ढिंग’’।[1] हर नारी के साथ एक जैसा ही अन्याय सहन करना या उसके सामने चुप रहना पड़ता है।

एक दिन रनवीर की गैर मौजूदगी में वसुमती प्रधान होने के नाते पंचायत जाती है। गाँव की लड़की हरदेई और उसकी वृद्ध माँ की जीवन की पीड़ा सुनकर वह न्याय दिलाती है और उसे पति के साथ जाने के विषय में फैसला सुनाती है। वसुमती का फैसला रनवीर को चुनौती की तरह लगता है और कटु वचन कहता है कि "कचहरी करने का इतना शौक था तो बाप से कहकर वकालत पढ़ लेती।[5] बार-बार मना करने पर भी। हरदेई की मृत्यु का रहस्य वसुमती जान चुकी थी। वह अपने पति के खिलाफ विद्रोह नहीं कर सकती थी और मौन रहती है।

कुछ ही दिनों में प्रमुख का चुनाव आता है। रनवीर दुबारा चुनाव में खड़ा होता है। वसुमती सब कुछ देखती है यहाँ तक कि वोट देने तक नहीं जाना चाहती। रनवीर समझा-बुझाकर भेजता है। चुनाव में एक ही वोट से रनवीर की पराजय होती है। वह पत्नी का कर्तव्य सांत्वना देते निभाती है इतना ही नहीं पति की स्थिति को देखकर दुःखी होती है। एक ही वोट से पराजय, यह बात उसका मन स्वीकार के लिए तैयार नहीं होता। उसकी मनःस्थिति दयनीय हो जाती है तभी तो भीतर से हाहाकार उठता है कि "ओ मेरे अग्नि देवता। ओ सप्तपदी दिलाने वाले महापंडित। ओ मेरे जननी-जनक और मास्साब आप, मेरे गुरुवर आपने मुझे सुख-दुःख की सहभागिनी, अर्द्धांगिनी, सहचरी बनाकर रनवीर की पत्नी के रूप में विदा किया था"।[7] वसुमती का पति के खिलाफ ही नहीं उस अन्यायी के खिलाफ यह मौन विद्रोह और फैसला है।

अंत में कहानी एक महत्वपूर्ण संदेश देती है कि जब तक नारी स्वयं अपने उत्थान वह उद्धार के लिए प्रयास नहीं करेगी, तब तक कुछ नहीं हो सकता। बसुमती के पंछी का केवल एक वोट से

हार जाना यह संदेश भी देता है कि गलत के विरुद्ध उठाई गई हर आवाज महत्व रखती है, भले ही वह आवाज अकेली ही क्यों न हो।

3.2.1चरित्र चित्रण

वसुमति- मैत्रेयी पुष्पा ने वसुमती को एक परिश्रमी, निडर, सज्जन, स्वाभिमानी, विवेकी नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। वसुमती गाँव की प्रधान बनकर गरीबों के लिए न्याय करने का दायित्व संभालती है। वह न्याय के साथ अपने पति का समर्थन भी करती है, परंतु वह न्याय के सत्यापक्ष के बीच अपने पति को भी अपना वोट नहीं देती है। वसुमती नारी चेतना का अच्छा उदाहरण है, जो संस्कृति की चौखट को तोड़कर समाज में न्याय के लिए लड़ती है।

ईसुरिया- ईसुरिया, इस कहानी का महत्वपूर्ण स्त्री पात्र है। वह समाज में स्त्री विद्रोह की चिंगारी के रूप में प्रतिष्ठित है। वह निर्भीकता से पुरुष प्रधान समाज की गलत परंपराओं पर उंगली उठाती है। अपने अच्छे विचारों के साथ, वह वसुमती की सहेली है और उसे समझाती है कि वह अपने हक के लिए लड़े। ईसुरिया को वसुमती पर पूरा भरोसा है क्योंकि वह जानती है कि वसुमती अपने पति से होशियार है।

हरदेई- हरदेई, एक गाँव की बेटी, अपने पिता के अत्याचार से पीड़ित हैं। पिता उसे अपने पति के पास जाने नहीं देते हैं और उसे अन्याय से दुखी करते हैं। उसका पिता उसे गालियाँ देते और मारते पीटते हैं, और उसका भाई भी उसपर अन्याय करता है। हरदेई न्याय के लिए पंचायत तक जाती हैं, लेकिन वहाँ उसे न्याय नहीं मिलता है। अन्याय के बाद दुःखी होकर हरदेई आत्महत्या कर लेती हैं।

रनवीर- रनवीर भी इस कहानी का महत्वपूर्ण पात्र हैं। रनवीर वसुमती का पती है। वसुमती प्रधान होने के वसुमती बावजूद सभी निर्णय रनवीर खुद लेता है। रनवीर राजनीति का मंजा खिलाड़ी है। अपने षडयंत्रकारी कृत्यों के कारण उसे कहानी का खलनायक कहा जाना गलत ना होगा। पुरुष वर्चस्व के हिमायती, भ्रष्टाचारी स्वार्थी तथा कुर्सी बचाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। रिश्तेंके प्रति उनके जीवन में कोई मायने नहीं है। रनवीर एकसाथ दो पदो पर नहीं आसीन हो सकता था इसलिए वसुमती को वह ग्राम-प्रधान बनाता है किन्तु वसुमती को कोई अधिकार नहीं देता।

हरदेई के पिता- एक तुच्छ प्रवृत्ति व्यक्ति।

हरदई की माँ- बेटी के लिए चिंतित ।

हरदेई का पति- फौज में नौकरी करता था।

3.2.2भाषा शैली

फैसला इस कहानी में भाषा में अँग्रेजी और आधुनिक भाषा का प्रयोग किया गया है। समय के साथ सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ बदलती हैं। लेखिका इन बदलती परिस्थितियों एवं प्रवृतियों के चित्रण के लिए नवीन भाषा और शैली का प्रयोग करती हैं। अपनी कहनियों में लेखिका ने ग्रामीण जीवन के संघर्ष के साथ आधुनिक शहरी जीवन की यांत्रिकता खोखलापन आदि के चित्रण के लिए स्थानीय या बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। मैत्रयीजी ने मन के आंतरिक भावों एवं बदलते जीवन परिवेश की अभिव्यक्ति के लिए रचना-विधान और भाषा-शैली को उनके अनुरूप प्रस्तुत किया है।

3.2.3 उद्देश्य

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित यह कहानी 'फैसला' कोई अपवाद नहीं है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य स्त्री-पुरुष असामानता को समाप्त करना और स्त्री सशक्तिकरण पर बल देना है। कहानी में ईसुरिया का पात्र स्त्री सशक्तिकरण का प्रतिनिधि पात्र है। वह निर्भीकता से पुरुष प्रधान समाज की गलत परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठाती है। और वसुमती को ग्राम प्रधान चुने जाने पर प्रसन्नता से उछल पड़ती हैं। इस कहानी में लेखिका ने कही उद्देश्यों को अपने सामने रखा है जैसे नारी समाज में वोट के प्रयोग के माध्यम से नारी में सशक्तिकरण की चेतना उत्पन्न करना तथा नारी जीवन संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालने का भी यथा संभव प्रयास किया गया है। इस प्रकाश से गरीब ग्रामीणों के शोषण की समस्या पर भी प्रकाश डालना लेखिका का उद्देश्य रहा हैं।

3.3 ताला खुला है पापा

भारतीय नारी का स्थान हमारे शास्त्रों में बहुत अच्छा है किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। समाज में देखते हैं कि एक पुरुष अपनी माँ, बहन, बेटी और पत्नी से अलग अलग व्यवहार करता है, इसके पीछे दकियानूसी मानसिकता ही नजर आती है। इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था भी जिम्मेदार है। लड़की अगर विवाह से पहले किसी लड़के से सम्बन्ध स्थापित करती है वो परिवार को स्वीकार्य नहीं होता वही सम्बन्ध अगर लड़का स्थापित करे तो ज्यादा हंगामा खड़ा नहीं होता। यह कहानी नयी पीढ़ी के युवान जो अपने बुजुर्गों के जातिगत दुराग्रहों के कारण अपनी घुटने टेक देते हैं। साहस के होते हुए भी बेबसी से जुड़े रहते है।

यह कहानी एक युवा लड़की बिंदो के जीवन की है, जो अपने प्रेमी अरविंद से विवाह करना चाहती है, परन्तु उसके पिता जगदीश चौबे इसे स्वीकार नहीं करते। मानवीय समाज में जातिगत भेदभाव और संस्कृतियों की पारंपरिकता के बीच उनकी जंग और बिंदो के प्रेम की कहानी है। यह कहानी बिंदो की आज़ादी और समाज के नियमों के खिलाफ उसकी लड़ाई को दर्शाती है। बिंदो के प्रेम की मित्रता और उसके परिवार के बीच उत्थित विवाद को उत्थान करती है। यह कहानी बिंदो की स्वतंत्रता की लड़ाई को बयान करती है और उसकी पिता के मन में बदलाव को दिखाती है।

बिंदो एक युवा लड़की है जो अपने प्रेमी अरविंद से विवाह करना चाहती है। परन्तु उसके पिता, जगदीश चौबे, इसे स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि बिंदो को उनकी जाति के लड़के के साथ ही विवाह करना चाहिए। परिवार के भरोसे और आदर्शों के बीच उसे अपने प्रेम को बचाने की लड़ाई लड़नी होती है। बिंदो की आज़ादी और समाज के नियमों के खिलाफ उसकी लड़ाई को दर्शाती है, जो उसे अपने प्रेम के लिए उत्साहित करती है। यह कहानी उसकी स्वतंत्रता की लड़ाई को बयान करती है और उसके पिता के मन में बदलाव को दिखाती है।

लगते हैं तो बिंदो ही पापा से कहती है कि पापा ताला खुला है। बेटी के बातों से पिता को ठेस लगती है और अपना ताला लगाने के कार्य पर प्रायश्चित करते हैं। यहाँ ताला प्रतीक जो खुला रखना या ने बेटी को आजाद करना है।

3.3.1 चरित्र चित्रण

बिन्दो- इस कहानी का प्रमुख पात्र है। बिन्दो की उम्र सत्रह सालथी। लंबी, रंग गोरा और तंदुरुस्त और सहेदम थी। उसके बाल लंबे थे और वो चोटी बादती थी। उसे कविता लिखना बहुत पसंद था और वो डायरी भी लिखती थी। वह अपने पापा जगदीश चौबे से बहुत प्यार करती थी। पिता की दुलारी थी। वे उसे बहुत पढ़ाना चाहते है। बिन्दी अरविंद नामक लड़के से प्यार करती थी लेकिन वे एक निम्न जाती का था और बिन्दो का परिवार इसके खिलाफ था। इसलिए उसके पिताजी बिन्दो को कमरे मे बंद कर रखते थे।

जगदीश चौबे- बिन्दों के पिताजी जगदीश चौबे थे। वे अपनी बेटी को बहुत प्यार करने थे। अपनी बेटी की चिंता उसे हर रोज सताती थी। एक दिन जब बिन्दो घर में नहीं दिखी वे पसीने से थुन हो गये। उन्हें बेटी की चित्ता सताने लगी इस समय उसे अपनी बिवी की याद आने लगी। इतने नहीं तुड़े थे जगदीशचौबे जितने ‘बेटी खो गयी थी। उन्हें बिढी पिने की तलब लगी थी।

अम्मा- जगदीश चौबे की पत्नी मतलब बिन्दो की माँ वे बहुत बीमार रहती थी। उन्हें झाँसी के हस्पताल में रखा था। जगदीश चौबे उसे गाय की तरह रकते थे। वे बहुत सीधी थी। लेकिन कभी-कभी चिड़चिड़ करती थी और बात-बात पर कौसती थी। बिन्दो कभी-कभी अपनी माँ को चुडेल समझती थी।

बुवा- रविन्द की बुवा वो अपने माता-पिता से दूर अपने बुवा के पास रहता है।

अरविन्द- अरविन्द यह सत्रह साल का लड़का जिससे बिन्दो प्यार करती थी। वह लंबा सावला और दुबला था। उसके होठ पतले से, मूँछे उग रही थी। अरविन्द बडो का बहुत आदर सम्मान

करता था। उसके नम्र स्वभाव से सभी लोग खुश थे। वो अपने माता-पिता से अलग अपने बुवा के पास रहता था और सबकी मदद भी करता था। उसकी शांत आँखे, छोटसे बाल, हँसता सा चेहरा, बिन्दों को मोहित करता था। लेकिन वह बहुत निम्न जाती का था इसलिए जगदीश चौबे उसे नकार रहे थे।

राजन, सतेन्द्र और मंजू- बिन्दो के स्कूल के दोस्त ।

राजकुमार- बिन्दो का बड़ा भाई और जगदीश चौबे का बेटा। वह पिढाई मे अच्छा नहीं था।

नाईन- नाईन जगदीश चौबे की पडोसन थी वह घुंघट लेती थी। उसका काम सिर्फ इधर से उदर कुदना याने किस के घर मे क्या चलता है यह देखना। बंदर की तरह कुदती है वो 'बन्दरो बहु' नाम रखा है उसे।

3.3.2भाषा शैली

'ताला खुला है पापा' इस कहानी में भाषा में अँग्रेजी और आधुनिक भाषा का प्रयोग किया गया है। समय के साथ सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ बदलती हैं। लेखिका इन बदलती परिस्थितियों एवं प्रवृतियों के चित्रण के लिए नवीन भाषा और शैली का प्रयोग करती हैं। अपनी कहनियों में लेखिका ने ग्रामीण जीवन के संघर्ष के साथ आधुनिक शहरी जीवन की यांत्रिकता खोखलापन आदि के चित्रण के लिए स्थानीय या बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। मैत्रेयी जी ने मन के आंतरिक भावों एवं बदलते जीवन परिवेश की अभिव्यक्ति के लिए रचना-विधान और भाषा-शैली को उनके अनुरूप प्रस्तुत किया है।

3.3.3 उद्देश्य

"ताला खुला है पापा" एक कथा है जो मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर करती है। इस कहानी में बिन्दों जैसी लड़की को पिंजरे में बंद किया जाता है और उसकी स्वतंत्रता को दबाया जाता है। महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार को चित्रित किया गया है, लेकिन वह विद्रोह नहीं कर पाती। मैत्रेयी के वाक्य और कलाकृति में विद्वता का वातावरण उनकी कथा की विशेषता है। इस कहानी में एक बेटी के पिता होने का अर्थ, उसकी स्वतंत्रता और अन्याय के खिलाफ लड़ाई को सुनाया गया है। इस कहानी में माता-पिता के प्रति बेटी की भावनाओं को समझने का संदेश है। इस कथा में मैत्रेयी ने मानवता के खिलाफ अन्याय की आवाज उठाई है।

3.4 बिछड़े हुए

प्राचीनकाल से ही नारी विवाह होने पर पिता के, विवाह के बाद पति के और वृद्धा वस्था में पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करती है। स्त्री और पुरुष का सहयोग और सामंजस्य बराबर का बना रहता है।

यह कहानी एक महिला की साहसिकता, संघर्ष और नारी के समाज में अपनी पहचान के लिए उसकी लड़ाई को दर्शाती है। चंदा ने अपने जीवन में कई परिस्थितियों का सामना किया, लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। वह न तो अपने पति के बिना जीने से परेशान हुई और न ही अपनी बेटी के भविष्य को खतरे में डालने का सहमत हुई। उसने अपने प्रियतम को पाने के लिए हर संभव

प्रयास किया, लेकिन जब उसका पति फिर से लौट आया, तो उसने अपने संघर्ष का एक नया मोड़ उठाया और अपनी बेटी के साथ खुद का नया जीवन आरंभ किया।

इस कहानी में नारी का सम्मान, साहस, और स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण माना गया है। चंदा की चरित्र विकास कहानी के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है, जो उसकी लड़ाई और विजय को दर्शाता है। इस कहानी के माध्यम से, लेखक ने भारतीय समाज में महिलाओं के बदलते स्थान और उनके अधिकारों के बारे में सोचने का प्रेरणा दिया है।

भारतीय समाज में नारी पुरुष के लिए और पुरुष नारी के लिए सर्वस्व त्याग के लिए तत्पर है। यही त्याग की भावना दोनों के जीवन को सुखमय बनाती है। वह करुणा, दया, प्रेम किस साक्षात मानवीय गुणों की देवी है। सुग्रीव घर बार, पत्नी और पुत्री की जिम्मेदारी ना उठाकर संसार से पलायन करता है और किंतु घर छोड़कर सन्यासी तो बनाफिर भी मन तो संसार से बंधा ही रहता है।

चंदा का पति, जिसे उसने छोड़ दिया था, सन्यासी बनकर घर से चला गया था, लेकिन चंदा ने अपनी बेटी के साथ अपने संघर्ष से गुजरा और उसे सहारा दिया। चंदा ने अपनी सारी मेहनत से अपनी बेटी को शादी के लिए तैयार किया। उसका पति वापस आया, लेकिन चंदा ने उसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि उसने पति को पहचान ने से इंकार कर दिया था।

इस कहानी का कथानक यह है कि एक महिला अपनी बेटी के साथ हर मुश्किल को सामना करती है, और अपने धर्म के कर्तव्य को निभाती है, भले ही उसके पति ने उसे छोड़ दिया हो। यह कहानी एक माँ की बलिदान और साहस को दर्शाती है।

भारतीय धार्मिक ग्रंथों में मनुष्य के विवाह करके घर से विमुख होना स्वीकार नहीं किया है। धर्म सम्बन्धी जो लक्षण दिखाई देते हैं जो वो सब पुरुषों के पक्ष में जाते हुए दिखाई देते हैं। धर्मशास्त्रों में मनुष्य जीवन में कर्म को प्रधानता दी है। संसार में ही रहकर घर की जिम्मेदारी निभाते धर्म के साथ रहने की बात कही है। जब घर का पुरुष ही पत्नी और बच्ची को छोड़कर सन्यास धारण करें तो लोगों को शायद अच्छा लगे किन्तु पत्नी के सर पर घर की जिम्मेदारी आ जाये तो जीना दूभर हो जाता है। सुग्रीव जब गंगा स्नान करने जाता है वहीं से वो बताये बिना ही चला जाता है और साधु बन जाता है। पति को पाने के लिए प्रयास वो करती है फिर भी उसका पति नहीं मिलता तो निराश होकर लौटती है और अपनी बेटी मगना को हर मुश्किलों का सामना करते हुए विवाह योग्य बनाती है।

3.4.1 चरित्र चित्रण

चंदा-चंदा एक स्वाभिमानी स्त्री है जो अपने पति के छोड़ने के बाद भी अपने और अपनी बेटी के लिए खुद को संभालती है। उसने अपनी जिम्मेदारियों का सामना किया और अपने स्वाभिमान को बनाए रखा। चंदा ने अपने बच्चे को पाल-पोस कर बड़ा किया और उसे पढ़ा-लिखा किया। जब उसका पति वापस आता है, तो चंदा उसे पहचानने से इंकार करती है, क्योंकि वह स्वाभिमानी स्त्री है। इस कहानी में चंदा के माध्यम से लेखिका ने उन स्त्रियों का चित्रण किया है जो समाज में अपनी और अपने परिवार की जिम्मेदारियों का सामना करती हैं और स्वाभिमान को संभालती हैं।

सुग्रीव/स्वामी शतानंद- सुग्रीव चंदा का पति है, जो कर्ज की वजह से अपनी पत्नी और बच्चे को छोड़कर भाग जाता है। बाद में उसने सन्यास लेने का फैसला किया और स्त्री के स्पर्श को पाप समझने लगा। जब वह अपने गांव लौटता है, तो लोग उसे पहचानते हैं, लेकिन वह अपनी पत्नी और बेटी से मिलने से इंकार करता है। इस कहानी में सुग्रीव का चरित्र दर्शाता है कि कैसे एक पुरुष अपने परिवार को छोड़कर भाग जाता है और उसकी पत्नी और बेटी की मदद के बजाय उन्हें छोड़ देता है।

3.4.2 भाषा शैली

बछड़े हुए' कहनी में गाँव वालों के संवादों द्वारा सुग्रीव और चंदा है। गाँववालों के भारतीय नारी के रूप को प्रस्तुत करते है।

3.4.3 उद्देशय

इस कहानी में, चंदा का पति उसे और उनकी बेटी को छोड़कर चला जाता है। चंदा अपने और अपनी बेटी का ख्याल रखती है और उनके पेट का पालन करती है। उसे एक दिन खबर मिलती है कि उसका पति गांव में वापस आया है, लेकिन उसे पहचानने के बावजूद चंदा उसे पहचानने से इंकार करती है और वापस अपने घर चली आती है।

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्त्रियों की समस्याओं को उजागर किया है, जहां पर एक औरत को उसका पति अकेला छोड़कर भाग जाता है। यह कहानी उन समाजिक परिस्थितियों को दिखाती है जो गांव की औरतों को अकेले होने पर कैसे सामाजिक और मानसिक प्रतिबद्धता

में डाल देते हैं। यह भी प्रदर्शित किया गया है कि क्या पति के भाग जाने पर केवल औरत ही दोषी होती है।

3.5 राय प्रवीण

इस कहानी की कथावस्तु नये ढंग की है। इसकी कथावस्तु ऐतिहासिक और सामाजिक साथ-साथ चलती है। मुगलकालीन ऐतिहासिक संदर्भ राय प्रवीण को आधार बनाकर वर्तमान सावित्री को लेकर लोक कथा पर आधारित कहानी है। सावित्री जब राय प्रवीण की भूमिका नाटक के माध्यम से निभाती है, तब वह पुरुषसत्ता को चुनौती देती है। नायिका सावित्री अपने जीवन में रूढ़ि-परंपराओं की यातनाओं को झेलती है। विवाह संस्था में नारी एक वस्तु बनकर रह जाती है जिसका न तो समाज में स्थान है और न परिवार में स्थान मिलता है।

राय प्रवीण की कथा इतिहास में मौजूद है उसी के माध्यम से सावित्री के जीवन को जोड़ा है। जब नाटक में अकबर राय प्रवीण को राजा इंद्रमणि सिंह ले जाता है तब राय प्रवीण अपनी विद्वता से उसे हराकर अपने राजा के पास वापस आती है।

यह कहानी एक महिला के साहस और समाज में उसके स्थान की लड़ाई को दर्शाती है, जिसने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया। यह कथा मुगलकालीन भारत के सामाजिक संरचना और महिलाओं के स्थान को सामाजिक दृष्टिकोण से प्रकट करती है। एक वेश्या की बेटी, जिसे सामाजिक दृष्टिकोण से स्त्री के लिए सम्मान की कमी होती है, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। इस कहानी में सावित्री नाम की महिला अपने सामाजिक और परिवारिक दबाव के बावजूद अपने स्वार्थ के लिए संघर्ष करती है, परन्तु उसकी संघर्षमय जीवनयात्रा में वह कभी हार

नहीं मानती। इस कथा में भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक सचाई को दर्शाते हुए, लेखिका ने सावित्री के व्यक्तित्व को उजागर किया है, जो अपने सामाजिक परिवेश में एक सामान्य महिला के रूप में सामर्थ्य और साहस का प्रतीक है। इस कहानी में सावित्री की प्रेरणादायक कहानी को ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन भारतीय समाज के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। सावित्री की प्रेरणादायक कहानी उसके साहस, साहित्य, और स्वतंत्रता की कहानी है, जो उसके व्यक्तित्व की मजबूती को दर्शाती है। इस कहानी के माध्यम से, लेखिका ने महिलाओं के समाज में समानता और सम्मान की महत्ता को प्रमुखता दी है। इस कहानी के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि समाज में महिलाओं को उनके सामाजिक और परिवारिक स्थान को सुधारने की आवश्यकता है। उन्हें समानता, सम्मान, और स्वतंत्रता का अधिकार होना चाहिए। इस कहानी के माध्यम से, हमें यह सिखने को मिलता है कि महिलाएं अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकती हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती हैं।

अंत में वो गोविंद के साथ भाग जाती है किन्तु गाँव वालों को लगता उसने नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली। कहते हैं न, मरे पूत की बड़ी-बड़ी आँखें सावित्री सचमुच की सावित्री निकली। शीलभंग हुआ, सतीत्व नष्ट हुआ, पर अपने आदमी का पिछौरा मैला होने से पहले अपनी जान पर खेल गई। बाप को मुहँ दिखाने के काबिल नहीं रही तो जल में छलांग लगा दी। भाई, इन्हीं सतियों के दम पर कायम है संसार लोगों की यह आदत होती है कि जब मनुष्य जिन्दा होता है तो उसे सकून से जीने नहीं देते परंतु जब उसकी मौत होती है तो उसके गुणगान गाने से थकते नहीं है। सती होना या बनाना यह स्त्री के जीवन की करुणता है। स्त्रियों के जीवन के साथ

खिलवाड़ करना और उसका उपयोग करना ही पितृसत्ता को कायम रखना है। नारी विमर्श का यह पहलू लोककथा के माध्यम से लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

3.5.1 चरित्र चित्रण

रायप्रविण- राय प्रविण, एक नाचने गाने वाली वेश्या, राजा इंद्रमणि सिंह की प्रेमिका हैं। राजा अकबर उन्हें अलग करने के लिए राजा इंद्रमणि से धमकी देते हैं। राय प्रविण ओरछा राज्य को बचाने के लिए राजा इंद्रमणि से अपनी आजादी माँगती हैं और आगरा के लिए रवाना हो जाती हैं। आगरा में, राय प्रविण बादशाह अकबर को जूठा भोजन देती हैं, जिससे अकबर शर्मिंदा हो जाते हैं और उन्हें विदा कर दिया जाता है।

सावित्री- सावित्री एक गणित मास्टर की बेटी हैं, पर गणित में फिसड्डी होने के कारण उसे घर की रसोई संभालनी पड़ती है। उसे हिन्दी मास्टर स्कूल के नाटक में हिस्सा लेने के लिए कहता है, जिससे उसके पिता को अच्छा नहीं लगता। फिर भी उसे नाटक में अच्छा काम करते देखकर वह उसे बिगड़ी हुई लड़की समझते हैं और उसकी शादी के लिए सोचते हैं। शादी के बाद सावित्री अपने पति का घर अच्छी तरह से संभालती हैं। एक दिन बारिश के कारण सारा गाँव तहस-नहस हो जाता है, और उसके पति भी बीमार रहते हैं। इस समय सावित्री अपने पति और गाँव की जान बचाने के लिए अपने जिस्म का सौदा करती हैं। परंतु जब उसके पति को इसकी खबर मिलती है, तो वह उसे मारते हैं। इसके बाद सावित्री अपने पिता के घर जाती हैं, पर उसके पहुंचने से पहले ही उसके पिता आत्महत्या की कोशिश करते हैं। दूसरे दिन खबर फैलती है कि सावित्री डूब मर

गई है, पर सच यह है कि वह अपने प्रेमी के साथ भाग गई है। इस घटना से यह पता चलता है कि एक औरत अपने पति की जान बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है।

3.5.2 भाषा शैली

'राय प्रवीण' कहानी की सावित्री का सरकारी राहत कैंप में दैहिक शोषण किया जाता है। दैहिक रूप से शोषित सावित्री को कलंकिनी कहकर परी द्वारा अस्वीकार किया जाता है तथा पिता द्वारा दुत्कारा जाता है। गाँव ने खबर फैन जाती है की सावित्री ने आत्महत्या की। समाज की इस व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करते हेतु लेखिका कहती है, "करुणा के रास्ते गुजरते हुए लोग सावित्री को बहादुर तक आ पहुँचें। कहते हैं न, मरे पूत की बड़ी-बड़ी आँखे ....सावित्री सचमुच की सावित्री निकली। शीलभंग हुआ, सतीत्व नष्ट हुआ, पर अपने आदमी का पिछौरा मैला से पहले अपनी जान पर खेल गई। बाप की मुँह दिखाने के काबिल नहीं रही तो जल में छलाँग लगा दी"।

3.5.3 उद्देश्य

रायप्रवीण' मैत्रेयी जी का कहानी संग्रह "गोमा हंसती हैं" की कहानी है। यहाँ तीन नारियों की शोषण की कथा कही गई हैं। लेखिका ने रायप्रवीण का पात्र इतिहास से किया और गृहस्थ स्त्रियों की अपेक्षा वे स्त्रियाँ ज्यादा स्वतंत्र होता है जो न सुरक्षा चाहती है, न संरक्षण की मोहताज होती हैं। इसमें नायक की भावना से उत्पन्न कथा और यथार्थ जिन्दगी में घटित कथा का मिश्रण किया गया हैं। रायप्रवीण जिसका बचपन का नाम सावित्री था, ओच्छा नरेश के दरबार की राजनर्तकी थी। अपने राज्य की रक्षा के लिए 'वेश्या' होना स्वीकार करते हुए अकबर का निमंत्रण स्वीकार करती हैं। समय के स्तर पर सराहनीय होने के लिए आज के राजनैतिक भ्रष्टाचार की खुलासा

'सावित्री' के चित्रण द्वारा किया गया है। सावित्री कहनी में एक शोषित पात्रा हैं। एक बार बाढ़ के अवसर पर अपने गाँववालों के लिए अन्न मांगने के लिए अन्न के बदले राहत कैंप के निवासियों को अफासरो कोअपना शरीर देना पड़ा। इससे स्पष्ट है कि आज की राजनीति में अन्य भ्रष्टाचारों के साथ नारी बलात्कार भी होता रहता हैं। इसी प्रकार से नारी का शोषण किया जाता है। पुरुष का वर्चिस्वता समाज अपना अधिकार मानता है।

3.6 <u>तुम किसकी हो बिन्नी</u>

वैश्वीकरण और तकनीकी के इस युग ने मनुष्य का जीवन सरल तो बनाया किन्तु वहीं तकनीकी का अभिशाप भी साथ जुड़ गया है। गर्भ परीक्षण मनुष्य के हित में होना स्वाभाविक है किन्तु जब उसका दुरुपयोग आने वाली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। सरकार के द्वारा बनाये कड़े कानून का स्वीकार नहीं हो पाता। कानून का कार्य सिर्फ शिक्षा देना है। समाज को सुधारने का नहीं। कुछ लोग संकीर्ण मानसिकता का शिकार होकर स्त्री- भुण हत्या का घिनौना कार्य करते हैं। वे ही लोग वंशवृद्धि को चलानेवाला मानकर लड़के की चाह रखते हैं। यह बात वंशवृद्धि तक ही नहीं है हकीकत तो यह है कि दुःख बेटी पैदा होने का नहीं है, दुःख उस बात का है जो एक औरत किसी से कह नहीं पाती वो अपने जख्म किसी को दिखा नहीं पाती जो बचपन से अत्याचार सहती आयी है। स्त्री-भूण हत्या के रूप में हम अपनी जल्लाद मानसिकता को बयान करते हैं तो साथ में सांस्कृतिक अधःपतन की ओर अग्रसर होते हैं। यह महापाप माना जाता है। इसके लिए स्त्री को ही जिम्मेदार माना जाता है।

कहानी में बिन्नी जैसी बेटियों के साथ होने वाले अन्याय और समाज में महिलाओं के स्थान की कमी को उजागर किया गया है। इस कथानक में नारी की सच्चाई को दर्शाने के लिए बिन्नी की कहानी को उभारा गया है। इसके माध्यम से लेखिका ने उन समस्याओं को उजागर किया है जो समाज में महिलाओं के साथ होती हैं। यह कहानी एक संघर्षपूर्ण माँ और उसकी बेटी की कहानी है, जो समाज में स्थिति को सुधारने के लिए लड़ती हैं। यह कहानी समाज में स्त्री हित के लिए एक सकारात्मक संदेश देती है।

तुम किसकी हो बिन्नी कहानी में बिन्नी को हर एक यातनाओं से गुजरना पड़ता हैं। यहाँ तक की उसकी माँ उसे अपनाने से इंकार करती हैं। क्योंकि वह एक लडकी पैदा हुई। बिन्नी को उसकी माँ अपनी नजरो से दूर रखती हैं। उसे गाँव में दादी के पास रखा जाता है। पर आखिर में यहीं बिन्नी को वह अपने पास बुलाती हैं। क्योंकि

वह फिर से गर्भवती होती हैं। और इस बार उसे लडका पैदा होने की संभावना है। पर दादी उसे वापस माँ के पास भेजने से इन्कार करती है।

निष्कर्ष रूप में देखा जाए तो लेखिका ने हमारे सामने इस कहानी के द्वारा एक ऐसे समाज का चित्र रेखांकित किया हैं। जिसमें एक स्त्री सामाजिक रीतियों के कारण दूसरी स्त्री से किस तरह का दृष्टतापूर्ण व्यवहार करती हैं। इसीलिए माँ उसे जन्म से पहले ही समाप्त कर देना चाहती हैं। अगर लडकी का जन्म न चाहते हुए भी होता हैं तो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। बिन्नी जैसी कई लडकियाँ इसी मानसिकता का शिकार हुई है। यही इस कहानी द्वारा बताया गया हैं।

3.6.1 चरित्र चित्रण

बिन्नी- बिन्नी एक गाँव की रहनेवाली हैं। उसकी माँ को पहले से ही दो लड़कियाँ हैं और तीसरी बार वह लड़के के आँस में बैठती हैं, परंतु तीसरी बार भी लड़की ही पैदा होती है। बिन्नी को उसकी माँ अपनाने से इनकार करती हैं और उसे बेटियों के तरह नहीं पहचानती। बिन्नी की माँ उसे बहुत सताती हैं, और उसे मारती-पीटती भी हैं। बिन्नी की दादी उसे लेकर गाव चली जाती हैं, लेकिन कुछ समय बाद उसके पिताजी बिन्नी को शहर ले जाने के लिए आते हैं। लेकिन दादी बिन्नी को भेजना नहीं चाहती क्योंकि उन्हें बिन्नी की पढ़ाई का एक साल बरबाद होने से डर लगता है।

आरती गुप्ता- आरती गुप्ता बिन्नी की माँ हैं। उन्होंने अपनी दो बेटियों को हताश और निऊपाय होकर स्वीकार किया। वह तीन बार गर्भपात करवाकर लड़का पैदा होने की उम्मीद में रहती हैं, परंतु लड़की पैदा होने पर उनके घर में मातम छा जाता है। उनका व्यवहार बिन्नी के प्रति बहुत अन्यायपूर्ण है। वह बिन्नी को सौतेली माँ की तरह व्यवहार करती हैं और उसे प्यार नहीं करती। लोग उन्हें हरवक्त ताने देते रहते हैं। यह सामाजिक अंधविश्वास उनके दिल और दिमाग को खोखला कर देता है, जिसके कारण उन्हें अपनी मासूम बेटी पर गुस्सा आता है।

बिन्नी की दादी- दादी एक साधारण स्त्री हैं जो अपनी पोती बिन्नी को प्यार से पालती हैं। उन्होंने बिन्नी की शिक्षा को महत्व दिया और उसे पाठशाला भेजने के लिए प्रोत्साहित किया। दादी बिन्नी के साथ खुशी से रहती हैं और उसे किसी भी तरह की कमी नहीं होने देती हैं। जब बिन्नी के पिताजी उसे लेने आते हैं, तो दादी उसे ले जाने की जगह पढ़ाई के लिए रुकावट डालती हैं,

क्योंकि उसकी पढ़ाई का एक साल बर्बाद हो जाएगा। इस तरह, लेखिका ने एक अशिक्षित परंतु समझदार स्त्री का चित्र रेखांकित किया है।

बिन्नी की बुआ- इस कहानी में बिन्नी की बुआ अपनी निराशा को उसकी माँ के सौतेले व्यवहार से जताती है। उसे बिन्नी की माँ पर गुस्सा आता है, लेकिन वह भी अन्य स्त्रियों से झगड़ती है। उसे बिन्नी को उसके जन्म की कहानी सुनाने की जरूरत महसूस होती है ताकि उसे दुःख ना हो। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने उन समाजिक रीतियों को उजागर किया है जो लड़कियों के खिलाफ हैं, और जिनसे बहुत सी लड़कियाँ प्रभावित होती हैं। बिन्नी जैसी कई लड़कियों की इसी मानसिकता को लेखिका ने दिखाया है।

3.6.2 भाषा शैली

'तुम किसकी ही बिन्नी' कहानी की बिन्नी बेटे के बदले पैदा होने के कारण माँ के तिरस्कार की शिकार बन जाती है। होश संभालते ही बालिका बिन्नी घर का सारा काम अपने ऊपर लेकर माँ को खुश रखने का हर संभव प्रयास करती है। किन्तु बिन्नी की एक भी गलती को माँ बर्दाश्त नहीं करती और उसे खूब मारती है। माँ के प्यार को तरसती बिन्नी की भवतरंगो को मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का भावपक्ष जितना सशक्त है, भाषापक्ष उतना ही आकर्षक। उनकी कहानियों की भाषा में चित्रात्मकता, प्रतिकात्मकता, व्यंग्यात्मकता, काव्यात्मकता आदि गुण स्पष्ट दिखाई देते है। शिल्प पक्ष की दृष्टि से मैत्रयीजी की कहानियाँ सफलता की उच्च कोटि पर है। साधारण लोगों की भाषा में लिखित उनकी कहानियों में भारत

के साधारण लोगों की कहानी है। संक्षेप में मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का भाषा एवं शिल्प आधिक सफल बना हैं।

3.6.3 उद्देश्य

"तुम किसकी हो बिन्नी" इस कहानी द्वारा लेखिका ने एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है, जिसकी माँ उसे अपनाने से इन्कार करती है, क्योंकि वह सिर्फ लडकी है। बिन्नी बेटे के बदले पैदा होने के कारण माँ के तिरस्कार की शिकार बन जाती हैं। असल एक में बिन्नी की माँ को लडका चाहिए था परंतु बिन्नी लडकी पैदा हुई इस वजह से उसकी माँ उससे बहुत बुरा बर्ताव करती हैं। बिन्नी को माँ से कोई लाड, प्यार, दुलार नहीं मिलता। एक दिन उसकी माँ उसे इतना मारती हैं कि उसके पिता उसे गाँव में दादी के पास छोड़ आते हैं। बिन्नी अपने दादी के साथ रहने लगती हैं, पर एक दिन बिन्नी के पिता उसे फिर से लेने आते हैं क्योंकि बिन्नी की माँ फिर से गर्भवती हैं। बिन्नी की जरूरत उन्हें सिर्फ इसीलिए हैं क्योंकि वह घर का सब कामकाज खुद आकेले संभाल सकती थी। बिन्नी अंत तक समझ ही नहीं पाति कि आखिर वह किसकी अमानत है? उसके माँ बाप की जिन्होंने उसे जन्म दिया था या अपने दादी की जो उसे अच्छी तरह से पाल पोस रहीं हैं ? अंत में इस कहानी द्वारा लेखिका ने स्त्रियों के उन समस्याओं पर प्रकाश डाला है, जहाँ पर सामाजिक कुरीतियों, रिति-रिवाजों के कारण एक स्त्री दूसरी स्त्री से दृष्टतापूर्ण व्यवहार करती हैं। फिर चाहे वह रिश्ता माँ-बेटी का ही क्यों न हो यह बात बिल्कुल भी मायने नहीं रखती। माँ के प्यार को तरसती बिन्नी की भावतरंगो को मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वार प्रस्तुत किया है। उसके हर प्रकार

की मानसिकता के पीछे पुरुष-प्रधान संस्कृति और परपंरागत मान्यता ही कारण है। और बिन्नी जैसी कई लड़कियाँ इसी मानसिकता की शिकार हुई है।

3.7 पगला गई भागमती

भारतीय समाज में बेटे की महत्ता के कारण बेटी के साथ अन्याय होता रहा है। प्रत्येक कार्य में भेदभाव पूर्ण नजरिया अपनाकर दोनों के स्थान तय किया जाता है। इतना ही नहीं बेटे का कार्य अगर गलत है तो उसे अनदेखा किया जाता है। जबकि बेटी से कोई गलती होती है तो उसे घर की इज्जत और सम्मान के साथ जोड़कर देखा जाता है। विवाह में नीति और आदर्शों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पुनर्विवाह को आदर्श नमानकर लड़की विधवा को आजीवन विधवा का जीवन बिताना पड़ता है।

भारतीय शास्त्रों में धर्म और मानव का गहरा संबंध स्थापित किया है। सुखमय जीवन के लिए मानव धार्मिक कार्य भीकरता आया है। पूजा-पाठ, तप- व्रत आदि करता है। इतना ही धर्म की कथाओं में आने वाले पात्रों के नाम से अपने बच्चों के नाम तक रखते हैं। भागो को गीता के मंत्रों का ज्ञान भले न हो, साधना उपासना का मर्म उसकी भदेश बुद्धि से बाहर की चीज है, और भले न उसे रामायण की चौपाइयाँ ही याद है, लेकिन उसे सती अनुसुइया,सावित्री, नल-दमयंती मदालसा की कथाएं सुनी है। आंख्यानो में अटूट श्रद्धा है, इसी कारण वह बिना नागा मंदिर जाती है। भारतीय नारी को बचपन में ही धर्म शास्त्र के ज्ञान से परिचित कराया जाता है। सती के सतीत्व को घूंटी की तरह पीलाई जाती है। भागमती भी बच्ची को संस्कार देकर अच्छी परवरिश करती है। समाज की नजरें बेटी के लिए टेढ़ी ही रही है। जब अनुसुइया प्यार करती है तो उसे घर की

इज्जत के खातिर जहर देकर मार दिया जाता है। बेटी की मौत घर में आम बात थी किंतु भागमती के लिए नहीं। जब बेटा लड़की को भगाकर लाता है और वह भी गर्भ है, यह बात भागमती को पता चली तो वह चुप नहीं रही और लोगों के सामने अनुसुइया के मौत का राज खोलती है। उसकी जीजी और जीजा यह कहते लोगों को शांत करते हैं कि पगला गई भागमती ।"पागल गई है भागमती इस कहानी में लेखिका ने भागो नामक एक विधवा स्त्री की व्यथा को चित्रित किया है। भागो अपनी जी जी और जीजा जी के साथ रहती है। विधवा होने के कारण उसे संतान ही नहीं है। वह अपने जीजी की बेटी को गोद लेती है और उसे पाल पोसकर बड़ा करती है पर उसके जीजाजी उसे जहर देकर मारते हैं क्योंकि उसने एक मास्टर से प्यार किया था। जब जीजाजी का बेटा प्यार करता है और एक पराई व्यक्ति की लड़की से विवाह करना चाहता है तो सभी लोग बड़ी धूमधाम से उसकी शादी करवाते हैं। पर इस बात पर भागों को गुस्सा आता है और वह सारी सच्चाई बयान करके शादी रुकाने का प्रयत्न करती है। पर उसकी सच्चाई बयान करने पर उसे पागल ठहराया जाता है। इस कहानी के माध्यम से हमें विधवा समस्या देखने को मिलती है। भागो एक विधवा है इसीलिए समाज तथा घर के लोगों से उसे बुरा बर्ताव मिलता है। उसे अन्य औरतों की तरह शादी विवाह के बारे में सोचना, अच्छा पहनना, ओढ़न, खाना-पीना सब वर्जित हैं। हमारे समाज में जब एक स्त्री प्यार करती है तो उससे कलंकिनी कहकर मार डाला जाता है अथवा उसे उपेक्षित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। जब प्यार एक सच्ची भावना है, प्यार कोई गुनाह नहीं है तो फिर क्यों प्यार के मामले में स्त्री-पुरुष भेदभाव किया जाता हैं। यह बात समाज की पुरुष प्रधान संस्कृति पर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। इसी पुरुष प्रधान संस्कृति की कठोरता के कारण स्त्री को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

3.7.1 चरित्र चित्रण

भागो- इस कहानी में भागो नामक एक विधवा स्त्री का चरित्र रेखांकित किया गया है। उसे विधवा होने के कारण समाज में अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसका चेहरा देखना भी अपशकून माना जाता है। भागो को मां नहीं बनने का दुख भी सहना पड़ता है, लेकिन उसकी बेटी अनुसुइया के साथ प्यार और संबंध को वह सराहती है। अनुसुइया की शादी के बाद, जब उसे अन्याय का सामना करना पड़ता है, तो भागो अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर पाती है और सच्चाई का सामना करती है। इससे उसे पागल समझा जाता है, जबकि वास्तव में वह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है।

जीजी- जीजी अनुसुइया की बड़ी बहन हैं। उन्होंने कभी भी अपनी बेटी को माँ का प्यार नहीं दिया। अपनी बेटी को आसानी से अपनी बहन को सौंप देती हैं। जब उसकी बेटी प्यार करती है, तो उसे मारने में वह अपने पति का साथ देती हैं। अपनी ही बेटी की मौत पर उसे कोई पछतावा नहीं होता। जीजी के माध्यम से लेखिका ने एक स्त्री का चित्रण किया है जो सिर्फ अपने पति की इच्छा के अनुसार चलती हैं। उसके लिए पति ही परमेश्वर हैं, और उसकी गलतियों को उसने नजरअंदाज कर दिया। लेखिका इस कहानी के माध्यम से पुरुष प्रधान समाज की कठोरता को दिखाती हैं, जहां एक माँ अपनी बेटी के साथ हुए अन्याय को नजरअंदाज करती हैं।

अनुसुइया- अनुसुइया जीजी की बेटी हैं, लेकिन उन्हें माँ का प्यार कभी नहीं मिला। उनकी गलती सिर्फ यह थी कि उन्होंने प्रेम किया। पर जब उनका भाई एक पराई जाति की लड़की से प्रेम करता है, तो उनके पिता बड़े धूमधाम से उनकी शादी कराने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेखिका इस

कहानी के माध्यम से पुरुष प्रधान सोच के खिलाफ विरोध करती हैं, जो एक लड़की को सिर्फ उसके प्रेम करने की वजह से सजा देती है, जबकि एक लड़के को ऐसा करने पर कोई सजा नहीं मिलती।

माधोसिंह ठाकुर / जिजा- माधोसिंह ठाकुर, अनुसूइया के पिता, अपने ठाकुर होने पर गर्व करते थे, लेकिन उन्हें बेटी का जन्म होने पर दुख हुआ। उन्होंने अपनी बेटी को कभी नहीं माना और उससे बेटे की तरह संबंध नहीं बनाए। अनुसूइया एक मध्यवर्गीय मास्टर से प्रेम करती थी, लेकिन जब ठाकुर को यह पता चला तो उन्होंने अपनी ही बेटी को जहर देकर मार डाला। लेखिका इस पात्र के माध्यम से हमें यह बताना चाहती है कि पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण पुरुष अपने इज्जत, मान, सम्मान, प्रतिष्ठा को बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

3.7.2 भाषा शैली

मैत्रयी पुष्पा ने अपने ब्रज तथा बुंदेलखंड के अंचल विशेष को अपनी कहानियों में प्रकट किया है, जिसके लिए आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है। उन्होने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को बोली के माध्यम से प्रकट किया है। इस कहानी में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

3.7.3 उद्देश्य

सामान्य पाठकों और पुरुष प्रधान जीवोंको आशचर्य होगा की मैत्रेयी की कहानी 'पगला गई है भागमती' की भागों पुरुष वर्चस्व का विरोध पत्थर मारकर करती है। वह पत्थर मार- मारकर उस पुरुष सत्ता को लहूलुहान कर देनाचाहती है जिसमें स्त्री और पुरुष में इतना गहरा विरोध है कि एक

का कृत्य अपराध है और उसकी सजा मौत है तो दूसरे का वही कृत्य स्वीकार्य है। भागो मासूम अनुसुइया के हत्या को ही नहीं उस दो मुंहेपन को लहूलुहान कर देना चाहती है जो स्त्री और पुरुष की संवेदना के बीच खाई बनाता है। भागो विवश है, अनुसुइया के हत्यारे को छिपकर पत्थर ही मार सकती है। यही विवशताहै के वह अपने ठगे जाने पर आक्रोशित तो होती है किंतु उसका आक्रोश अपने आपको बेसुध कर देने तक ही है।

वास्तव में मैत्रेयी पुष्पा के यह नारी पात्र स्त्रीअस्मिता की तलाश करने नजर आते है। यहां आक्रोश तो है मगर बेड़िया उसे जकडे हुए हैं। यह जकड़न टूटती नहीं अलबता'भागो' पागल और पागलपन की सीमा में चली जाती है। पाठकों को कहानी का अंत यथार्थ परक ही प्रतीत होगा। 'पगला गई है भागमती' पुरुष वर्चस्व का विरोध पत्थर मारकर करती है। आर्थिक रूप में सक्षम है तो पुरुष समाज उसका शोषण नहीं कर सकता।

3.8 <u>छुटकारा</u>

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक हमारा समाज दो वर्गों में बँटा हुआ है। एक शासक वर्ग जिसके पास पैसा, संपत्ति और वास्तविकसत्ता है। जबकि दूसरा वर्ग है शोषित समाज जो शक्तिहीन, अर्थहीन और मानव अधिकारों से वंचित रहा है। यह समाज अशिक्षित, अविकसित और अंधकारमय जीवन जीने को विवश है। चाहे सामाजिक राजकीय, आर्थिक या हर क्षेत्रों में उसकी उपेक्षा अवहेलना होती रही है। 'छुटकारा' कहानी- ऐसे ही बहिष्कृत लोगों की है जो भूख, गरीबी, डर और सत्ताहीनता के कारण लाचारी के साथ नारकीय जीवन जी रहे हैं।

इस कथा में छन्नो और रज्जो की जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को दिखाया गया है। छन्नो का यह संघर्ष उनकी बेटी के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए है, और यह भी दिखाया गया है कि उन्हें समाज में स्वीकार करने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ी। इस कथा में समाज में मौजूद जातिवाद और असमानता को उजागर किया गया है और इसे समाप्त करने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता को बताया गया है।

यह कथा हमें यह भी सिखाती है कि समाज में जातिवाद और भेदभाव को समाप्त करने के लिए हमें एकमित होकर लड़ना होगा। छन्नो और उसकी बेटी रज्जो के संघर्ष ने हमें यह दिखाया है कि हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ते रहना चाहिए, चाहे समाज में जातिवाद और असमानता कितनी भी मजबूत क्यों ना हो।

इस कथा में छन्नो और रज्जो की जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को दिखाया गया है। छन्नो का यह संघर्ष उनकी बेटी के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए है, और यह भी दिखाया गया है कि उन्हें समाज में स्वीकार करने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ी। इस कथा में समाज में मौजूद जातिवाद और असमानता को उजागर किया गया है और इसे समाप्त करने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता को बताया गया है।

यह कथा हमें यह भी सिखाती है कि समाज में जातिवाद और भेदभाव को समाप्त करने के लिए हमें एकमित होकर लड़ना होगा। छन्नो और उसकी बेटी रज्जो के संघर्ष ने हमें यह दिखाया है कि हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ते रहना चाहिए, चाहे समाज में जातिवाद और असमानता कितनी भी मजबूत क्यों ना हो।

3.8.1 चरित्र चित्रण

छन्नो- छन्नो अपनी बेटी रज्जो के साथ सीता गली में रहती है। छन्नो निम्न जाति के होने के कारण उनका घर अलग रखा जाता है। गाँव में छन्नो के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। लोग चाहते है कि वह अपनी बेटी के साथ न रहे। छन्नो और उसकी बेटी को गली से निकलने की हर कोशिश कार्यरत हो जाती है। फिर भी छन्नो इन बात से हार न मानकर घर खरीदती है।

रज्जो- रज्जो छन्नो की बेठी है। वह अपने माँ के साथ सीमा गली में रहने आती है। वह स्कूल जाना चाहती है लेकिन वह लोगों को अच्छा नहीं लगता है। वह इससे छुटकारा चाहती हैं।

उमेश- उमेश एक सामान्य व्यक्ति है। छन्नो का मुख देखकर निकला तो उसे सेनेटरी इस्पेक्टर की नौकरी मिलती है ऐसे उनके घरवाले स्वीकारते है ।

सुरेखा- सुरेखा यह उमेश की बहू है।

3.8.2 भाषा शैली

कहानीकार मैत्रयी पुष्पा की कहानियों का भावपक्ष जितना सशक्त है भाषापक्ष उतना ही आकर्षक। अपनी कहानियाँ जनसाधारण तक पहुँचाने के लक्ष्य में मैत्रेयी जी ने सरल, स्वाभाविक, व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है।

3.8.3 उद्देश्य

छुटकारा’ इस कहानी में छन्नो दलित नारी हैं, जो गलियों की सफाई करती हैं। उसकी बेटी शिक्षित होकर जान गई कि वे भी समाज में अन्य लोगों को त्तरह सम्मान से जी सकते हैं। छन्नो बाह्मणों

की गली में मकान बनाकर रहती है, और सफाई का काम बंद कर देती हैं। रज्जो लोगों के अत्याचारों का जवाब पुलिस बुलाकर देती है और अपनी माँ को नरकीय जीवन से छुटकारा दिलाती है। ‘छुटकारा इस कहानी द्वारा लेखिका ने ऐसी महिला का चित्रण किया है। जिसे निम्न जाति के होने के कारण सताया जाता है। आज के युग में मनुष्य को नहीं समझा जाता है। इस कहानी व्दारा हमे यह देखने को मिलता है कि इस समाज में भी ऐसे बहुत लोग है। जिनका जीवन बहुत मुश्किल से कट रहा है। और एक तरफ कई लोग अपनी जिंदगी आराम से जीते है। उनको अपने आसपास की कोई चिंता नहीं रहती। कई लोगों को एक वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से मिलती है। और कई मौज मस्ती करके अपना जीवन बिताते है। इस कहानी में किस तरह छन्नों पर बुरा व्यवहार किया गया है यह बताया गया है। वह इन बातों से छुटकारा चाहती है। और अपनी बेटी के साथ अपनी जिंदगी सुकून से जीना चाहती हैं।

3.9 उजदारी

भारतीय संविधान में स्त्री और पुरुष को विरासत में मिली जायदाद पर बराबर का हक दिया गया है। पिता के मरते ही भाई-बहन में बँटवारे की बात हो तो समान अधिकार मिलता है। इस कहानी में पति के मौत के पश्चात् शान्ति के जीवन की अशान्ति शुरू होती है। अगर पति के रहते जायदाद का बँटवारा हो जाता तो सभी को समान हिस्सा मिलता।

जिस स्त्री के पास आमदनी के साधन होते हैं या नौकरी करती हो वो समाज में पति के बगेर भी इज्जत के साथ जीती है। शान्ति के पास कुछ भी नहीं इसी कारण से घर का कामकाज छीनना

याने अपने अधिकार से बेदखल करते हैं। समाज में ज्यादातर सभी विधवाओं की स्थिति समान होती है। “इसमें नया क्या था? हर औरत की आदमी मरने के बाद यही दशा होती है।

यह कहानी एक समाजिक संघर्ष को दर्शाती है जिसमें विधवा महिला शांति के जीवन के साथ लड़ती है, जो उसके पति के निधन के पश्चात् आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई गई है। इस कथा में विधवा महिला को अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते दिखाया गया है, जबकि समाज में पुरुषों के द्वारा उसके खिलाफ अत्याचार किया जाता है। इस कथा में समाज में विधवाओं की स्थिति को दर्शाया गया है, जहां उन्हें उनके संघर्षों के बावजूद उनके अधिकार नहीं मिलते। शांति की स्थिति में विधवा महिला के जीवन की अधिकतर कठिनाइयों को उजागर किया गया है, जो उसे समाज में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उसके संघर्ष करने पर मजबूर करती है।

इस कथा के माध्यम से यह भी संदेश दिया गया है कि नारी को अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए समाज में अपनी आवाज़ उठाने की आवश्यकता है। शांति ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए न्यायालय तक जाकर अपनी बात रखी।

कथा की अंतिम पंक्तियों में सामाजिक अधिकार के प्राप्ति के माध्यम से शांति ने अपनी पहचान बनाई है, और उसने समाज में अपनी स्थिति को सुधारा है। इससे यह संदेश मिलता है कि नारी को अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

3.9.1 चरित्र चित्रण

शांति- शांति अपने पति के मर जाने के बाद अपने बेटे के साथ रहती हैं, लेकिन जेठ-जेठानी उसे बहुत तकलीफ़ पहुंचाती हैं। घर के सारे काम करना उसे ही पड़ता है और उन्हें कोई भी चैन से जीने नहीं देता। एक दिन उसे पता चलता हैं कि जेठ और जेठानी उसे और उसके बेटे को मारने की साजिश रच रहे हैं। उसे डर लगता हैं और वह अपने बेटे के साथ भागती हैं। आजादपुर प्रधान के यहां जाने के बाद, उन्हें आजादपुर में ही आश्रय मिलता है। वह और उसके बेटे अब चैन से जीने लगते हैं, लेकिन शांति को यह नहीं समझ में आता कि वह खुद प्रधान के हाथों लूट गई हैं या उसने प्रधान को लूटा है। इस कहानी में शांति का अपने बेटे के साथ गाँव वापस लौटना उसके संघर्ष को दर्शाता है।

जेठानी- जेठानी एक औरत के नाम पर धब्बा है। अपने पति के साथ मिलकर वह अपनी देवरानी पर तरह-तरह के जुल्म करती है। दिन भर शांति को कोसती रहती है और अकेले में मिली तो उसे दुःख पहुँचाने में खुशी मिलती है। उसकी नजर सिर्फ जायदाद पर है और वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का जरा भी नहीं सोचती। जेठानी के माध्यम से लेखिका ने उन स्त्रियों का असली रूप दिखाया है जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरी औरत पर अत्याचार करती हैं। इससे हमें समाज की जिम्मेदारी का भी अहम बोध होता है। संक्षेप में बताया गया है कि जब एक आदमी एक औरत पर जुल्म करता है, तो कहीं न कहीं एक औरत ही दूसरी औरत की दुश्मन है।

3.8.3 भाषा शैली

'उज़दारी' कहानी में विधवा शांति और बेटा सोमू गुलामों की तरह जीवन व्यतीत करते है। लेखिका ने प्राकृतिक प्रतीक द्वारा शांति के जीवन को इस तरह प्रस्तुत किया है, "रावेंरे तक ढ़ोर

फिर लौट आये। बंधने की आदत वाले दोर। छुट्टा घूमने में उन्हें खतरा लगता है। हम भी, मानस जनम धरकर भीं नहीं... इस घर में पेट भरने का आसरा जो है, मार खाकर भी पड़े रहेंगे। अकेला चितकबरा बगावत कर गया"।

3.8.4 उद्देश्य

उजदारी यह एक विधवा स्त्री की कहानी हैं। इस कहानी में लेखिका ने एक विधवा स्त्री पर हुए अनेक अन्ययाओ और अत्याचारों पर प्रकाश डाला हैं। वह एक विधवा हैं। उस जेठ- जेठानी उससे नौकरों की तरह काम करवाते हैं। वह अपने बेटे के साथ अपनी अलग दुनिया बसाना चाहती हैं, पर जेठ-जेठानी इनके अलावा कोई सहारा न होने के कारण उसे उन्हीं के फेके हुए टुकड़ों पर जिना पड़ता हैं। पर आखिर में जब उसे पता चलता हैं कि उसके जेठ-जेठानी उन दोनों को जान से मारना चाहते हैं तो वह अपने बेटे के साथ वहाँ से भाग जाती हैं और अंत मैं शांति प्रधान से अपना संबंध बनाती हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने विधवा की समस्या पर प्रकाश डाला हैं। एक विधावा को हमारे समाज में उपेक्षित व्यवहार मिलता हैं। घर के लोगों से वह दुबकर ही रहती है। कभी-कभी घरवाले उस पर अन्याय भी करते हैं पर वह चुपचाप सह लेती हैं क्योंकि बेचारी लाचार औरत घर को छोड़कर जाये तो भी कहा जाये? क्या यह समाज? एक अकेली औरत को चैन से जीने देता है? एक विधवा औरत पर पुरुष, बुरी नजर ही रखते हैं इसके लिए हम सिर्फ विधवा स्त्री के चरित्र पर दाग नहीं लगा सकते क्योंकि इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था भी उतनी ही जिम्मेदार है जिसे बदलने की कोशिश करनी चाहिए।

“चिहनार” कहानीसंग्रह आर्य प्रकाशन मंडल दिल्ली से १९९८ में प्रकाशित हुआ है। इसमें निम्नलिखित कहानियाँ हैं “अपना-अपना आकाश”, “बेटी”, “सहचर”, “बहेलिए”, “मन नाँहि दस-बीस”, “हवा बदल चुकी है”, “आक्षेप”, “कृतज्ञ”, “भँवर”,”सफर के बीच”, “केतकी”, “चिहनार”, “मैं सोचती हूँ कि इन सभी कहानियों में स्त्री-पुरुष के विभिन्न रूपों को, अलग- अलग स्थितियों में मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कथाओं में चित्रित किया है। इस कहानी में कुछ कहानियां ऐसी है की स्त्री पात्र के माध्यम से स्त्री समस्या को दिखाने का प्रयास किया है। मैंने कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन किया हैं तत्वों के आधार पर।

3.9 अपना अपना आकाश

कहानी का नायक माता लखिया है, जो अपने तीनों बेटों के साथ गाँव में रहती है। उनका पति पहले ही नहीं है। उनके बेटे उनके साथ उनके जीवन के हर कदम पर होते हैं, लेकिन जब वे बड़े होते हैं, तो उन्हें अपने बिजनेस और परिवार को ध्यान में रखने की चिंता होती है। उनके तीनों बेटे शहर में नौकरी करने लगते हैं, लेकिन वे अपनी माँ के साथ रहने के लिए वापस नहीं आते। इसके बावजूद, माँ लखिया हमेशा अपने बच्चों के लिए प्रेम से और मेहनत से खाना पकाती है, लेकिन उनके बच्चे उनकी मेहनत को समझते ही नहीं।

जब उनके बेटे अपने प्रिय संगति के साथ शादी करने का निर्णय लेते हैं, तो माँ लखिया को इसकी खबर सिर्फ यही मिलती है कि शादी 21 तारीख को है। वह त्रिकोणीय भविष्य को लेकर आशंकित होती हैं, लेकिन उनके बेटे के प्यार में भरोसा करती हैं। शादी के दिन बेटे उनके साथ नहीं होते,

बल्कि वे अपनी पत्नियों के साथ रहते हैं। माँ लखिया को यह देखकर बड़ा दु:ख होता है, लेकिन वह अपने आंसुओं को बहाने से रोकती हैं और साहस से सम्भालती हैं।

इसके बाद, उनके बेटे एक के बाद एक उनके साथ रहने से मना कर देते हैं। उनकी मां उनकी चिंता को समझती हैं, लेकिन उनके बच्चों का ध्यान उनके साथी के प्रति होता है। यह कहानी एक माँ की संघर्षपूर्ण यात्रा को दिखाती है, जो अपने बच्चों के लिए हमेशा खड़ी होती है, लेकिन उनके बच्चे उनकी महत्त्वपूर्णता को समझते ही नहीं।

कहानी में मां की संघर्षपूर्ण यात्रा, उनकी साहसिकता, और उनकी पीड़ा को दिखाती है, जब उनके बेटे उनके साथ उनके बदले में नहीं खड़े होते। यह कहानी एक माँ के प्रेम और उसकी पीड़ा को दर्शाती है, जो समाज में अपने बच्चों के लिए दी जाने वाली समझौतों का सामना कर रही है। इसके साथ ही, यह एक संघर्षपूर्ण कहानी है, जो महिलाओं के सामाजिक स्थिति और उनके संघर्ष को उजागर करती है। यह कहानी उस संघर्ष को दर्शाती है, जिसमें महिलाएं अपने बच्चों की खातिर किसी भी हालत में खड़ी होती हैं, लेकिन उन्हें उनके साथियों और समाज की सीमाओं का सामना करना पड़ता है।

3.9.1 <u>चरित्र चित्रण</u>

अम्मा- गाँव की रहनेवाली बुढ़ी औरत अकेलापन का अनुभव करती हैं, क्योंकि उसके तीनों बेटों ने उसे छोड़ दिया है। जब उसे अनाथाश्रम भेजने की बात पता चलती है, तो वह चुपचाप अपने गाँव वापस चली जाती है। इससे उसका स्वाभिमान झलकता है। माँ एक विवेकशील संयमी, स्वाभिमानी, अकेलेपण की शिकार, गाँव की रहनेवाली युवती के रूप में उभरती हैं। यह कहानी

पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के कारण बढ़ते-बढ़ते होने वाली बुढ़ापे की स्थिति का दुखद चित्रण करती है। माँ और बेटी के रिश्ते को संसार में एक अहम स्थान प्राप्त हुआ है, और इसे मैत्रेयी पुष्पा ने बखूबी रेखांकित किया है।

बिदुं- अम्मा कि जेठानी जिन्होंने अम्मा के बेटों बिना किसी स्वार्थ के अपने बेटो कि तरह पाला था। जबसे वह ब्याह कर घर आयी थी घर का सारा काम वही करती थी।

लखिया- लखिया जीजी का जेठ और बिंदु का पती था। वह खेतों में मेहनत करके सबका पेट पालता था। अपने भाई के मृत्यु के अपनी जीजी को उसने मां की तरह पाला था और बच्चों को रात दिन महनत करके उनका सारा खर्चा वही देखता था।

3.9.2 भाषा शैली

मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में चित्र उपस्थित करने की सबल शक्ति है। उन्होने पात्रों के मानसिक उथलपथल को शब्दों को सहायता से चित्ररूप देकर सजीव बनाया है। इस कहानी में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है

3.9.3 उद्देश्य

इस कहानी में हम देख सकते हैं कि किस तरह बूढी औरत पीड़ित हैं। उनके खुद के बच्चों ने उन्हें एक नौकरों की जिंदगी जीने से मजबूर कर दिया। वह गांव से शहर आकर अकेलापन महसूस कर रही थी इस कहानी में हम देख सकते हैं कि किस तरह अकेलापन एक इंसान को अंदर ही अंदर

उठकर मार देता है। अकेलापन एक व्यक्ति के अकेलेपन, अलगाव, और अकेलापन की भावना को दर्शाता है। यही हमें इस कहानी के माध्यम से देखने मिलती है।

3.10 बहेलिए

हिंदी साहित्य की संदर्भ और सक्षम कथाकार मैत्रीय पुष्पा की कहानी डहेलिया इस कहानी में दोनों का चित्रण दिखाई देता है जब चारों ओर घर समाधान हो रहा था हत्या का षड्यंत्र आत्महत्या का चित्रण कहानी के पात्र गिरजा उसे समय गांव के गांव में जन्मे सभी मर्दों के बीच घूंघट डालने मर्दों के साथ वार्तालाप नहीं करती थी तभी एक के बाद एक घटनाओं को देख उनके आत्मा झज्जों से गई अपने प्रति हो रहे अन्य को तो वह खेल रही थी क्योंकि उसे समय वह 14 बरस की थी कई आंसू में वह कहां दुख पहचानती है विरोध भावना उठती थी अपने तक के जीवन को अपने चाचा पर जीत छाया था उनके पिता को निधन हो गया था वह दो बहन गिरिजा और मां चाचा चाचा थे घर का सारा काम गिरजा करती थी सभी काम मन करती और दोनों बहने खेतों में दोनों काम करती थी चाचा की बेटी पढ़ाई करती थी। रूप जब कपड़े सिटी तो वह उसे पर बस की जाती थी चाचा के चार बच्चे रूप और उसके भाई स्कूल जाते जब गिर जाने किताब देखा उसे पर टोटली सभी से खींचते तो गिरजा से चुप कर अंशु किताब को लिया तो चाचा ने उसे भूत पिता मां चुपचाप कुछ हुए चूने के पास बैठकर देखती रही एक दिन चाचा ने उसकी बड़ी बहन का विवाह कर दिया मां को जमाई बिल्कुल पसंद नहीं था सारा दिन नहीं पाई गिरजा जब झूले चौक के बैठी हूं तब आज में उसे झपट लिया मन बहुत रोई मां के आंसू दुखी नहीं रहे थे एक दिन जीजा आए बहन के बेटे को मां के हाथ देख दिखाई चाचा ने मां से जायदाद की मांग की मां

के मन कर देने पर चाचा ने मां को कच्चे में आने के लिए चाचा मां को बहुत तंग करता था मन को खुश मन खुश थी सूरज को मर जाने की बटवा देती प्रेम से रहकर चौक रखने की कोशिश चाचा चाचा करते रहे जब गिरजा की विवाह करने की चाची ने सोचा तब मां ने साथ इनकार कर दिया आपकी उम्र के आदमी से चाचा चाचा का विवाह करना चाहते थे सभी ने मां को समझाया करण की कोर्ट है कहकर मन से कहने लगे अगर वह उससे विवाह कर रहा है तो यहां तुम्हारे सौभाग्य की बात है कहकर मां कोबहलाते हैं और कहते हैं अकेली विधवा क्या विवाह करेंगी अपने बेटी की विवाह में उम्र नहीं देखी जाती चाचा ने मां की जमीन अपने बेटे के नाम कार्रवाई की च अपने पिता की उम्र के आदमी से विवाह कर लिया गिरजा का पति गिरजा से पुत्र की आस में लगा था एक दिन को जोर से बारिश के कारण पेड़ ऊपर गीर जाने से गिरिजा के पति की मृत्यु हो गई। मां बेटी दोनों एक दूसरे के दुख बांट रहे थे गिरजा मां को चाचा के घर वापस नहीं भेजती है वह मां और सूरज एक दूसरे को सहारा देने लगे फिर गिरिजा ने अपनी किताब जो अपने पीछे छोड़ दिया था वह वापस आंकड़ा और अन्य के विरोध आवाज उठाती। इस कहानी में हम देख सकते हैं कि किस तरह एक छोटी बच्ची का विवाह अपने से बड़े उम्र के इन्सान से करते हैं।

चरित्र चित्रण

गिरजा -"गिरजा" अत्याचार के विरोध में उठने वाली, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाली, और साहसी नारी हैं। जब गाँव के कुटील राजनीतिज्ञों ने मास्टर जी को जहर देकर मार दिया, तो गिरजा ने न आव देखा न ताव। वह दरोगा को पकड़ लिया और उसे कहा, "नहीं छोड़ूँगी दरोगाजी, न्याय कीजिए। यह क्या किया आपने? मेरा बेटा भी दरोगा है।" इस प्रकार गिरजा अत्याचार के

खिलाफ आवाज उठाती हैं। भोली के मृत शरीर को देखकर उसकी भावुकता का प्रकट परिचय होता है। एक स्वाभिमानी, सुसंस्कृत, अत्याचार और अन्याय के विरोध में साहसी गिरजा हैं।

मां- एक ऐसी औरत का चित्रण जो समाज से बंदी हुई है जिसे समाज का डर है।अपनी खुद की बेटी का जब विवाह अपने से बड़े आदमी के साथ हो सहा जा तो वह चुप बैठकर देखती रही आंसु उसके गीरते लेकिन आंसु चुपचाप सहती थी। चाचा चाची मां को अपने एहसास तले दबाकर रखना चाहते हैं।

चाचा-चाची- यह दोनों स्वार्थी रूप में हमें दिखाई देते है। मां को चीपडी चुपड़ी बातों में फंसाकर पुरा काम और जायदाद अपने नाम करवाना चाहते हैं। अपने बच्चों को तो वे अच्छी शिक्षा देते हैं लेकिन गिरजा और उसकी बहनों को घर का और खेतों में काम करने के लिए कहते हैं।

रुपा- चाचा चाची की बेटी जो अच्छे अच्छे डिजाइन के स्वेटर बुनती थी।वह स्कूल जाती थी।

3.10.1 भाषा शैली

इस कहानी में हमें बुंदेलखंडी भाषा दिखाई देता है।मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का भावपक्ष जितना सशक्त है, भाषापक्ष उतना ही आकर्षक। उनकी कहानियों की भाषा में चित्रात्मकता, प्रतिकात्मकता, व्यंग्यात्मकता, काव्यात्मकता आदि गुण स्पष्ट दिखाई देते है। शिल्प पक्ष की दृष्टि से मैत्रयीजी की कहानियाँ सफलता की उच्च कोटि पर है। साधारण लोगों की भाषा में लिखित

उनकी कहानियों में भारत के साधारण लोगों की कहानी है। संक्षेप में मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का भाषा एवं शिल्प आधिक सफल बना हैं।

3.10.2 उद्देश्य

इस कहानी से हमें यह उद्देश्य मीलता है की हमें अपने ऊपर अत्याचार नहीं सहना चाहिए अन्य के खिलाफ विरोध करना चाहिए हमें पढ़ाई करनी चाहिए। इस कहानी में हमें इसका भी चित्रण दिखाई देता है कि किस तरह अपने ही रिश्तो में जायदाद के कारण लड़ाइयां होती है। यहां पर हमें एक ऐसी औरत का चित्रण दिखाई देता है जहां एक मां होकर भी वह अपनी बेटी के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती उसका विवाह एक अपने से बड़े उम्र के आदमी से कर दिया जाता है वह कुछ नहीं बोलते चुपचाप अपनी बेटी की यह तबाही दिखती रहती है और रोटी रहती है रोने से कुछ नहीं होता हमें इसके खिलाफ आवाज उठाना चाहिए हमें समाज के इन कठोर बंधनों से बंद कर नहीं रहना चाहिए।

3.11 चिह्नार

यह कहानी एक माँ और उसकी बेटी के बीच के दूरी को बयान करती है, जो असली मां-बेटी के रिश्ते को छिपा देती है। माँ सरजू अपनी बेटी कनक से दूर रहती है, लेकिन उसके अन्य बच्चों के साथ रहती है। कनक को यह पता नहीं होता कि उसकी बुआ सरजू ही उसकी असली मां है। वह अपने मामा-मामी को ही अपने माता-पिता मानती है। कथा में दिखाया गया है कि किस प्रकार रिश्तों को छुपाने से भी वे असली नाते किसी न किसी रूप में प्रकट हो ही जाते हैं। सरजू और कनक के बीच की दूरी और उनके असली रिश्ते को सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, माँ और बेटी के बीच के भावनात्मक अनुबंध को भी दिखाया गया है, जो दर्शकों को रोमांचित करता है।

इस कहानी में एक गहरा संवेदनशीलता भी छिपी है, जो बालिका कनक के भावनात्मक अनुभवों को उजागर करती है। कनक को अपनी असली मां से मिलने की आवश्यकता है, लेकिन उसे यह मौका नहीं मिलता। उसकी असली मां सरजू की भावनाओं को भी दर्शाया गया है, जो उसकी बेटी से दूरी को महसूस करती हैं, पर उन्हें यह अहसास नहीं होता कि उसका यह फैसला उनकी बेटी के लिए कितना दुखद है। इस कहानी में रिश्तों की महत्वपूर्णता, असली प्यार और बंधनों की अहमियत को समझाया गया है।

कनक के जीवन का अध्ययन करके हमें यह सिख मिलती है कि रिश्तों को दिल से जोड़ने और सम्मान करने का महत्व है। इस कहानी में दिखाया गया है कि अपने परिवार और अपने संबंधों को महत्व न देने से कितना बड़ा दुख होता है। असली प्यार और सम्मान के बिना, किसी रिश्ते का महत्व नहीं बना रहता। सरजू और कनक के बीच की दूरी का दुख इस कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि हमें अपने परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों को मजबूत करने की जरूरत है, ताकि हम सभी एक दूसरे के साथ संबंधों को समझ सकें और उन्हें सही ढंग से समालोचना कर सकें।

3.11.1 चरित्र चित्रण

सरजू – "चिन्हार" कहानी में सरजू एक ममतामयी, निस्वार्थी, भयग्रस्त, विवश, और मेहनती महिला है। वह मातृत्व का बलिदान दिया हुआ दिखाई देती है, जैसा कि, "वह बस ऐसे ही उनकी आज्ञा पर चकरधिन्नी हुई दिन बिता रही थी। विद्यादेवी और केदारनाथ की पुत्री कनक अब बडी होने लगी। सरजू उनकी कौन थी? कोई नहीं न कोई नाता रहा, न सम्बन्ध। सारे रिश्ते ने पथ्य में

पटक दिए थे विद्यादेवी ने महज उनकी अनुचरी सरजू जीवित रह गयी बस।" अतः वह अपने सारे रिश्ते-नाते भूलकर अपनी बेटी के लिए चुप रहती रही और छुपकर मातृत्व देनेवाली प्रेमल, विवश माँ के रूप में योगदान निभाती है।

कनक- "चिन्हार" कहानी में सरजू की बेटी 'कनक' एक जिद्दी, हँसमुख, प्रेमल, संवेदनशील लड़की है। वह अपनी असली माँ की बजाय बुआ और मामा को माता-पिता के रूप में मानती है। कनक को इस रहस्य की जानकारी नहीं होती कि उसकी असली माँ सरजू है। फिर भी, शादी के वक्त उसने सरजू को मिलने के लिए घर भागते हुए कहा, "माँ, माँ.. आँ ई. आँ।" और उससे गले लग गई। यहाँ कनक के माध्यम से खूबसूरती से दिखाया गया है कि खून के रिश्तों को खून ही पहचानता है। संक्षेप में, यह कहानी हमें यह बताती है कि असली रिश्तों का महत्व कितना होता है।

जेठानी- इस कहानी की पिता ने कभी मन नहीं बन सकी इसलिए उसने जीजी से उनकी बेटी को मांग लेती है और उन्हें उनके आसपास आने तक देती नहीं है सरजू भोज के तले अपनी बेटी जेठानी को दे देती है इसका प्चतावा से आज तक है जेठानी एक स्वार्थी स्त्री के रूप में हमें इस कहानी में दिखाई देती है कि किस तरह वह एक बेटी को अपने मन से दूर रखती है उसके आसपास तक घूमने नहीं देती है।

3.11.2 भाषा शैली

चिह्नार कहानी सरल भाषा में लिखी गई है।

3.11.3 उद्देश्य

हर किसी का आने का कोई ना कोई उद्देश्य होता है इस कहानी का भी एक उद्देश्य के किस तरह एक ना अपनी बेटी से पूछ के तले दूर रहती है अपने पीड़ा किसी को नहीं सुना सकती किस तरह उसे अपनी ही बेटी से दूर रखा जाता है उसे दूध का तक दूध पिलाने का तक अवसर नहीं देते। एक मां अपनी बेटी को दूर से ही देखकर खुश होती है लेकिन वह उसके खिलाफ कुछ विद्रोह नहीं करने करती है हमें इसके खिलाफ विद्रोह करना चाहिए अपने ऊपर अन्याय नहीं सहना चाहिए।

3.12 मन नाँहि दस-बीस

"मन नाहीं दस-बीस" कहानी में 'चंदना' एक साहसी, सुंदर, और संवेदनशील नारी है। वह अपने बचपन के सच्चे मित्र स्वराज को प्यार में परिवर्तित होने के बाद भी नहीं भूलती है। स्वराज जेल में गांधीजी की किताबें पढ़ता है, लेकिन उसके आदर्शों का पालन नहीं करता, जिससे उसे दुःख होता है। चंदना के प्यार में स्वराज के इस बदलाव को देखकर उसे दुःख होता है। वह उससे पूछती है, "तुम इस भयंकर आग में कहाँ तक जलेंगे?" और स्वराज से कहती है, "गांधीजी की किताबें पढ़कर भी तुम उस पथ पर नहीं चल सके, मैं ही अकेली चलती रह गई।" चंदना अपने प्यार के लिए समाज की जाति-पाति से लड़ती है। चंदना को देखकर समाज उसे दोषारोपण करता है, लेकिन वह अपने प्रिय से प्यार करने में समर्थ होती है।

चंदना एक केंद्र से जुड़े काम करती है, और उसके आचार-विचार उसे प्रभावित करते हैं। वह अपने प्यार स्वराज को जमानत करवाने के लिए कल्याणी देवी के पास जाती है। कल्याणी देवी

उसे मिलने के लिए चंदना को वापस भेजती है, लेकिन चंदना ने उसे यकीन दिलाया कि वह केवल जमानत करवाने आई है। कल्याणी देवी को इस पर विश्वास नहीं होता, लेकिन जब चंदना उसकी हाथ में चिट्ठी लिखती है, तो उसे चंदना की मजबूती का अहसास होता है।

इस कहानी में समाज की जाति-पाति और प्यार के बीच की जंग को दिखाया गया है। चंदना का चरित्र हमें यह सिखाता है कि हमें अपने प्रिय से प्यार करने में संदेह नहीं करना चाहिए, और समाज के दबावों का सामना करना चाहिए। यह कहानी हमें एक महिला की निडरता और साहस को समझाती है, जो अपने प्यार के लिए समाज के नियमों का विरोध करती है।

3.12.1 <u>चरित्र चित्रण</u>

चंन्दना- ''मन नाँहि दस-बीस'' कहानी में, 'चन्दना' एक सुंदर, स्वभाव से शांत, संवेदनशील नारी हैं। स्वराज से बचपन की घनिष्ठ मैत्री का रूपांतर प्यार में होने के बाद भी उसने स्वराज को गांधी जी की लिखी किताबें पढ़कर उस पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। चन्दना ने समाज के जाति-पाति के साथ प्यार के लिए लड़ने वाली निडर नारी का चित्रण किया है।

स्वराज- ''स्वराज'' विवेकबुद्धि, पढ़ाई में मेहनती, स्वभाव से शांत, और भावुक हैं। चन्दना से प्यार करते हुए भी वह जातिवाद और गरीबी के कारण विवश दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा, ''मैं क्यों नहीं लड़ सका समाज से? तुम्हारे साथ पग मिलाकर क्यों नहीं चल सका, चन्दना? दलित ही रह गया।" चाहकर भी प्यार के प्रति कुछ न करनेवाले स्वराज का व्यक्तित्व दिखाई देता है।

काकी- चन्दना जब छोटी थी तब उसके देखभाल के लिए काकी को रखा जाता है। जब भी कोई चंदन को छूता तो काकी उसे नहलाती।

3.12.2 भाषा शैली

इस कहानी में हमें सरल भाषा दिखाई देती है जो पाठकों को आसानी से समझ में आती है।

3.12.3 उद्देश्य

हर किसी कहानी के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य होता है कुछ इसी तरह मन नहीं दस बीस कहानी का भी उद्देश्य है कि किस तरह एक उच्च जाति और निम्न जाति के बीच का अंतर हमें दिखाई देता है एक निम्न जाति का लड़का एक उच्च जाति के लड़की से प्यार नहीं कर सकता उसे प्यार से देख भी नहीं सकता उसे छू भी नहीं सकता इसका चित्रण हमें यहां एक पुरुष के माध्यम से दिखाई देता है लड़की को भी किसी निम्न जाति के लड़के से प्यार करने का अवसर समझ नहीं देता अगर वह किसी निम्न जाति के लड़के से प्यार करती है तो समाज उसे ताने-बाणों से ही पूरी जिंदगी बीतने से मजबूर कर देता है। इस कहानी में हमें दिखाई देता है कि किस तरह स्वराज अंत तक भी अपने प्यार का इजहार चन्दना से नहीं कर पता है।

"ललमनियाँ" कहानीसंग्रह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से १९९६ में प्रकाशित हुआ हैं। इसमें निम्नलिखित कहानियाँ हैं "फैसला", "सिस्टर", "सैंघ", "अब फूल नहीं खिलते", "रिजक", "बोझ", "पगला गई भागवती", "छाँह", "तुम किसकी हो बिन्नी", "ललमनियाँ" इन कहानियों में स्त्री समस्याओं एवं बालमन की प्रतिक्रिया अकेलापन, बेटी की उपेक्षा, जिम्मेदारियों के प्रति

आदर्श, अधिकारों के लिए संघर्षरत नारी, स्वार्थी नारी, विद्रोह का नया रूम, आर्थिक समस्या आदि विविध आयाम और परिपक्व दृष्टि का परिचय कहानियों में मिलता है। मेने इस कहानी संग्रह को पढ़ा इस कहानी संग्रह को पढ़कर ऐसा लगा कितने यथार्थवादी से लेखिका ने इस कहानी के स्त्री समस्या को उजागर किया है। मेने कुछ कहानियां जहां मुझे स्त्री को लेकर उनके समस्या का चित्रण मिलता है उन उन कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन किया हैं उनके तत्वों के आधार पर।

3.13 सेध

इस कहानी में त्यागवृत्ति, राजनीतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश, तथाकथित समाज सेवकों की दुरावस्था की पोल खोलना, अष्ट और नौकरशाही, शिक्षा-व्यवस्था आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है। 'सेध' इस कहानी में त्यागवृत्ति, राजनीतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश, तथाकथित समाज सेवकों की दुरावस्था की पोल खोलना, अष्ट और नौकरशाही, शिक्षा-व्यवस्था आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है। कहानी में हमें काफी सच्चाई दिखाई देती है कलावती ने गंगा सिंह को मजदूरों के बीच देखकर हैरान हो गई वह गंगा सिया से पूछता है आप यहां क्यों तो गंगा से कहते हैं कि वह मेहनत मजदूरों के साथ काम करने आए हैं शहरी जीवन का चित्रण भी हमें दिखाई देता है गांव के लोग रिश्ते नाते से बंधे रहते हैं उसका चित्रण हमें इस कहानी के माध्यम से दिखाई देता है। सेंध' कहानी में 'बैहरी' एक राजनीतिक मायाजाल में फैसी नारी के रूप में सामने आती है। वह कहती है कि, "विधायक जी का कहना है कि, ऐसे नाज़ुक मौकों पर रेत गर्द में ही मिलकर रहो – वहीं, गाँव में। समय पड़े तो बैलगाडी में चलो, पैदल यात्रा करो। प्रभाव इन्हीं बातों से बनता

है, छवि निखरती है।“ इस प्रकार राजनैतिक मायाजाल में फंसी बौहरी भ्रष्टाचार करती है और अत्याचार को चुपचाप देखती है। इतनी वह स्वार्थी है कि, अच्छी जमीन पाने के लिए सी.ओ.जी. को पैसा देकर गंगासिंह की जमीन हड़प लेती है। अतः बौहरी एक स्वार्थी, भ्रष्टाचारी अन्याय को साथ देनेवाली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।नारी का मुख्य रूप सेवाभावी है। माँ हो या बेटी कौन से भी रूप में वह अत्यंत निष्ठापूर्वक सेवा करती दिखाई देती है। इस महत्वपूर्ण रूप को मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया हैं।मैत्रेयी पुष्पा ने ‘सेंध’ कहानी में बैहरी को एक स्वार्थी और भ्रष्ट नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने अपने स्वार्थ के लिए अन्याय को सामने देखते हुए चुपचाप रहने का चुनाव किया। उसका प्रमुख लक्ष्य अपने लाभ को बढ़ाना था, जिसके लिए वह भ्रष्टाचार को सहायक बनती गई। साथ ही, मैत्रेयी पुष्पा ने नारी का मुख्य रूप को सेवाभावी और निष्ठावान रूप में भी दर्शाया है। वे माँ और बेटी के रूप में सेवा करने की उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यह रूप उनकी स्थायित्व और प्रेम की प्रतीक है, जो समाज में महत्वपूर्ण होता है। गंगासिंह’ एक बुढ़ा, चकबन्दी में फंसा हुआ इनसान है। गंगासिंह ने बौहरी से बात करते वक्त राजनीति का पर्दा फाश किया है, जैसा कि “अपनी अकल मत लगगया करो कला। हम जो कहते है, करती जाओ अब देखो तुम्हारे पास रहने के लिए गाँव में घर तक नहीं है – भाषण में जोर से कह सकती हो यह बात ठडा पड़ा मलबा है तुम्हारी जगह कमरा तो जनहित के लिए हैं।“” इस प्रकार बातों ही बातों में वह बैहरी ने किए हुए राजनीतिक के दाँव-पेच बताता है। अपने आँखों के सामने जमीन चकबन्दी में जाने पर और राजनीति के धूर्त, पांगुल लोगों के बिच फसने पर भी गंगासिंह सबकुछ चुपचाप सह लेते हैं। अतः वह संयमी, विवश, मजदूर के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

नारी का शोषण पुरूष किस प्रकार करता है और उसकी दुर्बलता का फायदा कैसे उठाया जाए यही आदमी चाहता है इस बात को मैत्रेयी पुष्पा ने निम्नलिखित कहानी में उठाया है। मैत्रेयी पुष्पा द्वारा उत्थान की गई कहानी में, पुरुष नारी का शोषण विभिन्न तरीकों से करता है, जैसे कि शारीरिक या मानसिक अत्याचार। उसकी दुर्बलता का फायदा उठाने के लिए, वह अपनी आधारशिला बनाता है और नारी को अपने नियंत्रण में रखता है। इसे सामाजिक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है, जिससे उसे स्थिति और सत्ता मिलती है।

3.13.1 चरित्र चित्रण

बैहरी- 'सेंध' कहानी में, 'बैहरी' एक राजनीतिक मायाजाल में फंसी नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। वह भ्रष्टाचार करती है और अत्याचार को चुपचाप देखती है, तथा अपने लाभ के लिए नाजुक मौकों का उपयोग करती है। उसका व्यवहार उसकी राजनीतिक अंधविश्वास और अधिकार की भूख को दर्शाता है।

गगासीह- 'गंगासिंह' एक बुढ़ा, चकबन्दी में फंसा हुआ इंसान है। उन्होंने बौहरी से बात करते वक्त राजनीति का पर्दा उठा दिया है, जैसा कि "अपनी अकल मत लगगया करो कला। हम जो कहते है, करती जाओ अब देखो तुम्हारे पास रहने के लिए गाँव में घर तक नहीं है – भाषण में जोर से कह सकती हो यह बात ठड़ा पड़ा मलबा है तुम्हारी जगह कमरा तो जनहित के लिए हैं।" इस प्रकार, वह बातों के माध्यम से राजनीतिक के दाँव-पेच को बताता है।

3.13.2 भाषा शैली

मैत्रयी पुष्पा ने अपने ब्रज तथा बुंदेलखंड के अंचल-विशेष को अपनी कहानियों में प्रकट किया है, जिसके लिए आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है। उन्होने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को बोली के माध्यम से प्रकट किया है।इसकहानी की भाषा विषयानुकूल तथा पात्रनुकूल दिखाई देती है।

3.13.4 <u>उद्देश्य</u>

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा उत्थान की गई कहानी में, पुरुष नारी का शोषण विभिन्न तरीकों से करता है, जैसे कि शारीरिक या मानसिक अत्याचार। उसकी दुर्बलता का फायदा उठाने के लिए, वह अपनी आधारशिला बनाता है और नारी को अपने नियंत्रण में रखता है। इसे सामाजिक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है, जिससे उसे स्थिति और सत्ता मिलती है।

3.14 <u>ललमनिया</u>

'ललमनिया' मैत्रीय पुष्पा की कहानी में स्थानीय रंग और महक के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक समस्याओं का विवेचन किया गया है। इस कहानी में भारतीय लोककला की कलाकारिता का महत्व बताया गया है, जो आधुनिक युग में अपनी महत्वपूर्णता बनाए रखती है। इससे लोगों को अपनी संस्कृति और विरासत के प्रति गहरी उत्सुकता और सम्मान का अहसास होता है। ललमनिया मैत्रीय पुष्पा की इस कहानी में स्थानीय रंग एवं महक के साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं का अंकन हुआ है। साथ में भारतीय लोककला को कलाकारिता का आधुनिक युग में उपेक्षित जीवन उजागर होता है। मैत्रेय जी की लिखी कहानी उनकी कहानी ग्रामीण जीवन पर लिखते हैं मोरों की बेटी भागते-भक्ति आती है वह एक चंचल लड़की थी मोरो मक्का बैठने लगी के कंधे पर सर रखकर रोती है जीजी रहती है

मैं काम धंधा छोड़कर तुम्हें लेने आई हूं नरमालिया देखने के लिए जीजी रहती है गांव में पहले जैसी बात नहीं है जीजी रहती है जब को अपने मन में मोर रहती है जिस शहर से नचनिया आने लगे मोर हंसने लगी और बोलने लगी इस बार फसल अच्छा हुआ ऐसा हुआ कि अगले बारिश तक का सकेंगे ललमनिया का नाम का मन हुआ है मोहरों ने अपनी लहंगे को अच्छा धोया एक दिन पीडकुल अपने बापको याद करने लगी मोरो को बिल्कुल जब आप के बारे में पूछता है तब उसे लगा शायद लोगों ने उसे बोला की अपहरण आप की सूरत नहीं देख पाई। मन कर बहाने थे उनका बाप पटक कर चला गया उनको उन्होंने अपना बचपन गरीबी में बिठाया अम्मा बहुत रोती थी मोरों की मां की आंखों से आंसू बहता ही रहता उनकी मां गरीबी पर चमक लाने लगी मोर जब नाचती है तो जोगेश को उसे पर प्यार आ जाता है वह ललमनिया दिखाकर अपना एक स्थान बनाती है इस कहानी में मैत्रेय पुष्पा जी ने ललमनिया करती स्त्री का चित्र दिखाया गया है। इस कहानी में ललमनिया का अर्थ होता है एक नचनिया होता है किस तरह एक नचनिया नाच जिससे कल को समझ में एक बुरी औरत का चित्रण करते हैं जब मोरों की मां नाचती तो लोग उनके बारे में उल्टी सीधी बात करते रहते मां की तरह बेटी भी एक दिन नचनिया बनेगी।ललमनिया एक भारतीय कहानी है जो वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करती है। इस कहानी में लोग एक नाचनिया को बुरी औरत के रूप में देखते हैं, लेकिन मोहरों की मां के नाचने से उनकी मानसिकता में बदलाव आता है। यह कहानी मानवीयता और समाजिक बदलाव के विषय में है।ललमनियाँ' कहानी में 'मौहरो' एक अनपढ़, सुंदर, परिश्रमी नारी है। वह स्वभाव से शांत है। जोगेश नौकरी लगने पर वापस लाने का वादा देकर उसे वापस गाँव छोडकर दूसरी शादी के लिए उसी गाँव में दाखिल होता है। उस समय मौहरी उसकी शादी में ललमनियाँ का नाच दिखाती है और अपने प्यार को

वह सिने में दफन करती है। उस समय उसका संयम श्रेष्ठ स्तर का दिखायी देत्ता है। मौहरी एक समाज से उपेक्षित, विवश नारी के रूप में अंकित होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी द्वारा अपनी बेटी को पालने और पति प्यार को न भूली हुई पेट भरने के खातिर नाच करनेवाली विवश मौहरी का रूप दिखाया है। संक्षेप में बताव।

3.14.1 चरित्र चित्रण

मोहरों- मोहरों एक अनपढ़, सुंदर, परिश्रमी नारी हैं। वह स्वभाव से शांत है। जब जोगेश नौकरी लगने पर वापस लाने का वादा देता है और फिर उसी गाँव में दूसरी शादी के लिए दाखिल होता है, तो मोहरों का संयम श्रेष्ठ स्तर का होता है। लेकिन उसके विरुद्ध आनेवाली ललमनियाँ का नाच उसके प्यार को सीने में दफन कर देता है। मोहरों एक समाज से उपेक्षित, विवश नारी के रूप में अंकित होती हैं। संक्षेप में, मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी के माध्यम से अपनी बेटी को पालने और पति की प्यार को न भूलने वाली, पेट भरने के खातिर नाचने वाली, विवश मोहरों का चित्रण किया है।

पीडकुल- पीडकुल मोहरों की बेटी है। वह एक चंचल लड़की थी। वह हर बात पर अपनी मां को सवाल पूछते ही रहती थी। बात ना होने के कारण लोग उसे अभागन कहते थे।

जोगेश- ललमनियाँ’ कहानी में जोगेश मौहरी का पति है। अमीर माँ-बाप का अकेला पुत्र है। मौहरी से शादी करने के बावजूद भी वह माँ-बाप के कहने पर दूसरी शादी करता है। वह स्वार्थी दिखाई देता है।

साभो- साबूजी जी बिल्कुल की मौसी थी। वह स्वभाव से अच्छी थी वह बिल्कुल को और उसकी बहन मोर को बहुत अच्छा करती थी।

3.14.2 भाषा शैली

मैत्रेयी पुष्पा ग्रामीण परिवेश में पली-बड़ी लेखिका है। इस कहानी में हमें सरल भाषा दिखाई देती है।

3.14.3 उद्देश्य

हर किसी कहानी का कोई ना कोई उद्देश्य होता ही है 'ललमनिया' कहानी का उद्देश्य हम यह कह सकते हैं कि किस तरह समझ में एक नचनिया को बुरी तरह से देखा जाता है उसके कल को एक बड़ा शब्द कहा जाता है कि वह सिर्फ गंदगी है।'ललमनिया' कहानी का उद्देश्य है समाज में नाचनियों और उनके काम को समझने की जरूरत को उजागर करना। यह कहानी दर्शाती है कि लोग नाचनियों को बुरे तरह से देखते हैं और उनकी अदाकारी को केवल गंदगी समझते हैं। इससे सामाजिक विचारधारा की बदलाव की आवश्यकता को उजागर किया जाता है, ताकि हर व्यक्ति का सम्मान और समानता हो सके।

3.15 सिस्टर

इस कहानी में अकेलापन, सेवाभाव की प्रवृत्ति, रिश्तों की परंपरागत मर्यादा की विसंगती, मानव की संकुचित मनोवृत्ति आदि विशेषताओं का चित्रण किया है। भारतीयता के साथ जुड़ा 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना सिस्टर के साथ दिखाई देती है। अस्पताल में मरीजों की सेवा

करते उम्र बीत गई फिर भी सेवा का भाव बना रहता है। बहुत कम लोग होते हैं अपनी परवाह किये बगैर कार्य में लीन रहते हैं। आधुनिकता के साथ व्यक्ति के भीतर व्यक्तिगत स्वार्थ आने लगा। पढ़ा-लिखा शिक्षित समाज अपने स्वार्थ के रहते अन्य के साथ रिश्ता बनाते हैं। यहाँ एक निःस्वार्थ भावना से स्त्री सेवा तो करती है किन्तु उनकी भावना के साथ खिलवाड़ करते लोगों की स्वार्थवृत्ति का चित्रण किया है।

यह कहानी सिस्टर डोरोथी डिसूजा की जीवनी है, जिन्होंने समाज के साथ अपनी सेवा और प्रेम की भावना को साझा किया। उन्होंने अपने जीवन को मरीजों की सेवा में समर्पित किया और समाज में अपने आप को सम्मानित किया। इस कहानी में सिस्टर डिसूजा की सच्ची सेवा और प्रेम की भावना को दिखाया गया है, जो उन्हें अपने आप को समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी कहानी समाज में सेवा और प्रेम की महत्वपूर्णता को बताती है, और हमें यह याद दिलाती है कि हमें अपने जीवन में सेवा और प्रेम की भावना को समर्पित करना चाहिए।

इस कहानी में सिस्टर डोरोथी डिसूजा के जीवन का वर्णन किया गया है, जो एक सच्ची सेविका और परोपकारी मानव के रूप में समाज में अपनी भूमिका निभाती है। उन्होंने अपने जीवन को मरीजों की सेवा में समर्पित किया और समाज में अपने आप को सम्मानित किया। उनकी सेवा भावना, परोपकार, और समाज सेवा में उनका योगदान कथानक के माध्यम से दर्शाया गया है। इस कहानी में उनके जीवन की कई उपलब्धियों, कठिनाइयों, और समाज में उनके परिवर्तन का वर्णन किया गया है। सिस्टर डिसूजा की यह कहानी हमें सेवा और प्रेम की महत्वपूर्णता को

समझाती है, और हमें यह याद दिलाती है कि हमें समाज सेवा में अपने जीवन को समर्पित करना चाहिए।

3.15.1 चरित्र चित्रण

डोरोथी डिसूजा- डोरोथी डिसूजा निष्काम सेवाभावी सिस्टर के रूप में सामने आती हैं। उनकी सेवाभावी वृत्ति में अपनेपन की भावना झलकती है, और वे एक परिश्रमी, स्वाभिमानी, सेवाभावी, अकेली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। संक्षेप में, डिसूजा की सेवाभावी वृत्ति को विस्तार से दर्शाया गया है।

सुरेशचंद- "चिन्हार" कहानी में सुरेशचंद्र एक बीमार रइस के रूप में सामने आते हैं। मनोभावी सिस्टर की सेवा को देखकर सुरेशचंद्र अपने स्वार्थ के लिए अकेली डिसूजा को बहन का स्थान देते हैं और कभी न खत्म होनेवाली बीमारी में तंदुरुस्त होते हैं। इस कहानी में सुरेशचंद्र स्वार्थी इंसान हैं और केवल काम के लिए अपने करीबी करते हैं, लोगों की भावनाओं के साथ खेलते हैं। संक्षेप में, यह कहानी हमें सुरेशचंद्र के खोखले रिश्तों और स्वार्थी व्यवहार का परिचय देती है।

भाभीजी- सुरेशचंद की पत्नी भी सुरेश की तरह है अपनी चिपनी-चुपड़ी बातों से सभी का मन मोहीन करती है दिखने में गोरे रंग की भारी शरीर की है। अपने अच्छी-अच्छी बातों से अच्छे-अच्छों को और भोले-भाले लोगों को फसाती है।

सावित्री- सुरेशचंद की बहन। कहानी में विमेश, सुमना और ऋषी की बुआ। शादी में आरती उतारने की रस्म पर सामने आती है।

3.15.2 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा सरल है। लेकिन इस कहानी में हमें कुछ अंग्रेजी शब्द दिखाई देते हैं और अरबी शब्द दिखाई देते हैं।

अंग्रेजी शब्द – सिस्टर, डॉक्टर, आलमाइटी।

अरबी शब्द – मुआफ,कुरबान।

3.15.3 उद्देश्य

प्रत्येक कहानी का कोई ना को उद्देश्य होता है। सिस्टर कहानी में कैसे एक अविवाहीत औरत को अपने स्वार्थ के लिए उसका इस्तमाल किया जाता है, यह इस कहानी में दिखाई देता है। एक औरत को उसके काम के जरीए बहलाकर भावना से आकर अपनापन दिखाकर कैसे ईलाज करवा कर बेहन का रिशता जोड़ा है। और जहाँ सचमे बेहन या बुआ का दरजा / रस्मे की बात आयी तो कैसे उसे अनदेखा किया है यह इस रचना में साफ चित्रित किया गया है।

संदर्भ सूची

1. पुष्पा मैत्रेयी, 10 प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन पेपरबैक संस्करण: 2020, पृष्ठ 19
2. पुष्पा मैत्रेयी, चिह्नार, आर्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 1991, द्वितीय संस्करण: 1997।
3. पुष्पा मैत्रीय, ललमनिया, किताबघर प्रकाशन, प्रथम सस्करण:2010

4. पुष्पा मैत्रीय, मैत्रीय पुष्पा के कथा साहित्य मे नारी जीवन, विकास प्रकाशन, संस्करण:2009
5. पुष्पा मैत्रीय, सुशीला मंजुला, नारी अस्मिता और मैत्रीय पुष्पा, विशाल पब्लिकेशन, संस्करण: 2013

चतुर्थ अध्याय 4. मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों में ग्रामीण स्त्री पात्र

मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानियों में ग्रामीण स्त्रियों का चित्रण अत्यंत सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से किया गया है। "उन्होंने इन स्त्रियों को समस्याओं का सामना करते हुए दिखाया है"8, जैसे परिवारिक जिम्मेदारियों का सामना, आर्थिक संकटों से निपटना, और समाज में अपनी पहचान बनाने का प्रयास। इन स्त्रियों की शक्ति, सहनशीलता, और साहस को उन्होंने विवरणपूर्वक दर्शाया है, जो उन्हें अपने जीवन के हर मोड़ पर सफलता की ओर अग्रसर करता है।

मैत्रीय पुष्पा जी की कहानियों में ग्रामीण स्त्रियों का चित्रण उनके साहस, संघर्ष, और समर्पण के माध्यम से किया गया है। वे अपने जीवन की हर मुश्किलता का सामना करती हैं, परंतु उनका उत्साह और साहस कभी नहीं हारता । इन स्त्रियों के जीवन में सामाजिक समस्याओं, परंपरागत रोजगारों, और आर्थिक असमानता का सामना होता है, लेकिन उन्होंने अपनी सामर्थ्य और इच्छाशक्ति से इन समस्याओं का सामना किया है और अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध रहती हैं। उनकी कहानियाँ साहित्यिक रूप से समृद्ध होती हैं और उनकी साहित्यिक विवेचना गांधीवादी आदर्शों, सामाजिक न्याय, और गहरी मानवीयता के प्रति उनकी समर्थन को प्रकट करती हैं।

मैत्रीय पुष्पा के कहानी संग्रह में कुछ इस तरह हमें स्त्री के समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है। उनके कहानी संग्रह जैसे १० प्रतिनिधि कहानियां, चिह्वार और ललमनियां इन कहानी संग्रह को जब मेने पढ़ा तो कुछ कहानियों मेने देखा की किस तरह उन्होंने स्त्री के अनेक पात्र के माध्यम से

हर एक समस्या का उल्लेख किया है।“लेखिका ने गाँव की नारियों के स्वाभिमान को अलग-अलग दृष्टि से अंकित किया है, वैसे ही शहरी नारी की ओर भी दृष्टिगोचर किया है”।

4.1अशिक्षित स्त्री

अशिक्षित स्त्री का अर्थ जो शिक्षित नहीं है। अशिक्षित स्त्री को समाज में अक्सर नकारात्मक नजरों से देखा जाता है। समाज उन्हें असमानता के नजरिए से देखता है। कुछ इस तरह मुन्नी, दादी, मोहरों के साथ कहानियों में बर्ताव किया जाता है।

मुन्नी-“बेटी” कहानी में मुन्नी का चित्रण किया गया है, जो एक गाँव में रहने वाली अनपढ़ लड़की है। यह पात्र १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। उसके माता-पिता उसे पढ़ाई से दूर रखते हैं और सिर्फ उसे घर के कामों में लगाते हैं। वह अपने भाईयों की तरह पढ़ाई करने की इच्छा रखती है, लेकिन उसके माता-पिता उसे इसमें अनुमति नहीं देते। जब उसे पता चलता है कि उसके माता-पिता ने उसे जल्दी ही विदा कर दिया है, तो वह बेहद दुखी हो जाती है और अपनी बेटी को अपने माता-पिता की देखभाल करने के लिए सौंप देती है। यह कहानी मानवीय रिश्तों, माता-पिता के साथ बेटी के संबंध, और समाज में महिलाओं के अधिकारों की कमी को उजागर करती है। इसके माध्यम से, लेखक ने इसके पाठकों को समाज में महिलाओं के स्थान को समझने के लिए प्रेरित किया है। इसके अलावा, यह कहानी माता-पिता के साथ बेटी के संबंधों की महत्वपूर्णता को भी प्रकट करती है।

दादी- दादी “तुम किसकी बिन्नी हो” कहानी की पात्र है यह कहानी १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से लिया गया है। दादी एक साधारण स्त्री हैं। पहले वह भी पोते के चाह में बैटी थी

लेकिन पोतीके जन्म के साथ उससे समझौता कर लेती हैं। वह बिन्नी को प्यार से पालन-पोसकर बड़ा करती हैं। उसे किसी भी तरह की कमी नहीं होने देती हैं। वह पाठशाला में भी भेजती हैं वह उसे गाँव के जाकर पाटशाला में भर्ती करती हैं। दादी के साथ बिन्नी खुशी से रह लेती हैं । आखिर में जब बिन्नी के पिता बिन्नी को लेने के लिए आते हैं तब को नहीं ले जाने देती क्योंकि उसके पढाई का एक साल बरबाद हो जायेगा। इस तरह लेखिका ने एक अशिक्षित स्त्री परंतु समझदार स्त्री का चरित्र रेखांकित किया है।

मोहरो- मोहरो ललमनिया कहानी संग्रह से ली गयी हैं। ललमनियाँ' कहानी में 'मौहरो' एक अनपढ़, सुंदर, परिश्रमी नारी है। वह स्वभाव से शांत है। जोगेश नौकरी लगने पर वापस लाने का वादा देकर उसे वापस गाँव छोडकर दूसरी शादी के लिए उसी गाँव में दाखिल होता है। उस समय मौहरी उसकी शादी में ललमनियाँ का नाच दिखाती है और अपने प्यार को वह सिने में दफन करती है। उस समय उसका संयम श्रेष्ठ स्तर का दिखायी देता है। मौहरी एक समाज से उपेक्षित, विवश नारी के रूप में अंकित होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी द्वारा अपनी बेटी को पालने और पति प्यार को न भूली हुई पेट भरने के खातिर नाच करनेवाली विवश मौहरी का रूप दिखाया है।

4.2 <u>शिक्षित स्त्री</u>

शिक्षित स्त्री वह महिला होती है जो किसी शिक्षित विधा में पढ़ाई की होती है और समाज में सक्रिय भूमिका निभाती है। वह शिक्षा प्राप्त करके अपने आप को स्वावलंबी बनाने की कोशिश

करती है और समाज में अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास करती है। कुछ इस तरह वसुधा का चित्रण दिखाई देता है।

वसुधा-वसुधा पात्र ''बेटी'' कहानी में है जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से लिया गया है।वसुधा एक स्त्री पात्र है जो मुन्नी की साथी है, लेकिन उससे बिल्कुल अलग है। उसे पढ़ना-लिखना पसंद नहीं है, लेकिन उसके माता-पिता उसे पढ़ाई के लिए पाठशाला भेजते हैं। वसुधा को अपनी सहेलियों के साथ मौज-मस्ती करना पसंद है, लेकिन उसे इन सब चीजों से दूर रखा जाता है। वह अपनी सहेली मुन्नी को पढ़ाई के लिए प्रेरित करती है, पर उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया जाता। वसुधा अंत में पढ़ाई करके शहर में अपना घर बसाती है। इस कहानी से लेखिका ने दिखाया है कि अगर गाँव की महिलाएं पढ़ाई करें, तो वह अपने भविष्य को स्वयं ही संवार सकती हैं। इसके माध्यम से, लेखिका ने महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्थिति को समझाने की महत्वता को उजागर किया है।

4.3 स्वाभिमानी स्त्री

स्वाभिमानी स्त्री वह महिला होती है जो अपने स्वाभिमान, स्वतंत्रता, और सम्मान को महत्व देती है। वह अपने अधिकारों की रक्षा करती है और समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम करती है। उसकी अग्रसर्ता और साहसिकता के कारण उसे समाज में आदर्श माना जाता है। कुछ इस तरह वसुमती और चंदा का चित्रण किया है।

वसुमती- वसुमती पात्र जो १० प्रतिनिधि कहानिया कहानी संग्रह से लिया गया है।''फैसला'' कहानी में वसुमती एक प्रधान है जो गाँव के लोगों को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वह एक

स्वाभिमानी, सज्जन, और निडर महिला हैं जो अपने सिद्धांतों के लिए लड़ती हैं। जब उसके पति उसके फैसले को बदलते हैं, तो उसे गाँव के लोगों के साथ न्याय दिलाने के लिए खुद पर उत्साहित करना पड़ता है। वह अपने पति के खिलाफ वोट देती हैं, जिससे उसे एक हद तक आत्मसम्मान मिलता है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्त्रियों के अधिकारों की महत्वपूर्णता और समाज में उनकी स्थिति को समझाने की महत्वता को उजागर किया है।

चंदा- चंदा "बिछुडे हुए" कहानी की पात्र है जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। वह ऐसी स्त्री है जिसने जिंदगी में कभी हार नहीं मानी। अपने पति के छोड़कर चले जाने पर सारे काम काज और घर की जिम्मेदारियाँ वह अपने कंधों पर लेती है। यहां तक की पति ने लिए गए कर्ज को भी चुकाती है। अपनी बेटी को चंदा पाल पोस कर बड़ी करती है। अशिक्षित होते हुए भी वह अपनी जिम्मेदारियाँ खुब अच्छी तरह से निभाती है। पति के छोड़कर चले जाने के बाद चंदा को दुख तो होता है लेकिन समय के साथ वह अपने आप को संभाल लेती है। कई दिनों बाद उसका पति वापस गांव लौट आता है तो चंदा उसे पहचानने से ही इंकार कर देती है।

क्योंकि चंदा एक स्वाभिमानी भारतीय स्त्री है। उसके सामने अनेक मुश्किलें आयी पर उन मुश्किलों के बाद भी चंदा ने अपना स्वाभिमान नहीं खोया। चंदा के माध्यम से लेखिका ने एक ऐसी स्त्री का चित्रण चित्रित किया है जिसके पति के छोड़ने पर भी अपने घर गृहस्ती संभाल सकती है। अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा सकती है। इसके साथ-साथ एक स्त्री में संकटों से लड़ने की भी शक्ति आ जाती है।

4.4 विद्रोह करने वाली स्त्री

विद्रोह करने वाली स्त्री वह महिला होती है जो सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए विद्रोह करती है। वह अपने विचारों और अधिकारों के लिए संघर्ष करती है और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाती है। उसे सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ने का साहस होता है। कुछ इस तरह ईसुरीया, बिन्नी की बुआ, गिरजा और चंन्दना के पात्र का चित्रण किया है।

ईसुरिया- ईसुरिया "फैसला" कहानी की स्त्री पात्र हैं जो चिह्नार कहानी संग्रह से ली गयी हैं। इस कहानी की एक और स्त्री पात्र जिसका नाम ईसुरिया वह कहानी में स्त्री विद्रोह की चिंगारी के रूप में है। वह निर्भीकता से पुरुष प्रधान समाज कि गलत से परंपराओं पर उंगली उठाती है। कठपुतली की तरह जीवन जी ने के कारण वह वसुमती को भी खरी खोटी सुनाती है। ईसुरिया अशिक्षित होते हुए भी उसके विचार बहुत अच्छे हैं। वह वसुमती की सहेली हैं। वह गाँव की औरतों को समझाती हैं कि जमाना बदल गया है और औरत और पुरुष में कुछ फरक नहीं रहा है। वह जानती हैं कि औरतों के ऊपर तरह-तरह के अन्याय हो रहें हैं पर उन्हें उन अन्याय के खिलाफ लड़ना चाहिए। वह वसुमती का समझाती हैं कि गाँव की प्रधान होने के नाते पंचायत में जाना उसका पुरा हक बनता है। ईसुरिया वसुमती से बहुत आशाये हैं अपने गाँव की और क्योंकि उसे लगता है कि उसकी सहेली वसुमती अपने पति से होशियार है। इस कहानी में एक और स्त्री है हरदेई गावँ की बेटी है।

बिन्नी की बुआ- बिन्नी की बुआ "तुम किसकी बिन्नी हो" कहानी से है जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। । बिन्नी की माँ के सौतेले व्यवहार से बुआ निराश है। उसे

बिन्नी की माँ पर बहुत गुस्सा आता हैं लेकिन उसी का पक्ष लेकर वह अन्य गाँव के स्त्रियों से झगडती भी हैं। एक दिन वह बिन्नी को उसके जन्म की कहानी बयान करती है ताकि किसी और की मुँह से यह सच्चाई सुनकर उस नन्हें से कलेजे को ठेस ना पहुँचे और उसे दुःख ना हों। निष्कर्ष रूप में देखा तो लेखिका ने हमारे जाए सामने इस कहानी के द्वारा एक ऐसे समाज का चित्र रेखांकित किया हैं जिसमें एक स्त्री सामाजिक रीतियो के कारण दूसरी स्त्री से किस तरह का दृष्टतापूर्णव्यवहार करती हैं। इसीलिए माँ उसे जन्म से पहले ही समाप्त कर देना चाहती हैं। अगर लडकी का जन्म न चाहते हुए भी होता हैं तो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। बिन्नी जैसी कई लडकियाँ इसी मानसिकता का शिकार हुई है। यह इस कहानी में बताया गया है।

गिरजा- बहेलिये' कहानी में 'गिरजा' अत्याचार का विरोध करनेवाली, अन्याय के प्रति आवाज उठानेवाली, साहसी नारी है। यह कहानी चिह्वार कहानी संग्रह से ली गयी हैं। गाँव के कुटील राजनीतिज्ञोंने लोगों ने मास्टर जी को जहर देकर मारा और उनकी मौत का जिम्मेदार पत्नी सावित्री को ठहराया। इस अत्याचार को देखकर गिरजा ने न आव देखा न ताव। भागकर दरोगा का कॉलर पकड लिया और उसे कहा, "नहीं छोडूगी दरोगाजी न्याय करिये। यह क्या किया आपने ? मेरा बेटा भी दरोगा है। मगर ऐसा नहीं ऐसा कहाँ। सूरज, तुम जानते हो उसे?'' इस प्रकार गिरजा अत्याचार के प्रति आवाज उठाती है। साथही भोली के मृत शरीर को देखकर वह अपने आपको वहाँ पर पाती है, इतनी वह भावुक है। एक स्वाभिमानी, सुसंस्कृत, अत्याचार अन्याय का विरोध करनेवाली साहसी गिरजा है। अतः वह संघर्षशील नारी के रूप में सामने आती है। मैत्रेयी पुष्पा ने समाज की एक और नारी की अलग पहचान को केंद्र में रखकर उसका चित्रण किया है।

चन्दना- 'मन नाँहि दस-बीस' कहानी में 'चन्दना' एक सुंदर, स्वभाव से शांत, संवेदनशील नारी है। यह कहानी १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। स्वराज से बचपन की घनिष्ठ मैत्री का रूपांतर प्यार में होने के उपरान्त बीच मझदार में छोड़कर गए स्वराज को वह कहती है, "तुम भी इस भीषण ज्वाला में कहाँ तक धधकते ? पर दुःख इस बात का रह गया स्वराज, गांधी जी की लिखी किताबें पढ़कर भी तुम उस पथ पर नहीं चल सके, मैं ही अकेली चलती रह गयी। बीच राह से पलायन क्यों कर गए तुम?सम न सकी। अतः चन्दना एक समाज के जाति-पाति के साथ प्यार के लिए लडनेवाली निडर नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

4.5 <u>अन्याय से पीड़ित स्त्री</u>

अन्याय से पीड़ित स्त्री वह महिला होती है जो समाज में अन्याय, उत्पीड़न या शोषण का शिकार होती है। उसे उसके अधिकारों से वंचित किया जाता है और उसे न्याय दिलाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इसके अलावा, वह अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करती है और समाज में न्याय की मांग करती है। कुछ इस तरह हरदेई,डरोथी डिसूजा, बिन्नी,भागों, अनुसुइया, सावित्री, छन्नो, रज्जो, राय प्रवीण, शांति, सरजू और अम्मा का चित्रण अन्याय से पीड़ित स्त्री के रुप मे चित्रित किया गया है।

हरदेई- हरदेई पात्र "फैसला" कहानी से ली गयी हैं जो चिह्नार कहानी संग्रह से ली गयी हैं। हरदेई का पात्र कहानी में निर्णायक मोड़ लाता है। हरदेई के आत्महत्या कर लेने के बाद वसुमती अपने पति का विरोध करने का निर्णय लेती है और ब्लॉक प्रमुख के चुनाव में उसे वोट न देकर उसके प्रतिव्दंव्दी को वोट देती है। हरदेई एक ऐसी स्त्री हैं जो अपने बाप के अन्याय से पीड़ित हैं। उसका

पिता उसे अपने पति के पास जाने नहीं देता हैं। जब भी वह अपने पति से मिलने जाती है तो उसका पिता उसे गालियाँ देता और मारता पिटता भी। तीन-चार बार उसका गर्भपात किया जाता है। पिता के साथ- साथ उसका भाई भी उसपर अन्याय करता है। इसलिए न्याय माँगने वह पंचायत तक जाती हैं परन्तु वहाँ भी उसे न्याय नहीं मिलता है। पति से बिछड़कर हरदेई जीना नहीं चाहती हैं। इन सब बातों से दुःखी होकर हरदेई आखिर में आत्महत्याकर देती हैं। कुछ इस तरह इस कहानी का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कहानी फैसला में किया है।

डरोथी डिसूजा- डोरोथी डिसूजा "सिस्टर" वे एक नर्स थी जो कुछ महीने पहले ही रीटायर हुई।यह कहानी १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। डोरोथी डिसूजा, एक रिटायर्ड नर्स, साहसिकता और सेवाभाव से भरी थीं। वह अपने रेटायरमेंट के बाद भी गरीबों की सेवा करती रहीं। उनके पिता का अपहज होने के कारण वह विवाह नहीं कर पाई और अकेले ही रह गईं। लेकिन उनकी संघर्षपूर्ण कहानी में आने वाली दूसरी महिला पात्र भाभीजी की भूमिका हमें दिखाती है कि कैसे एक अविवाहित महिला को उसके काम के जरिए बहलाकर उससे अपना लाभ उठाया जाता है। इस कहानी में, लेखिका ने महिलाओं के समाज में अपनी असमानता को उजागर किया है और उनकी संघर्षों को प्रकट किया है।

बिन्नी- बिन्नी "तुम किसकी हो बिन्नी" कहानी की स्त्री पात्र हैं जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। बिन्नी यह लडकी एक गाँव की रहनेवाली हैं। उसकी माँ को पहले से ही दो लड़कियाँ हैं और तीसरी बार वह लड़के के आँस में बैठती हैं। लेकिन तीसरी बार भी उसे लडकी ही पैदा होती हैं और यह लड़की हैं बिन्नी। बिन्नी को उसकी माँ अपनाने से इन्कार

करती हैं। बचपन से ही उसकी दोनों बहनों के पुराने कपडे पहनाये जाते हैं। घर के सारे काम काज उसी से करवाती हैं। उसकी माँ उसे मारती-पीटती भी हैं। एक दिन उसकी माँ उसे इतना पीटती है की उसकी दादी उसे लेकर गाव चली जाती हैं। कई दिनों बाद उसके पिताजी बिन्नी को गाव से शहर ले जाने के लिए आते हैं। क्योंकि बिन्नी की माँ फिर से गर्भवती है और कुछ महीनों में नए बच्चे का जन्म होनेवाला हैं। लेकिन दादी बिन्नी को भेजना नहीं चाहती। माँ-बाप से ज्यादा दादी को बिन्नी के भविष्य की चिंता है और पढ़ाई का एक साल बरबाद होने देना वह नहीं चाहती है।

भागो- भागों "पगला गई है भागमती" कहानी की पात्र जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। भागो एक विधवा स्त्री है। "पगला गई है भागमती" कहानी में, भागो एक विधवा स्त्री हैं, जिन्हें समाज में विधवा होने के कारण अनेक संकीर्णताओं का सामना करना पड़ता है। उनको माँ का प्यार नहीं मिलता और समाज में उन्हें अपशकून माना जाता है। अनुसुइया, उनकी जीजी की बेटी, भागो को अपनी माँ से ज्यादा प्यार करती हैं। जीजी के बेटे की शादी उसके लिए एक बड़ी चोट होती है, क्योंकि जीजी उसे जहर देकर मार डालते हैं। बाद में, जब जीजी के बेटे की शादी होती है, तो भागो उसके अपमान को सह नहीं पाती। उन्होंने सच्चाई को बयान किया और खुद को समाज से अलग कर दिया। इस कहानी में, लेखिका ने विधवा स्त्री के दर्द और सामाजिक अन्याय को उजागर किया है। भागो की कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि समाज में विधवा स्त्रियों के प्रति किस प्रकार का अत्याचार होता है और वे कैसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं।

अनुसुइया- अनुसुइया “पगला गई है भागमती” कहानी की पात्र जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से लिया गया है, अनुसुइया जीजी की बेटी है, जिसे माँ का प्यार कभी नहीं मिलता। उसको सिर्फ भागों के काम करने के लिए ही बुलाया जाता है। अनुसुइया एक मास्टर से प्रेम करती है, लेकिन उसके माँ-बाप को यह मना है। उनके पिता उसे गुस्से में आकर जहर देकर मार डालते हैं। अनुसुइया की गलती सिर्फ इतनी है कि वह प्यार करती है। पर जब उसके भाई एक पराई जाति की लड़की से प्यार करते हैं, तो उनके पिता उनकी शादी का आयोजन करते हैं। इस कहानी में, लेखिका पुरुष प्रधान समाज के विरोध को दिखाती है, जहां एक लड़की को प्यार करने पर सजा मिलती है, लेकिन लड़के को माफी। समाज में पुरुष प्रधानता की एक स्थिति है, जहां पुरुष अपने इज्जत और सम्मान को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

सावित्री- सावित्री “राय प्रवीण” कहानी की पात्र है जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। “सावित्री” कहानी में, सावित्री एक गणित मास्टर की बेटी हैं जो गणित में कमजोर होती हैं। उसे हिन्दी मास्टर के नाटक में अच्छा काम करते हुए देखकर उसे रायप्रविण बनने के लिए कहा जाता है, जो एक वेश्या का पात्र होता है। इससे उसके पिता को बहुत नाराज़गी होती है, लेकिन सावित्री फिर भी नाटक में हिस्सा लेती है और अच्छा काम करती है। जब गाँव में बारिश के कारण सभी संरक्षित स्थलों में हालात खराब हो जाते हैं, सावित्री के पति भी बीमार पड़ जाते हैं। उन्हें किसी भी मदद का सहारा नहीं मिलता, और अंत में सावित्री अपने पति और गाँव की जान बचाने के लिए अपने जिस्म का सौदा कर देती हैं। जब उसके पति को इसकी खबर मिलती है, तो उसके पिता उसे मारने की कोशिश करते हैं। सावित्री और उसके पति की बचाव

के लिए की गई कठिन प्रयासों की गाथा है, जो उन्हें सावित्री की मृत्यु की खबर से बचने के लिए भागने पर मजबूर करती है। इस कहानी के माध्यम से, लेखिका दर्शाती है कि एक स्त्री किसी भी हद तक जा सकती है अपने पति और परिवार की रक्षा के लिए।

छन्नो- छन्नो पात्र "छुटकारा" कहानी की है जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं।छन्नो अपनी बेटी रज्जो के साथ सीता गली में रहती है। छन्नो निम्न जाति के होने के कारण उनका घर अलग रखा जाता है। गाँव में छन्नो के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। लोग चाहते है कि वह अपनी बेटी के साथ न रहे। छन्नो और उसकी बेटी को गली से निकलने की हर कोशिश कार्यरत हो जाती है। फिर भी छन्नो इन बात से हार न मानकर घर खरीदती हैं।

रज्जो- रज्जो "छुटकारा" कहानी की स्त्री पात्र हैं जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं इस कहानी की स्त्री पात्र रज्जो छन्नो की बेठी है। वह अपने माँ के साथ सीमा गली में रहने आती है। वह स्कूल जाना चाहती है लेकिन वह लोगों को अच्छा नहीं लगता है। वह इससे छुटकारा चाहती हैं। इस कहानी में हमें दिखाई देता है किस एक स्त्री का शोषण किया जाता है क्योंकि की वह निम्न जाति कि होती है। ब्राह्मणों द्वारा किए गए शोषण से इस कहानी की स्त्री उनके तानों से छुटकारा पाना चाहती है और एक सुकुन बरी ज़िन्दगी जितना चाहती है यही हमें लेखिका अपने कहानी छुटकारा के स्त्री पात्र के माध्यम से बताना चाहती है।

राय प्रविण- राय प्रविण यह कहानी १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं इस कहानी की स्त्री एक नाचने गाने वाली वेश्या हैं, जो खुद भी एक वेश्या की कोख से जन्मी हैं। राय प्रविण राजा इंद्रमणि सिंह की प्रेमिका है। पर राजा अकबर उन दोनों को अलग करना चाहता है।

अकबर, राजा इंद्रमणि को संदेश भेजता है कि रायप्रविण को आगरा उसके पास रवाना किया जाए, नहीं तो ओरछा का राज्य तहस-नहस किया जाएगा। जब रायप्रविण को इसके बारे में पता चलता है तो वह ओरछा राज्य बचाने के लिए राजा इंद्रमीण से अपनी आजादी माँगती हैं और आगरा के लिए रवाना हो जाती हैं। जब वह आगरा बादशाह अकबर से मिलती हैं तो वह खुद को राजा इंद्रमणि का जूठा भोजन कहती है और जूठा भोजन सिर्फ कौवा, महतर या कुत्ता खाला हैं। ऐसा सुनते ही अकबर की भूक सूख जाती हैं और शर्मिन्दगी और गलानि से बचने के लिए रायप्रविण को बादशाह अकबर विदा कर देता है।

शांति- "उजदारी" कहानी की शांति जो १० प्रतिनिधि कहानियां संग्रह से ली गयी हैं पति के मर जाने पर अपने बेटे के साथ रहती हैं। "उजदारी" कहानी में शांति, जो अपने बेटे के साथ रहती हैं, जेठ-जेठानी के अत्याचार से परेशान रहती हैं। उन्हें घर के सभी काम करना पड़ता है, लेकिन उन्हें अपने बेटे को पढ़ाने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। जेठ-जेठानी उन्हें बराबरी से नहीं देखते और उनके साथ अन्याय करते हैं। शांति को यह जानकर डर लगता है कि जेठ और जेठानी उन्हें और उनके बेटे को मारने की साजिश रच रहे हैं। शांति और उनके बेटे को बचाने के लिए उन्हें गाँव के प्रधान के पास जाना पड़ता है। वहां उन्हें आश्रय मिलता है और उन्हें अपनी आज़ादी मिलती है। शांति की जेठानी उनके साथ बुरे तरीके से व्यवहार करती हैं, और वह शांति को परेशान करती है। लेखिका इस कहानी के माध्यम से दिखाती है कि कैसे एक स्त्री अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को परेशान करती है। यह कहानी उजदारी और स्त्री के संघर्ष को दर्शाती है।

अम्मा- अपना-अपना आकाश' कहानी में जो चिह्नार कहानी संग्रह से ली गयी हैं 'अम्मा' गाँव की रहनेवाली बुढ़ी औरत है।' गाँव से शहर आने के कारण उसे अकेलापन मेहसूस होता है। तीनों बेटों ने माँ का बंटवारा किया है, इस बात को वह बर्दाश्त कर लेती है। लेकिन जब उसे अनाथाश्रम भेजने की बात वह सुनती है तो वह चुपचाप वापस अपने गाँव चली जाती है। इससे उसका स्वाभिमान झलकता है। इस प्रकार माँ एक विवेकशील संयमी, स्वाभिमानी, अकेलेपण की शिकार, गाँव की रहनेवाली युवती के रूप में अंकित है। आज पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के कारण बढे-बुढ़ों की परिवार में होनेवाली हालत का दर्दनाक चित्रण देखने को मिलता है।माँ और बेटी के रिश्ते को संसार में एक अहम स्थान प्राप्त हुआ है। उस रिश्ते को मैत्रेयी पुष्पा ने रेखांकित किया है।

सरजू- 'चिन्हार' कहानी में 'सरजू' जो चिह्नार कहानी संग्रह से ली है ममतामयी, निस्वार्थी, भयग्रस्त, विवश, मेहनती औरत है। उसने मातृत्व का बलिदान दिया हुआ दिखाई देता है, जैसा कि, "वह बस ऐसे ही उनकी आज्ञा पर चकरधिन्नी हुई दिन बिता रही थी। विद्यादेवी और केदारनाथ की पुत्री कनक अब बडी होने लगी। सरजू उनकी कौन थी? कोई नहीं न कोई नाता रहा, न सम्बन्ध। सारे रिश्ते ने पथ्य में पटक दिए थे विद्यादेवी ने महज उनकी अनुचरी सरजू जीवित रह गयी बस।" अतः वह अपने सारे रिश्ते-नाते भूलकर अपनी बेटी के लिए चुप रहती रही और छुपकर मातृत्व देनेवाली प्रेमल, विवश माँ के रूप में योगदान निभाती है।

बिन्दो- बिन्दो पात्र "ताला खुला है पापा" कहानी की स्त्री पात्र हैं जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं। इस कहानी का प्रमुख पात्र है। बिन्दो की उम्र सत्रह सालथी। लंबी,

रंग गोरा और तंदुरुस्त और सहेदम थी। उसके बाल लंबे थे और वो चोटी बादती थी। उसे कविता लिखना बहुत पसंद था और वो डायरी भी लिखती थी। वह अपने पापा जगदीश चौबे से बहुत प्यार करती थी। पिता की दुलारी थी। वे उसे बहुत पढ़ाना चाहते है। बिन्दी अरविंद नामक लड़के से प्यार करती थी लेकिन वे एक निम्न जाती का था और बिन्दो का परिवार इसके खिलाफ था। इसलिए उसके पिताजी बिन्दो को कमरे मे बंद कर रखते थे।

4.6 स्वार्थी स्त्री

स्वार्थी स्त्री वह महिला होती है जो अपने स्वार्थ को सभी चीजों से ऊपर रखती है। उसके लिए केवल अपने ही हित में सोचना महत्वपूर्ण होता है। कुछ इस तरह कहानियों मे मुझे स्वार्थी स्त्री दिखाई देती है जो अपने बारे मे ही सोचती है और दुसरो का नुक़सान करती है वह है कहानियों की पात्र जेठानी, जीजी,बैहरी, आरती गुप्ता का चित्रण एक स्वार्थी स्त्री के रूप मे किया गया है।

जेठानी- "उजदारी" कहानी जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं में लेखिका ने ऐसी स्त्रियों का असली रूप दिखाया हैं जो अपने के लिए दूसरी औरत पर तरह- तरह के जुल्म करती हैं। इसके लिए हमारा समाज ही जिम्मेदार हैं। एक आदमी अगर एक औरत पर जुल्म करता है तो कहीं न कहीं एक औरत ही दूसरी औरत की दुश्मन है।

जीजी- "पगला गई है भागमती" कहानी जो १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं की पात्र जीजी। जीजी भागों की बड़ी बहन है। जीजी अपनी बेटी को कभी माँ का प्यार नहीं देतीं, बल्कि उसे अपनी बहनों को सौंप देतीं हैं। वह अपने पति के साथ हर वक्त हाँ में हाँ मिलाती हैं, चाहे उसके पति कितने भी बुरे काम करें। लेखिका जीजी के माध्यम से एक ऐसी स्त्री का

चित्रण करती हैं जो सिर्फ अपने पति की ख़ुशी के लिए हर समस्या को नजरअंदाज करती हैं। उसे अपनी बेटी के प्रति कोई संवेदना नहीं होती, और उसकी मौत पर भी उसे कोई पछतावा नहीं होता।

बैहरी- 'सेंध' कहानी में 'बैहरी' एक राजनीतिक मायाजाल में फैसी नारी के रूप में सामने आती है। वह कहती है कि, "विधायक जी का कहना है कि, ऐसे नाजुक मौकों पर रेत गर्द में ही मिलकर रहो – वहीं, गाँव में। समय पडे तो बैलगाडी में चलो, पैदल यात्रा करो। प्रभाव इन्हीं बातों से बनता है, छवि निखरती है।" इस प्रकार राजनैतिक मायाजाल में फंसी बीहरी भ्रष्टाचार करती है और अत्याचार को चुपचाप देखती है। इतनी वह स्वार्थी है कि, अच्छी जमीन पाने के लिए सी.ओ.जी. को पैसा देकर गंगासिंह की जमीन हड़प लेती है। अतः बौहरी एक स्वार्थी, भ्रष्टाचारी

अन्याय को साथ देनेवाली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है। नारी का मुख्य रूप सेवाभावी है। माँ हो या बेटी कौन से भी रूप में वह अत्यंत निष्ठापूर्वक सेवा करती दिखाई देती है। इस महत्वपूर्ण रूप को मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया हैं।अपने स्वार्थ के लिए व्यक्ति कैन से भी हद तक गिर सकता है चाहे वह स्त्री हो या पुरूष । मैत्रेयी पुष्पा नेस्त्री के एक अनोखे रूप का चित्रण किया है।

आरती गुप्ता- "तुम किसकी बिन्नी हो" कहानी १० प्रतिनिधि कहानियां कहानी संग्रह से ली गयी हैं इस कहानी की पात्र आरती गुप्ता। आरती गुप्ता बिन्नी की माँ हैं। "आरती गुप्ता" कहानी में अपराध किया जाता है क्योंकि उनके पति को लड़का चाहिए था। उनकी दो बेटियों को हताशी और निराशी होकर स्वीकारना पड़ता है। जब तीसरी बेटी पैदा होती है, तो भी उन्हें न्याय नहीं मिलता और उनकी स्थिति और बिगड़ती है। उनकी त्रासदी में बेटियों का नामकरण तक नहीं

होता, और उनके साथ बुरी व्यवहार किया जाता है। वह बिन्नी से सौतेली माँ की तरह व्यवहार करती हैं। यह कहानी हमें उस समाजिक दाब का पता लगाती है जिसमें एक बेटे की चाह होने पर ही स्त्रियों को सम्मान मिलता है। आरती गुप्ता की माँ बिन्नी की माँ के रूप में उनकी अस्तित्व को स्वीकारने में असमर्थ रहती हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने समाज में स्त्रियों की स्थिति को प्रकट किया है और उनकी असमानता को उजागर किया है।

मैत्रेयी पुष्पा के समग्र साहित्य में नारी जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने अपने कहानियों में बुंदेलखंड की प्रादेशिक बोलियों तथा भाषाओं का स्वाभाविक प्रयोग किया है। वह नारी पात्रों के माध्यम से समाज में उनकी स्थिति और गति को दिखाने का प्रयास किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से गांव की महिलाओं में आत्मनिर्भरता की कोशिश की है। उनके कहानों में नारियों का चित्रण उन्हें नारी संस्कृति की चौखट में बैठाता है, जहाँ वे अन्याय और अत्याचार का मुकाबला करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण उनके सच्चे और असली जीवन के अनुभवों के माध्यम से हुआ है। उन्होंने महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचारों को प्रस्तुत किया है और उन्हें अधिक सशक्त बनाने की कोशिश की है।

मैत्रेयी पुष्पा के कहानी संग्रहों के प्रमुख पात्र महिलाएं गांवी और नगरीय जीवन के मध्यवर्गीय पात्र हैं, जो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं और अपनी आवाज़ उठाती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी पात्रों को पुरुषी अहंम के खिलाफ आवाज़ उठाने को प्रेरित किया है। उन्होंने अपने कहानियों के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक समाज में उनके स्थान को मजबूत करने की कोशिश की है।

संदर्भ सूची

- तिवारी कामिनी डॉ, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, प्रकाशक विद्या प्रकाशन, संस्करण प्रथम 2011
- गुप्ता रमणिका, स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने, प्रकाशक शिल्पायंत, संस्मरण 2004
- पुष्पा मैत्रीय, ललमनिया, किताबघर प्रकाशन, प्रथम सस्करण2010
- अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, प्रथम सस्करण:1999
- पुष्पा मैत्रेयी, चिह्नार, आर्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1991, द्वितीय संस्करण:1997।
- पुष्पा मैत्रेयी, 10 प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन, पेपरबैक संस्करण:2020।
- पुष्पा मैत्रीयी, अलमा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2000।
- यूट्यूब: मैत्रेयी पुष्पा का साक्षात्कार,चैनल का नाम – साहित्य Tak

उपसंहार

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का विवेचन" इस विषय को स्पष्ट करते हेतु समाज से जुड़ी समस्याओं का समाधान मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। मैत्रेयी पुष्पा के जीवन पर बुंदेलखंड के आंचल का प्रभाव अधिक हैं क्योंकि उन्होने स्वंय इस क्षेत्र में जीवन बिताया हैं। समकालीन भारतीय समाज की नारी में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की सुषुप्त चेतना जागृत करने के लिए मैत्रेयीजी का कथा साहित्य सक्षम दिखाई पड़ता है। सिर्फ नारी ही नहीं ग्रामीण किसान मजदूर, दलित और जनजाति आदि उपेक्षित, पीड़ित, शोषित वर्गों को अपनी स्वतंत्र अस्मिता स्थापित करने की प्रेरणा देने के लिए अपना कथासाहित्य द्वारा मैत्रेयीजी ने जो कदम उठया है, वह सराहनीय है। दूसरे शब्दों में कहने पर वे उपेक्षित ग्रामीण जीवन के कथाकार हैं।

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ अपनी अनुभूति पर आधारित हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में जीवन की वास्तविकता का चित्रण हुआ हैं। घटनाओं की सत्यता और पात्रों की सजीवता यह उनके साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की पृष्ठभूमि में बुंदेलखंड प्रवेश हैं। विवाहोपरान्त दिल्ली में रहने के कारण साहित्य पर महानगरीय प्रवेश का प्रभाव पड़ा हैं। शहर में रहते हुए भी गाँव से जो ऊर्जा लेकर आई है उसे भूला नहीं पाई। उनके समग्र साहित्य की कथावस्तु ग्रामीण जीवन पर ही आधारित है। इसलिए उनके समग्र साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन अत्यंत सजीव रूप से चित्रित हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में समाज की नारी समस्या, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं। उनके विचार ग्रामीण जीवन तथा स्त्रीवादी विचारों से प्रभावित हैं। स्त्री- विमर्श

को रचनाओं में उनका विद्रोह रूप दिखाई देता हैं। मैत्रेयीजी के कहानियों के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित, तिरस्कृत, पीड़ित तथा दुख भोगनेवालों के जीवन को सच्चाई को सामने लाया गया हैं। ग्रामीण जीवन में आज भी अशिक्षा, अज्ञान, स्त्री-पुरुष भेदभाव रूढ़ि, परंपरा, अंधविश्वास, शकुन अपशकुन दिखाई देता है। कहानियों के नारी पात्र अत्यंत सशक्त रूप लेकर उभरे है। कहनियों के प्रसंगों को बेहद आत्मीय और पारिवारिक सहजता के साथ प्रस्तुत करना मैत्रेयीजी को विशेषता हैं। मैत्रेयीजी के कहानियों में उन्होने बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ो और एकल परिवार के कारण वृद्ध माता-पिता के जीवन यापन के माध्यम को स्थितियों का चित्रण किया हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में महिलाओं का चित्रण दो रूपों में हुआ है। पुरुष की अनुचर बनकर, तो दूसरा समाज की नारी शोषण मूलक व्यवस्था का विद्रोह करनेवाली स्त्री के रूप में मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में घर, परिवार, समाज और देश में जातिगत भेदभाव आदि की विस्तृत जानकारी मिलती है। समाज में जाति व्यवस्था की दाहकता, वर्ग, संघर्ष पारिवारिक स्थिति, शिक्षा आदि का चित्रण हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा की भाषा सहज सरल तथा रोचक है। भाषा शैली की विविध विशेषताएँ पायी जाती हैं। वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, प्रतिकात्मक, सरल, संकेत, आदि ग्रामीण परिवेश रचनाएँ होने के कारण बुंदेलखड़ तथा ब्रज के आंचल की ग्रामीण हिन्दी भाषा का साहित्य में प्रयोग किया है।

संक्षेप में निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि इस विषय के अध्ययन के पश्चात हमे ऐसा प्रतीत हुआ की मैत्रेयी पुष्पाजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्ति, घर, परिवार, समाज, राष्ट्र, राजनीतिक, आर्थिक विषमता, नैतिकता और भाषिकता जिसके अंतर्गत भाषागत विशेषता,

शब्द, शैली इन तत्वों का प्रयोग कर सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। उपयुक्त करणों से हिन्दी साहित्य जगत में अन्य कथा साहित्यकारों से मैत्रेयीजी का एक अलग और विशिष्ट स्थान हैं। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। क्योंकि भारत कि आबादी के सत्तर प्रतिशद गाँवो में रहते हैं। लेखिका ने इन्हीं ग्रामों से अपने कथा साहित्य का विषय चुन लिया हैं। दूसरे लखकों से भिन्न उनकी खासियत भी यही है कि समाज द्वारा उपेक्षितों में जागरण लाने के लिए ही उन्होने अपनी रचनाएँ की हैं। वे आज भी इसी लक्ष्य को सामने रखकर अभंगुर साहित्य साधना करती आ रही हैं।

संदर्भ सूची

- **आधार ग्रंथ**

1.पुष्पा मैत्रीय, 10 प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन पेपरबैक संस्करण: 2020

2.पुष्पा मैत्रीय, ललमनिया, किताबघर प्रकाशन, प्रथम सस्करण:2010

3.पुष्पा मैत्रेयी, चिह्वार, आर्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण:1991, द्वितीय संस्करण:1997

- **सहायक ग्रंथ**

1. पुष्पा मैत्रीय,मैत्रीय पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन, विकास प्रकाशन, संस्करण: 2009
2. सुशीला मंजुला, नारी अस्मिता और मैत्रीय पुष्पा, विशाल पब्लिकेशन, संस्करण: 2010
3. दीक्षित दया डॉ, मैत्रीय पुष्पा के कथात्मक आयाम, विकास प्रकाशन, संस्करण:2013
4. जैन अरविन्द, औरत अस्तित्व और अस्मिता, राजकमल प्रकाशन, संस्करण:2002
5. नसरीन तसलीमा, औरत के हक में, वाणी प्रकाशन, संस्करण:2001
6. मेहरोत्रा ममता, महिला अधिकार, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण:2014
7. देसाई नीरा और ठक्कर ऊषा, अनुवाद: धुसिया सुभी, भारतीय समाज में महिलाए, पहला संस्करण:2009, दूसरा संस्करण:2011

8. शेण्डे रामजी हरीदास डॉ, नारी सशक्तिकरण, ग्रंथ विकास प्रकाशन, संस्करण:2013
9. शर्मा विष्णुदत्त डॉ, नारी और न्याय, शोध प्रशासन अकादमी, संस्करण:1999
10. डालमिया दिनेशनंदिनी और गोयल संतोष, ज्ञान भारती प्रकाशन, संस्करण:2008
11. तिवारी कामिनी डॉ, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, प्रकाशक विद्या प्रकाशन, संस्करण प्रथम 2011
12. गुप्ता रमणिका, स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने, प्रकाशक शिल्पायंत, संस्मरण 2004
13. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, प्रथम सस्करण:1999
14. वी आतिरा डॉ, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, प्रिय साहित्य सदन प्रकाशन, संस्करण:2014
15. रावत ज्ञानेन्द्र, औरत : अस्मिता और यथार्थ (सम्पादक), कान्ती बुक सेन्टर
16. अग्रवाल रोहिणी ,साहित्य का स्त्री स्वर, संस्करण: 2015
17. गुप्ता रमणिका, स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने, प्रकाशन शिल्पायन, संस्करण:2004
18. राजकुमार डॉ, नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, संस्करण: 2003
19. केलर नलिनी डॉ, सामाजिक विकास और प्रगतिशील महिलाएं, श्रुति पब्लिकेशन प्रकाशन, संस्करण:2012

20. यादव राजेंद्र और वर्मा अर्चना, अतीत होती सादी और स्त्री का भविष्य, राजकमल प्रकाशन, संस्करण:2001

21. सिंघवी कमल, आधुनिक परिवार में स्त्री, कल्याणी शिक्षा परिषद प्रकाशन, संस्करण: 2011

22. राजकुमार डॉ, नारी शोषण समस्याएं एवं समाधान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, संस्करण:2003

23. अरोड़ा सुधा, आम औरत जिंदा सवाल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण:2008

24. राजे सुमन, इतिहास में स्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, संस्करण:2003

25. सिंह सुधा, स्वाधीनता संग्राम हिंदी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र, अनामिका पब्लिश एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्रकाशन, संस्करण:2016

26. कालिया ममता, स्त्री विमर्श का यथार्थ, किताब घर प्रकाशन, संस्करण:2015

27. कारात बृंदा, भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति, संपादक: अनुवादक उषा चौहान, संस्करण:2008

28. एल किरणबाला जाजू डॉ, 21 वी साड़ी में स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक, इंटरनेशनल पब्लिकेशन प्रकाशन, संस्करण:2014

29. अग्रवाल सी. जे, भारत में नारी शिक्षा, प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रशासन विद्या विहार, संस्करण:2009

30. पुष्पा मैत्रीय, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, संस्करण:2010

• **साक्षात्कार**

1. https://youtu.be/N1K56I7qUmE?si=xkFH5c1hlQxCGIJv(मैत्रीय पुष्पा जी ने मर्दाना समाज में स्त्रियों को आज़ादी नहीं युटूब चैनल साहीत्य Tak इस पर अपना साक्षात्कार दिया है।)
2. https://youtu.be/i-2Gc2M0nqA?si=TrDbVXnAoyhx9B8U(मैत्रीय पुष्पा उनके किताबें और नारीवाद पर युटूब चैनल Forum4 मे अपना साक्षात्कार दिया है)
3. https://youtu.be/b8tq05ksDy8?si=CJYCpyYEtZoW_s-X (मैत्रीय पुष्पा जी ने On Indian Women युटूब चैनल National Dastak पर अपना साक्षात्कार दिया है।)

• **वेबसाइट**

1. https://edupediapublications.org/journals/index.php/IJR/
2. https://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=4088
3. https://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=271
4. https://rrjournals.com/index.php/rrijm/article/view/1189